D.El.Ed.

DIPLOMA IN
ELEMENTARY EDUCATION

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि

(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम

स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप)

(शाला अवलोकन / शाला अनुभव कार्यक्रम)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

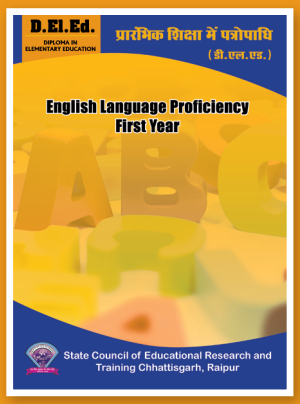

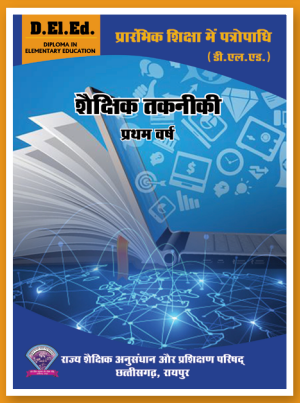

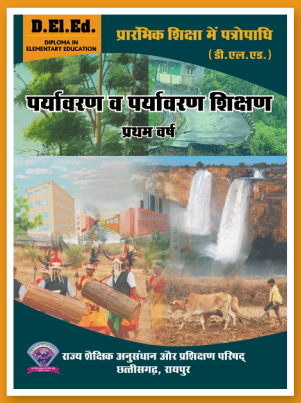

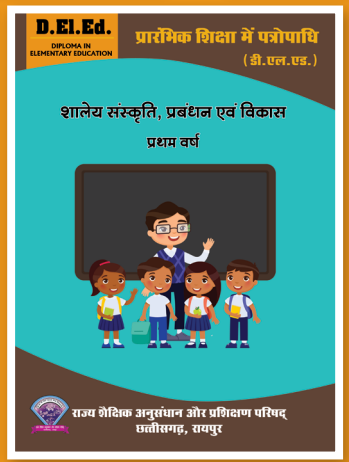

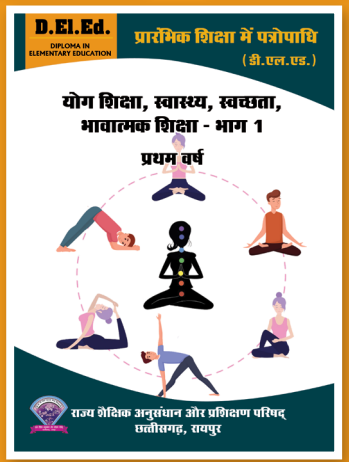

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

पाठ्यक्रम एवं स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

(Syllabus and The School Internship Training) Margdarshika

प्रकाशन वर्ष 2021

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

State Council of Educational Research and Training Chhattisgarh, Raipur

प्रकाशन वर्ष–2021

पाठ्यक्रम एवं स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम मार्गदर्शिका

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

डी. राहुल वेंकट I.A.S.
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ, रायपुर

पाठ्य सामग्री समन्वयक

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विशेष सहयोग

आर.के.वर्मा, यू.के.चक्रवर्ती, हेमन्त कुमार साव, संतोष कुमार तंबोली

विषय संयोजक (डी.एल.एड. पाठ्यपुस्तक प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)

प्रो.एम. निमजे	डॉ. विद्यावती चन्द्राकर	पुष्पा किस्पोट्टा	डॉ. नीलम अरोरा
एस.के. वर्मा	बी.पी. तिवारी	करमन खटकर	ज्ञान प्रकाश द्विवेदी
डॉ. सुधीर श्रीवास्तव	आर.एस. बघेल	विद्या डांगे	अर्चना वेरूलकर
अनुपमा नलगुडंवार	बी.आर. साहू	के.के. शुक्ला	एम.आर. साहू
ज्योति चक्रवर्ती	जेस्सी कुरियन	एस.बी.डी. साहू	के.के. साहू
ख्रीस्टीना बखला	डेकेश्वर प्रसाद वर्मा		एम. विजयलक्ष्मी
अनिता श्रीवास्तव	संतोष कुमार तंबोली		

सहयोग

छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर, विद्या भवन सोसाईटी उदयपुर, दिगन्तर जयपुर, एकलव्य भोपाल, आई.सी.ई.ई.पुणे, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलोर, आई.आई.टी.कानपुर, लेंगवेज एण्ड लनिंग फाउण्डेशन नई दिल्ली।

आवरण पृष्ठ/अभिन्यास

सुधीर कुमार वैष्णव, हिमांशु वर्मा

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप व दिशा निर्धारण करते हैं तथा विद्यालय शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में किसी अन्य विकासात्मक प्रसास की तरह समाज की बदलती आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं।

''शिक्षा बिना बोझ के'' यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) के अनुसार शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन–अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा कोठारी आयोग (64–66) से भी स्पष्ट है कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया गया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चों की जिज्ञासा को बनाए रखें उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें उनके अनुभवों का सम्मान करें। तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–शिक्षा को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक–शिक्षा में आमूल–चूल परिर्वतन की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है ''सीखने–सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाएँ।''

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए? बेहतर होगा कि विद्यालय में आने के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, इसके लिए उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाएँ। इसीलिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को पुनः देखने की जरूरत महसूस हुई और डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का लक्ष्य शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहलुओं पर केन्द्रित है। पाठयक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। साथ ही शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरुआत की गई है।

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर उनके मूल स्परूप को लिया गया है। कहीं–कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से ली गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बैंगलुरू, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर, लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट/बी.टी.आई.के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन–सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य–सामग्री के संबंध में शिक्षक–प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ–साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

रायपुर

वर्ष 2021

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

क्रमांक	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	पाठ्यक्रम के उद्देश्यों में निहित सिद्धांत	01–04
2.	परीक्षा/मूल्यांकन योजना	05–11
3.	डी.एल.एड. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम (सैद्धांतिक)	12–33
4.	डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम (सैद्धांतिक)	34–58
5.	डी.एल.एड. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम (व्यावहारिक)	59–69
6.	डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम (व्यावहारिक)	70–77
7.	स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (इंटर्नशिप)	78–161
7.1.	शाला अवलोकन कार्यक्रम डी.एल.एड. प्रथम वर्ष	78–119
7.2.	शाला अनुभव कार्यक्रम डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष	120–161
8.	शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ संक्षेपाक्षर	162

(A) पाठ्यक्रम के उद्देश्यों में निहित सिद्धांत

सिद्धांत– 1

छात्राध्यापक विषयों में निहित अवधारणाओं, जानकारी प्राप्त करने के तरीकों और उनकी संरचना को समझेंगे। वे सीखने के अनुभवों को इस प्रकार तैयार करेंगे कि विषय सीखना बच्चों के लिए अर्थपूर्ण गतिविधि होगा।

छात्राध्यापक बच्चों को सिखाए जाने वाले विषयों की मुख्य अवधारणाओं, मान्यताओं, विषय वस्तु के पक्ष एवं विपक्ष में प्रस्तुत किए जा सकने वाले तर्क से संबंधित जानकारी प्राप्त करने की विधियों एवं तरीकों के विषय में बच्चों की समझ बनाने में अपनी भूमिका समझ सकेंगे।

बच्चों की विषय संबंधी अवधारणात्मक समझ और गलत धारणाएँ ज्ञान के सीखने को कैसे प्रभावित करती है, छात्राध्यापक यह समझेंगे। छात्राध्यापक उनके विषय ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्र से जोड़ सकेंगे।

सिद्धांत– 2

छात्राध्यापक समझेंगे कि बच्चों का विकास कैसे होता है और वे कैसे सीखते हैं तथा बच्चों को सीखने के कैसे–कैसे मौके दिए जा सकते हैं जो उनके बौद्धिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास में मदद कर सकें। सीखना कैसे होता है, बच्चा ज्ञान का निर्माण कैसे करता है, कौशल कैसे अर्जित करता है और दिमागी आदतें कैसे विकसित होती हैं, यह समझेंगे साथ ही यह भी जानेंगे कि बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के निर्देश उपयोगी हैं। छात्राध्यापक बच्चों के सीखने की क्षमता पर प्रभाव डालने वाले शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक विकास को भी समझेंगे।

छात्राध्यापक अपेक्षित विकास की प्रक्रिया और शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक क्षेत्रों में वैयक्तिक अंतर की सीमा या फैलाव से परिचित होंगे। वे सीखने की तैयारी का स्तर जान सकेंगे एवं एक क्षेत्र में विकास का दूसरे क्षेत्रों के प्रदर्शन या उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को समझ सकेंगे।

सिद्धांत– 3

छात्राध्यापक बच्चों के सीखने के अलग–अलग तरीकों को समझेंगे और सीखने की विभिन्नता को ध्यान में रखकर सीखने के अवसर तैयार कर सकेंगे। छात्राध्यापक ऐसे अपवाद क्षेत्रों, जैसे सीखने में अक्षम, इंद्रियों द्वारा पहचानने में असमर्थ और शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर, बच्चों की समस्याओं से परिचित होंगे।

सिद्धांत– 4

छात्राध्यापक विभिन्न अनुदेशात्मक प्रविधियों को समझेंगे तथा उनका उपयोग बच्चों में समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान तथा उपलब्धि क्षमता/कौशल का विकास करने में सफल हो सकेंगे।

छात्राध्यापक सीखने से संबंधित विभिन्न संज्ञानात्मक संक्रियाओं को समझेंगे। (उदाहरण के लिए समालोचनात्मक और सृजनात्मक सोच, समस्या का स्वरूप तथा समस्या समाधान, अन्वेषण तथा प्रत्यास्मरण) और कैसे इन संक्रियाओं/प्रक्रियाओं से सीखने के लिये परिस्थितियाँ निर्मित की जा सकती है, समझेंगे।

सिद्धांत– 5

छात्राध्यापक शैक्षिक (सीखने के लिए) वातावरण निर्माण के लिए वैयक्तिक तथा सामूहिक प्रोत्साहन की समझ का उपयोग कर सकेंगे। जो सकारात्मक सामाजिक अंतःक्रिया, सीखने में सक्रिय भागीदारी तथा स्व–प्रोत्साहन को बढ़ावा देगा।

छात्राध्यापक मनोविज्ञान, मानव विकास तथा समाज शास्त्र में निहित मानवीय व्यवहार तथा प्रोत्साहन संबंधित ज्ञान का प्रयोग ऐसी प्रविधियों के निर्माण में कर सकेंगे जो संगठन तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्य में सहायक हो।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार से समुदाय समूह में कार्य करता है तथा व्यक्तियों को प्रभावित करता है और यह भी समझेंगे कि कैसे व्यक्ति, समूह को प्रभावित करता है।

छात्राध्यापक जानेंगे कि कैसे जटिल सामुदायिक संरचना में व्यक्ति की सहायता करें जिससे वे एक–दूसरे के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य करें।

सिद्धांत– 6

छात्राध्यापक प्रभावशाली शाब्दिक, अशाब्दिक संवाद के ज्ञान का उपयोग कक्षा में छात्रों को सक्रिय, खोजपरक, सहयोगात्मक तथा सामूहिक अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए करेंगे। छात्राध्यापक संवाद (communication) के सिद्धांत, भाषा विकास तथा सीखने में भाषा की भूमिका को समझेंगे। छात्राध्यापक समझेंगे कि कैसे संस्कृति और लिंगभेद कक्षा में बातचीत को प्रभावित करते हैं। छात्राध्यापक शाब्दिक तथा अशाब्दिक संवाद के महत्व को जानेंगे।

सिद्धांत– 7

छात्राध्यापक सीखने–सिखाने की योजना का निर्माण, विषयवस्तु के ज्ञान, छात्र, समुदाय और पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के आधार पर करेंगे।

छात्राध्यापक में सीखने के सिद्धांतों, विषयवस्तु, पाठ्यचर्या निर्माण, ज्ञान के सृजन की समझ स्पष्ट होगी। साथ ही छात्राध्यापक यह भी जानेंगे कि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस ज्ञान का उपयोग शिक्षण अधिगम योजना निर्माण में किस प्रकार कर सकते हैं।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार बच्चों की व्यक्तिगत रुचि, आवश्यकता, अभिवृत्ति और सामुदायिक संसाधन का उपयोग शिक्षण अधिगम योजना निर्माण में किया जाए ताकि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों एवं बच्चों के अनुभवों के मध्य प्रभावशाली सेतु का निर्माण हो।

सिद्धांत– 8

छात्राध्यापक सीखने वाले के सामाजिक, शारीरिक विकास और निरंतर बौद्धिक विकास को सुनिश्चित एवं मूल्यांकित करने हेतु औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन प्रविधियों को समझेंगे और उपयोग करेंगे।

छात्राध्यापक, बच्चे किस प्रकार सीखते हैं, का मूल्यांकन, वे क्या जानते हैं? और क्या कर सकते हैं? किस प्रकार के अनुभव उनके आगे के विकास एवं वृद्धि के लिए सहायक होंगे के आकलन के गुण, उपयोग, लाभ और सीमाओं को समझेंगे।

सिद्धांत–9

छात्राध्यापक कला के बुनियादी सिद्धान्तों से परिचित होंगे। जिससे उन्हें अपनी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारने में मदद् मिलेगी। वे महानतम धरोहरों से परिचित होंगे ताकि अपने परिवेश की उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन कर सकें।

(B) प्रवेश प्रात्रता

स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर दिनांक 31 जनवरी 2008 की अधिसूचना क्रमांक एफ 6–2/08/20 राज्य शासन एतद् द्वारा प्रवेश में डाईट/बी.टी.आई./महाविद्यालयों/संस्थाओं में द्विवर्षीय डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए नियम (छत्तीसगढ़ राजपत्र) तैयार किए गए हैं।

(C) पाठ्यक्रम का नाम परिवर्तन –

प्रशिक्षण छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय महानदी भवन नया रायपुर पत्र क्रमांक एफ 6–5/2016/20 तीन नया रायपुर 19 दिसम्बर 2016 के अनुसार NCTE 2014 के दिशा निर्देशों के अनुसार राज्य में चल रहे डी.एड़ पाठ्यक्रम को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में बदले जाने हेतु प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई।

(D) प्रशिक्षण अवधि

प्रशिक्षण अवधि दो शैक्षणिक वर्षों की होगी। दोनों सत्र 1 जुलाई से 30 जून तक के होंगे। प्रत्येक सत्र के कार्यों के दिनों की संख्या कम से कम 200 परीक्षा अवधि को छोड़कर होगी जिसमें स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) के अंतर्गत प्रथम वर्ष 24 कार्य दिवस शाला अवलोकन शेष दिवस सैद्धांतिक पढ़ाई, प्रायोजना कार्य करने, परीक्षा हेतु एवं द्वितीय वर्ष 96 कार्य दिवस शाला अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राध्यापक चयनित शाला में संलग्न होंगे। अध्यापन हेतु व्याख्यान विधि का उपयोग न्यूनतम होगा। छात्राध्यापक स्वयं अध्ययन कर तथ्यों को जाँचेंगे एवं समूह चर्चा द्वारा स्वयं के लिए निष्कर्ष निकालेंगे। ग्रंथालय का भी अध्ययन हेतु अधिकतम उपयोग करेंगे। छात्राध्यापक आवश्यकता अनुसार आई.सी.टी.का भी उपयोग करेंगे।

परीक्षा/मूल्यांकन योजना

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

1.सैद्धांतिक परीक्षा–

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	सैद्धांतिक परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	योग	विशेष
पहला	बाल विकास और सीखना	120	80	40	20	10	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
दूसरा	ज्ञान, पाठ्यचर्या व शिक्षण शास्त्र	120	80	40	20	10	100	
तीसरा	शैक्षिक तकनीकी	120	80	40	20	10	100	
चौथा	हिंदी भाषा शिक्षण स्तर –1	120	80	40	20	10	100	
पाँचवाँ	English Language Proficiency	120	80	40	20	10	100	
छठा	गणित शिक्षण	120	80	40	20	10	100	
सातवाँ	पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण	120	80	40	20	10	100	
आठवाँ	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास	120	80	40	20	10	100	
योग–1		960	640	320	160	80	800	

2. व्यावहारिक परीक्षा–

क्र.	विषय	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आंतरिक मूल्यांकन के अंक	पूर्णांक
अ	कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1	24	20	20	40
ब	योग शिक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा– भाग–1	24	20	20	40
स	कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1	24	20	20	40
द	कम्प्यूटर शिक्षण भाग–1	24	20	20	40
ई	स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) (शाला अवलोकन कार्यक्रम) (कक्षा 1 से 8)	इंटर्नशिप– 04 सप्ताह = 30 दिवस 24 कार्य दिवस = 144	20	20	40
	योग 02	240	100	100	200
	महायोग (योग 01 एवं योग 02)	1200	740	260	1000

1.सैद्धांतिक परीक्षा–

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	सैद्धांतिक परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	योग	विशेष
नवाँ	आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा	90	80	40	20	10	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
दसवाँ	सामाजिक,सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम	90	80	40	20	10	100	
ग्यारहवाँ	विविधता,समावेशी शिक्षा और जेण्डर	90	80	40	20	10	100	
बारहवाँ	हिंदी भाषा शिक्षण स्तर –2	90	80	40	20	10	100	
तेरहवाँ भाग 01	अंग्रेजी शिक्षण /	45	40	20	10	05	50	
तेरहवाँ भाग 02	संस्कृत शिक्षण	45	40	20	10	05	50	
चौदहवाँ	गणित शिक्षण / विज्ञान शिक्षण / सामाजिक विज्ञान शिक्षण (कोई एक विषय)	90	80	40	20	10	100	
योग 01		540	480	240	120	60	600	

2. व्यावहारिक परीक्षा –

क्र.	विषय	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आंतरिक मूल्यांकन के अंक	पूर्णांक
अ	कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–2	21	20	20	40
ब	योग शिक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा– भाग–2	21	20	20	40
स	कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2	21	20	20	40
द	कम्प्यूटर शिक्षण भाग–2	21	20	20	40
ई	स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) (शाला अनुभव कार्यक्रम) – (कक्षा 1 से 8)	इंटर्नशिप– 16 सप्ताह = 120 दिवस, 96 कार्य दिवस = 576	120	120	240
	योग 02	660	200	200	400
	महायोग (योग 01 एवं योग 02)	1200	680	320	1000

1. सैद्धांतिक विषयों की मुख्य परीक्षा छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा प्रत्येक सत्र के अन्त में होगी। मण्डल द्वारा प्रत्येक मुख्य परीक्षा के परिणाम के बाद उसी सत्र के लिए एक अनुगामी परीक्षा होगी।
2. प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्न पत्र में आंतरिक मूल्यांकन हेतु 20 अंक एवं बाह्य मूल्यांकन (मण्डल द्वारा) में प्रति विषय 80 अंक होंगे। बाह्य मूल्यांकन के अंतर्गत प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 घण्टे का होगा।
3. डी.एल.एड़. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम तेरहवाँ प्रश्न पत्र अंग्रेजी शिक्षण/संस्कृत शिक्षण दोनों भाग में पृथक –पृथक उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
4. दोनों विषयों (अंग्रेजी शिक्षण/संस्कृत शिक्षण) में से किसी एक विषय में अनुत्तीर्ण होने पर परीक्षार्थी को अनुत्तीर्ण विषय में ही परीक्षा देनी होगी।
5. अंक सूची में दोनों (अंग्रेजी शिक्षण/संस्कृत शिक्षण) विषयों के अंक पृथक–पृथक अंकित किये जाने हैं।
6. सैद्धान्तिक विषयों में आन्तरिक मूल्यांकन के पीछे दृष्टि यह है कि छात्राध्यापक दी गई विषयवस्तु और पठन सामग्री के आधार पर अपने अनुभवों को मिलाकर सोचने के लिए तैयार हो, स्वयं चिंतन कर सके तथा समस्याओं पर अपनी दृष्टि और विचार विकसित कर सके। इन आन्तरिक मूल्यांकन को लेकर कुछ बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।
   - कुछ प्रायोजनाएँ नमूना मात्र हैं। हम ऐसा मानते है कि आन्तरिक मूल्यांकन के लिए प्रत्येक छात्राध्यापक को स्वयं इन इकाइयों की विषयवस्तु पर आधारित आन्तरिक मूल्यांकन को लेकर कुछ बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।

- आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजना प्रत्येक छात्राध्यापक की अलग–अलग हो सकती है। यानी किसी एक डाइट में पढ़ाने वाले छात्राध्यापक की प्रायोजना उसके या किसी दूसरे डाइट में पढ़ाने वाले से भिन्न हो सकती है अर्थात् प्रत्येक छात्राध्यापक को स्व–विवेक से भी प्रायोजना बनानी है।
- डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में इन आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजनाओं का प्रत्येक वर्ष में एक ही होना अनिवार्य नहीं है। हर वर्ष ये अलग–अलग हो सकती हैं अर्थात् ऐसा नहीं माना जाए कि इस वर्ष में प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को जो प्रायोजना दी गई है। वही अगले वर्ष प्रवेश लेने वाले प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को भी दी जाए।
- प्रत्येक छात्राध्यापक अपने तरीके से इनके बारे में सोचे। प्रायोजना ऐसी हों जो कि अध्याय की विषयवस्तु के आधार पर सोचकर जवाब देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करें न कि अध्याय की विषय वस्तु रटकर। सिर्फ ऐसे सवाल ही नहीं हो जिनके जवाब सिर्फ अध्याय की विषयवस्तु को पढ़कर दिए जा सकें। अर्थात् अध्याय से विकसित दृष्टि और अपने अनुभव के आधार पर जवाब देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करें।

परीक्षा में श्रेणियाँ निम्नांकित आधार पर दी जाएंगी –

1.	व्यावहारिक परीक्षा	–	विशेष योग्यता – 80 प्रतिशत या उससे अधिक।
			प्रथम श्रेणी – 70 तथा 70 प्रतिशत से अधिक।
			द्वितीय श्रेणी – 50 तथा 50 प्रतिशत से अधिक तथा 70 से कम।
2.	सैद्धांतिक परीक्षा	–	विशेष योग्यता – 80 प्रतिशत या उससे अधिक।
			प्रथम श्रेणी – 70 तथा 70 प्रतिशत से अधिक।
			द्वितीय श्रेणी – 50 तथा 50 प्रतिशत से अधिक तथा 70 से कम।

- यदि कोई प्रशिक्षणार्थी प्रथम वर्ष के अनुत्तीर्ण विषय एवं द्वितीय वर्ष की परीक्षा में एक साथ सम्मिलित हो रहा है, तो उस प्रशिक्षणार्थी को निम्न परिस्थितियों में अंकसूची प्रदान किया जाना है–
- प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही द्वितीय वर्ष की अंकसूची जारी की जायेगी।
- प्रथम वर्ष अनुत्तीर्ण एवं द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण होने पर प्रथम वर्ष की अंकसूची प्रदान की जायेगी, किन्तु द्वितीय वर्ष की अंकसूची प्रदान नहीं जायेगी। द्वितीय वर्ष की अंकसूची वेबसाइट में प्रदर्शित की जायेगी, परन्तु द्वितीय वर्ष की अंकसूचीका परिणाम अनुत्तीर्ण अंकित किया जायेगा तथा नोट में प्रथम वर्ष के अनुत्तीर्ण विषय के नाम अंकित कर उनके समझ ATKT अंकित लिखा जायेगा।
- प्रथम वर्ष अनुत्तीर्ण तथा द्वितीय वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण होने अथवा समस्त अवसर समाप्त हो जाने के उपरांत द्वितीय वर्ष की अंक सूची दी जायेगी, जिसमें परीक्षाफल अनुत्तीर्ण अंकित किया जायेगा तथा प्रथम वर्ष के अनुत्तीर्ण विषयों में अनुत्तीर्ण प्रदर्शित किया जायेगा।
- सैद्धांतिक परीक्षा के भाग का महायोग 50 प्रतिशत से कम होने पर छात्राध्यापक को उन सभी प्रश्न पत्रों में जितने प्राप्तांक 50 प्रतिशत से कम होंगे पुनः परीक्षा देनी होगी। पुनः उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक विषय में 50 प्रतिशत अंक पृथक–पृथक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

- पुनः परीक्षा में छात्राध्यापक केवल स्वाध्यायी छात्र के हैसियत से प्रविष्ट हो सकेगा और पूर्व में नियमित छात्राध्यापक के रूप में प्राप्त आन्तरिक मूल्यांकन का लाभ उसे उन विषयों में मिल सकेगा।

व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होने की दशा में –

1. यदि कोई प्रशिक्षणार्थी प्रथम वर्ष के प्रथम अवसर के व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होता है तो उसे द्वितीय अवसर में पुनः व्यावहारिक मूल्यांकन की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सम्मिलित होना पड़ेगा।

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में पुनः प्रवेश के संबंध में –

1. इस पाठ्यक्रम में किसी कारण से यदि किसी छात्राध्यापक का नाम महाविद्यालय/संस्थान से खारिज किया जाता है तो ऐसे छात्राध्यापकों को केवल एक बार पुनः प्रवेश संबंधित महाविद्यालय/संस्थान दे सकेंगे।

2. इस पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम 80 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी। यदि किसी छात्राध्यापक की उपस्थिति इस न्यनूतम उपस्थिति से कम हो तो उस वर्ष उसे परीक्षा में बैठने से रोका जायेगा तथा ऐसे छात्राध्यापक को अगले वर्ष पुनः शुल्क जमा कर इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना होगा। अर्थात् यदि प्रथम वर्ष में परीक्षा से डीबार (Debar) होता है तो अगले वर्ष प्रथम वर्ष में और यदि द्वितीय वर्ष में डीबार (Debar) होता है तो अगले वर्ष द्वितीय वर्ष में उसे पुनः प्रवेश लेना होगा।

3. 80 प्रतिशत से उपस्थिति कम है तो 5 प्रतिशत उपस्थिति प्राचार्य अपने अधिकार से, 7 प्रतिशत सचिव, छ0ग0मा0शि0म0 के अनुमति से तथा 8 प्रतिशत अध्यक्ष, छ0ग0मा0शि0म0 के अनुमति से विद्यार्थी को दिया जा सकेगा।

सैद्धांतिक परीक्षा एवं व्यावहारिक मूल्यांकन के संबंध में –

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, विनियम 2014 के नियम 2.1 के अनुसार डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश की तारीख से अधिकतम तीन वर्ष की अवधि में छात्राध्यापकों को इस पाठ्यक्रम को पूरा करने की अनुमति होगी। अर्थात् प्रथम वर्ष के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परीक्षा में सम्मिलित होकर अनुत्तीर्ण छात्राध्यापकों को भी द्वितीय वर्ष में प्रवेश दिया जायेगा। द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक प्रथम वर्ष के साथ–साथ द्वितीय वर्ष के परीक्षा में बैठेंगे। छात्राध्यापकों को मुख्य परीक्षा व पूरक परीक्षा मिलाकर कुल 6 अवसर में इस पाठ्यक्रम को पूरा करना आवश्यक होगा।

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

(संस्कृत/अंग्रेजी विषय को छोड़कर) पूर्णांक – 80 (समय–3 घण्टे)

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक/ वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 05 प्रश्न खण्ड ब 05 प्रश्न	01	10
ब	तर्क/कारण से संबंधित प्रश्न	09	09	अधिकत्तम 50 शब्दों में	03	27
स	समझ से संबंधित प्रश्न	07	05	अधिकत्तम 120 शब्दों में	05	25
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	05	03	अधिकत्तम 200 शब्दों में	06	18
योग		22	18			80

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा

प्रथम वर्ष अंग्रेजी पूर्णांक – 80 (समय– 03 घण्टे)

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक / वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 04 प्रश्न खण्ड ब 04 प्रश्न	01	08
ब	तर्क / कारण से संबंधित प्रश्न	08	08	अधिकत्तम 20 शब्दों मे	02	16
स	समझ से संबंधित प्रश्न	15	11	अधिकत्तम 60 शब्दों में	04	44
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	04	02	अधिकत्तम 100 शब्दों	06	12
योग		28	22			80

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा

द्वितीय वर्ष अंग्रेजी / संस्कृत

(पूर्णांक – 40 समय–1½ घण्टे / संस्कृत पूर्णांक – 40 समय–1½ घण्टे) कुल 03 घण्टे

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक / वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 04 प्रश्न	04	04
ब	तर्क / कारण से संबंधित प्रश्न	07	07	अधिकत्तम 20 शब्दों मे	02	14
स	समझ से संबंधित प्रश्न	06	03	अधिकत्तम 60 शब्दों में	04	12
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	04	02	अधिकत्तम 100 शब्दों	05	10
योग		18	13			40

1. व्यावहारिक मूल्यांकन – दो समूहों में विभक्त किया गया है –

1.1. शाला अनुभव कार्यक्रम – प्रथम वर्ष शाला अवलोकन आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन संस्थान स्तर पर तथा द्वितीय वर्ष शाला अनुभव आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (छ.ग.मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा)

1.2. कम्प्यूटर शिक्षण भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.3. कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.4. योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, एवं भावात्मक शिक्षा भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.5. कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास– भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

टीप– व्यावहारिक मूल्यांकन के अन्तर्गत केवल शाला अनुभव कार्यक्रम का मूल्यांकन छ.मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा किया जावेगा तथा शेष व्यावहारिक। विषयों – 1. कम्प्यूटर शिक्षण। 2. कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति। 3. योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं भावात्मक शिक्षा। 4. कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास का आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन संबंधित संस्था के प्राचार्य द्वारा अपने नजदीक के डी.एल.एड प्रशिक्षण संस्थान के आकादमिक सदस्यों को आमंत्रित कर बाह्य मूल्यांकन सम्पन्न कराया जायेगा।

प्रश्न पत्र – पहला

बाल विकास और सीखना

उद्देश्य–

- बच्चों व बचपन के बारे में आम धारणाओं की समीक्षा कर सकें।
- बच्चों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक व बौद्धिक पहलुओं को समझें।
- सीखना क्या है तथा हम कैसे सीखते हैं, इस पर विचार करें।
- बच्चों में सोचने की क्षमता का विकास कैसे होता है– सोचने की प्रक्रिया समझें।
- बालविकास से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों से परिचय हो सके और शिक्षण कार्य में उनकी प्रासंगिकता को देख सके।
- बच्चों का अध्ययन कैसे किया जाता है इसके तरीकों से पहचान बनायें।
- विभिन्न क्षमता व अभिरूचि वाले बच्चों के लिए कक्षा में कैसे जगह बनाएं यह समझें।

बाल विकास और सीखना				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	बच्चों एवं बचपन के बारे में हमारी धारणाओं की समीक्षा	• हमारे विचार, बच्चों के साथ काम करने वाले विद्वानों के विचार– गिजुभाई, जॉन होल्ट, ए.एस.नील आदि • बच्चों के अधिकार, • बचपन के बारे में धारणाएं समाज में कैसे निर्मित होती हैं?	9	14
2	बाल विकास परिचय	• विकास की अवधारणा विकास की अवस्थाएँ–गर्भावस्था, शैशवावस्था, प्रारंभिक व उत्तर बाल्यावस्था, किशोरावस्था • शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक विकास • विकास को प्रभावित करने वाली बातें –प्रकृति एवं पोषण, निरंतरता व अनिरंतरता, प्रारंभिक एवं परवर्ती (बाद के) अनुभव • बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि • बच्चों का अध्ययन कुछ तरीकों से परिचय	15	24

3.	विकास के पहलू– (क) शारीरिक व गत्यात्मक विकास, शारीरिक नियंत्रण व समन्वयन का विकास (ख) संवेगात्मक एवं नैतिक विकास	• कुछ सामान्य सिद्धांत • शरीर के अंगों का अनुपात में बदलाव, ऊँचाई व वजन में वृद्धि, शारीरिक बनावट में बदलाव • नियंत्रण का विकास (स्थूल एवं सूक्ष्म) • शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाली बातें – पोषण, पर्यावरण के साथ क्रिया • संवेगात्मक विकास • नैतिक विकास (विद्यालय एवं गृह निर्माण वातावरण, मित्र समूह एवं वयस्कों के साथ संबंध बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्तित्व का विकास एवं समाजीकरण	17	24
4.	सीखना एवं संज्ञान का विकास	• सीखना क्या है और बच्चे कैसे सीखते हैं? • विविध धारणाओं की समीक्षा – • व्यवहारवादी, संरचनावादी, सामाजिक संकल्पनाएं • संज्ञान क्या है? • बच्चों की सोच पर जीन पियाजे के विचार ज्ञान का निर्माण के तरीके • स्कीमा (Schema) सम्मिलन (Assimilation) समायोजन (Accomodation) व्यवस्थापन (Organization) संतुलनीकरण (Equilibration) • वयस्क व्यक्ति की सोच के लक्षण (What is mental operation) • शैशव अवस्था में किशोरावस्था तक सोच का विकास व उसकी कड़ियाँ सेसरीमोटर, प्री आपरेशन, क्रांकीट आपरेशन, फार्मल आपरेशन • पियाजे के सिद्धातों का शैक्षणिक महत्व • लेव वैगोत्सकी • रचनावाद • निकट विकास क्षेत्र (ZPD) • स्केफोल्डिग • शिक्षक की भूमिका	17	24
5.	खेल तथा विकास में खेल का महत्व	• खेल की परिभाषा। • खेल का मनोविश्लेशणात्मक दृष्टिकोण। • वाय्गोट्सकी ढ़ांचे में खेल का स्थान। • खेल का विकास मार्ग। • खेल एक प्रमुख गतिविधि। • खेल की समृद्वि। • विकास में खेल की भूमिका।	11	16
6.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे	• विशिष्ट बच्चों से अभिप्राय। • क्षति, दिव्यांगता एवं अक्षमता। • विभिन्नताओं में समानता। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कार्य।	11	18

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1.कम से कम दो बच्चों का पारिवारिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर अध्ययन।

2.किसी एक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का सामाजिक संयोजन का अध्ययन।

3.बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों में सहभागी बन विश्लेषण करें जिसमें गत्यात्मक कौशल, खेल के दौरान प्रयोग की गई भाषा, समूह रचना तथा नियमों को बनाना, पालन करना, जेन्डर व्यवहार, खेल गीत का उल्लेख हो ?

संदर्भ–

- माता पिता के प्रश्न– गिजु भाई
- दिवास्वप्न– गिजु भाई
- समरहिल – ए.एस.नील
- अनारको के आठ दिन–सत्यु
- पिप्पी लंबे मोजे–ऐस्ट्रिक लिंडग्रन
- तोतोचान–तेत्सुको कुरोयानागी
- बच्चे असफल कैसे होते हैं –जॉन होल्ट
- DECE -I VOL-I I & III IGNOU-
- Child development (11th edition) (अनुवादित).-John w Santrock S.K. Mangal
- Child development(6thedition)(अनुवादित)-Elizabeth B Hurlock, Tata Macgrow Hill Publication Co.ltd.2007
- Child development 7th edition (अनुवादित)-Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
- Educational- Psychology Santrock,
- Child development 2nd edition (अनुवादित)- Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
- John W Santrock Child development Tata Mac Graw Hill Pub.Co.ltd. (अनुवादित)
- विकास में खेल का महत्व– IGNOU
- DECE-3 बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम भाग 1 व 2, IGNOU

प्रश्न पत्र – दूसरा
ज्ञान, पाठ्यचर्या व शिक्षणशास्त्र

उद्देश्य –

- ज्ञान और शिक्षा के संबंध के सवालों को समझने के लिए जिज्ञासा पैदा करना और उन पर समझ बनाना।
- ज्ञान की प्रकृति को समझना। उनके सृजन, निर्माण ,जाँच और जीवन में स्थान के बारे में समझना।
- ज्ञान,पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्र के बारे में छात्राध्यापकों के मन में कोई व्यवस्थित विचार का बनना जिससे वे इन सवालों पर अपना मत बना सकें।

	ज्ञान, पाठ्यचर्या व शिक्षण शास्त्र			
क्र.	पाठ / विषयवस्तु के नाम		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	अपनी स्कूली शिक्षा पर विचार	• अपनी स्कूली शिक्षा पर विचार। • आदर्शों को पढ़ना। • अध्ययन सामग्री – समरहिल, दिवास्वप्न, तोतोचान, यात्स्नाया पोल्याना। • ज्ञान व शिक्षा की एक झलक।	15	20
2	ज्ञान के प्रकार	• आम बोलचाल की भाषा में ज्ञान, शब्द और उनके पीछे अवधारणा। • कौशल व व्यावहारिक ज्ञान,परिचयात्मक ज्ञान, तथ्यात्मक ज्ञान, वर्णनात्मक • ज्ञान में अन्तर संबंध। • कौशल (करने) को तथ्यात्मक ज्ञान मे तब्दील करने की • सम्भावनाएँ / आवश्यकता / संबंध। • ज्ञान के प्रकारों पर विमर्श का शिक्षा से संबंध।	15	22
3	ज्ञान और प्रमाण	• शिक्षा और ज्ञान। • ज्ञान और प्रमाण। • प्रत्यक्ष / अनुमान / उपमान / शब्द।	10	17
4	पश्चिमी दार्शनिक और ज्ञान की शर्ते	• प्लेटो, दकार्त, जॉनलॉक, बर्कले, कांट। • ज्ञान की शर्तें।	15	22
5	ज्ञान का स्वरूप	• गणित / विज्ञान / सा.विज्ञान / इतिहास / सौन्दर्यबोध नैतिक समझ / दर्शन की प्रकृति। • भाषा / कौशल। • विद्यालय के विषय और ज्ञान का स्वरूप।	10	17

6	**ज्ञान और पाठ्यचर्या**	• पाठ्यचर्या की जरूरत। • पाठ्यचर्या की अवधारणा। • पाठ्यचर्या की अवधारणा। • पाठ्यचर्या निर्माण की समस्याएं। • पाठ्यचर्या के चुनाव के आधार।	15	22

आंतरिक मूल्यांकन	**कुल 20 अंक**

कुछ उदाहरण

1. मान लीजिए, आप एक स्कूल आरम्भ करने जा रहे हैं। एक स्कूल कहलाने के लिए क्या–क्या होना अनिवार्य है ? क्या नहीं होने से वह स्कूल नहीं होगा ? अपने स्कूल की अवधारणा को तर्क सहित बताएँ।

2. अपने आसपास के समुदाय से कौशलात्मक ज्ञान के तीन उदाहरण चुनिए। उन कौशलों में निपुण एक–एक व्यक्ति के साथ बात करके पता लगाइए कि उन्होंने ये कौशल कैसे अर्जित किए? उनके अर्जित करने के तरीके और अध्याय में वर्णित अर्जित करने के तरीकों का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए साथ ही यह भी देखिए कि वह व्यक्ति कौशल सीखने को कितनी बारीकी से बता पाता है और बताने में क्या छूट जाता है ?

3. यदि ज्ञान प्राप्त करने के साधनों में सिर्फ शब्द प्रमाण तक ही सीमित कर दिया जाए तो ज्ञान पर इसका क्या असर पड़ेगा ? हमारे स्कूलों में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं पर इसका क्या असर पड़ेगा? ऐसा कौन सा ज्ञान है जो इसके अन्तर्गत नहीं आ पाएगा ?

4. यदि प्रत्येक व्यक्ति यह मानने लगे कि वह जिन चीजों को सत्य मानता है वही सत्य है, दूसरे चाहे कुछ भी मानते रहें। यदि ज्ञान को लेकर हरेक व्यक्ति ऐसा विचार रखने लगे तो इससे क्या समस्याएँ होंगी?

5. अपने रोजमर्रा के जीवन में हम जिन चीजों, विश्वासों, मान्यताओं, विचारों को सही मानते हैं उनकी सूची बनाएं। यदि संदेह की विधि को इन पर लागू करें तो कौन सी चीजें, विश्वास, मान्यताएँ और विचार ज्यादा टिकाऊ होंगे और कौन से ऐसे होंगे जिन्हें सत्य मानने में समस्या महसूस होगी?

संदर्भ–

- दिवास्वप्न – गिजू भाई
- समरहिल – ए.एस.नील
- लियो टॉल्सटॉय की शिक्षाशास्त्रीय रचनाएँ – टॉल्सटॉय
- तोतोचान – तेत्सुको कुरोयानागी
- ज्ञान मीमांसा –प्रो.दयाकृष्ण
- द प्राब्लम्स ऑफ फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
- दर्शन एक सरल परिचय –प्रो.राजेन्द्र स्वरूप भटनागर
- भारतीय दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 – डॉ. राधाकृष्णन
- पाश्चात्य दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 प्रो.दयाकृष्ण
- भारतीय दर्शन एक परिचय – दत्त एवं चटर्जी
- फिलॉसॉफी ऑफ वेस्टन फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
- शिक्षा और समझ – रोहित धनकर
- फिलॉसॉफी ऑफ प्रायमरी एज्जुकेशन – आर.एफ.डियड्रेन
- अनुभववाद – राजेन्द्र प्रसाद
- फिलॉसॉफी ऑफ हयूमन लर्निंग – क्रिस्टोफर
- फिलॉसॉफी ऑफ पॉलिसी मेकिंग – क्रिस्टोफर

प्रश्न पत्र – तीसरा

शैक्षिक तकनीकी

उद्देश्य –

- शैक्षिक तकनीकी एवं संप्रेषण के बारे में जान पाएँगे।
- विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करना सीख पाएँगें।
- सूचना तकनीकी के उपयोग से अवगत हो सकेंगे।
- सीखने–सीखाने के विभिन्न तरीकों के बारे में जान पाएँगे।
- समावेशी शिक्षा में आई.सी.टी की भूमिका को समझ पाएँगे।
- मूल्यांकन हेतु शैक्षिक तकनीकी के उपयोग को जान पाएँगें।

शैक्षिक तकनीकी				
क्र.	**पाठ / विषयवस्तु**		**कुल अंक 80 कालखण्ड 120**	
			अंक	कालखण्ड
1	शैक्षिक तकनीकी	• शैक्षिक तकनीकी का अर्थ • शैक्षिक तकनीकी के लक्ष्य एवं उद्देश्य • शैक्षिक तकनीकी के आवश्यकता एवं उपयोग • शैक्षिक तकनीकी का क्षेत्र • शैक्षिक तकनीकी के कार्य • शैक्षिक तकनीकी के सोपान	20	30
2	शैक्षिक तकनीकी के प्रकार	• शिक्षा में तकनीकी और शिक्षा की तकनीकी • शिक्षा में तकनीकी– विभिन्न शैक्षिक साधन • शिक्षा की तकनीकी • मूल्यांकन में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग • कृत्रिम शिक्षण / अनुरूपित शिक्षण • दल शिक्षण • कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन	20	30

3	शिक्षण–अधिगम के संदर्भ में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.)	• आई.सी.टी.क्या है? • सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ICT के शैक्षिक उपयोग एवं आवश्यकता • शिक्षा पर आई.सी.टी. का प्रभाव • मूल्यांकन में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी • समावेशी शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी • सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी में उपयोगी उपकरण	20	30
4	सीखने–सिखाने में संप्रेषण एवं संचार	• संप्रेषण • संचार • बहुवैकल्पिक साधनों का प्रयोग • समावेशी शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी • बहु–साधन सामग्री के उपयोग • बहु–साधन सामग्री के लाभ • मल्टीमीडिया का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग • सीमाएँ • विभिन्न साधनों का तुलनात्मक अंतर • इंटरनेट • ई–मेल (इलेक्ट्रोनिक मेल) • वर्ल्ड वाइड वेब • सोशल मीडिया • इन्साइक्लोपीडिया • ऑनलाइन विश्वकोष • चैटिंग • इंस्टेंट मैसेजिंग	20	30

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- इन्टरनेट की सहायता से पर्यावरण अध्ययन की किसी विषयवस्तु को समझाने के लिए सामग्री एकत्रित करें।
- अपना स्वयं का ई–मेल आई डी बनाएं एवं 5 व्यक्तियों को मेल करें।
- विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करके पाठ योजना बनाएं एवं शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान उसका उपयोग करें।
- बिना कीमत अथवा कम कीमत वाली वस्तुओं से शिक्षण सामग्री तैयार करें एवं उसकी प्रदर्शनी लगाएं।
- किसी एक विषयवस्तु पर पावरपाइंट प्रेजेन्टेशन तैयार करें।

संदर्भ –

- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार – डॉ एस.पी.कुलश्रेष्ठ, डॉ. ए.के. कुलश्रेष्ठ
- शिक्षक शिक्षण एवं तकनीकी – डॉ आर.ए.शर्मा, डॉ. शिखा चतुर्वेदी
- शैक्षिक तकनीकी – डॉ. सुमनलता., डॉ एच.एल.खत्री
- शिक्षा तकनीकी – डॉ आर.ए.शर्मा
- शैक्षिक तकनीकी एव कक्षा – कक्षा प्रबन्ध – डॉ सरोज शर्मा, डॉ नंदिनी गुप्ता
- शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध – जे.सी. अग्रवाल
- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार – विनोद कुमार अत्री
- शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन – डॉ गया सिंह
- सूचना संप्रेषण तकनीकी B.S.T.C. (D.EL.ED) पठन सामग्री – प्रथम वर्ष ,राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,उदयपुर

प्रश्न पत्र – चौथा

हिंदी भाषा शिक्षण स्तर–1

उद्देश्य –

- भाषा की मानव के जीवन में भूमिका को समझ पाना।
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? सीखने की प्रक्रिया को कौन–कौन से घटक प्रभावित करते हैं?
- भाषा सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका क्या है? इन बिन्दुओं पर समझ बनाना।
- भाषा के सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं को समझना, यह समझना कि क्या–क्या इनके निहितार्थ हैं।
- भाषा में मूल्यांकन का उद्देश्य क्या होना चाहिए और मूल्यांकन करने का क्या तरीका होना चाहिए इस पर अपनी समझ बनाना।
-

हिंदी भाषा शिक्षण				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	भाषा किस चिड़िया का नाम है	• बच्चों की भाषा • अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना • प्रारंभिक कक्षा में क्यों भाषा शिक्षण पर जोर देने की जरूरत है	15	25
2	समाज का ताना बाना और भाषा	• बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा–शिक्षण एवं बौद्धिक विकास • भाषा और तौर तरीके • कौन भाषा, कौन बोली	12	15
3	भाषा का दूसरा कदम–स्कूल	• बच्चों के प्रारंभिक कक्षा में भाषा और साक्षरता के लिए अधिगम लक्ष्य और सिद्धांत • भाषा सिखाना माने क्या • भाषा व भाषा शिक्षण • प्रारंभिक शिक्षा में भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियां	15	25
4	बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना	• बातें करना • पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव • पढ़ना कैसे सिखाया जाए	12	16
5	पढ़वाना किस चिड़िया का नाम है	• उभरता पठन और प्रिंट चेतना • पढ़ाई पहली कक्षा की • पढ़ने के अभ्यास की गतिविधियां • पढ़ने का आकलन कैसे करें	15	25

6	अब, लिखना किस चिड़िया का नाम है	• लिखना – क्या और कैसे? • लिखना सिखाने के उभरते आयाम • लेखन के विविध प्रकार • लिखना–बातचीत	11	14

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. एक से पाँच वर्ष के बच्चे भाषा कैसे सीखते है का अध्ययन।
2. अपने क्षेत्र की स्थानीय कहानियों/गीतों/कविताओं का संकलन कर बच्चों की भाषायी क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन।
3. कक्षा में बच्चों के बीच की भाषा को लिपिबद्ध कर उनका अध्ययन करना।
4 हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण निम्न आधार पर–

   पढ़ना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके।

   लिखना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके।

   भाषायी क्षमता बढ़ाने के लिए पुस्तक में दी गयी गतिविधियाँ।

   कक्षा एक से पांच तक गतिविधियाँ बनाना। जैसे – 'क्या होता है लाल लाल।'

संदर्भ –

- एन्थ्रोपोलॉजी (fifth edition), पापुलर आइडिया एबाउट लैंग्वेज
- भाषायी अस्मिता व हिंदी (Language and Identity) रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव
- बच्चे की भाषा और अध्यापक –श्री कृष्ण कुमार अध्याय –1, भाषा और अधिगम, जेम्सब्रिटेन
- भाषा और ज्ञान का निर्माण आर.सी.शर्मा

(i) Psychology Essentials Articulate Mammal Santrock Jean Aichision

(ii) भाषा व अधिगम जेम्स ब्रिटन रिपोर्ट कार्यशाला

- ज्ञान के निर्माण की प्रोसीडिंग –आर.अमृतवल्ली Articulate Mannual जीन एचिनसन
- बहुभाषिता व हिंदी – रमाकांत अग्निहोत्री
- Language and identity David Crystal
- भारतीय भाषाएं विकासशील समाज में पहचान का माध्यम– अंजनी सिन्हा हिंदी का सामाजिक संदर्भ (बोली भाषा एवं मानकीकरण)
- Reading of meaning (The Identification fo Meaning – frank Smith)
- पठन सामग्री (ज्ञान की संरचना) Sonika Kawh.K 28-54]
- What is Reading ? Richard C.Andesson & all Reading for Meaning
- The Teaching of reading - BrianThompson)
- पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका –लता पांडे

- NCERT 9–14 पढ़ाई पहली कक्षा की – अक्षय कुमार दीक्षित
- पढ़ना सिखाने की शुरूआत NCERT 1–4 – लता पांडे
- बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते– Frank Smith अनुवाद – सुशील जोशी
- Writing: from chap 11 learning cognistion in the content areas
- Educational Psychology - Jhon W. Santrock IInd Edition 49-61 348-354
- बोलना व लिखना (वाल्स चेफ) CTE 05 – Block 4 Unit 15,16 IGNOU , Emerging trends in teaching writing(unit 12)
- भाषा शिक्षा – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

1. पढ़ने सीखने की शुरूआत
2. पढ़ने का आकलन कैसे करें – शरद कुमारी
3. लता पांडे 27–37
4. Reading for meaning (Reading –A Psychoti agaritic guming game- Kenneth S. Goodman 1-13

- LLF

प्रश्न पत्र – पाँचवाँ

ENGLISH LANGUAGE PROFICIENCY

Objectives

- To develop the language skills and knowledge of the student teachers to make them use English fluently.
- To equip student teachers with theoretical and pedagogic perspectives on English as a second language.
- To develop critical awareness of approaches, methods and principles of language learning/ acquisition in the student teachers.
- To familiarize the student teachers with different aspects of effective classroom management, procedures and strategies for teaching English.
- To provide hands on experience in developing lesson planning for effective teaching of English.
- To develop or make use of resources and materials for teaching and assessing young learners.

ENGLISH LANGUAGE PROFICIENCY				
UNITS	**Lesson & Topic Name**		**Total Marks 80**	**Periods -120**
UNIT-1	**ENGLISH IN INDIA**	• Why English in India? • Different Between Learning First and second language • Challenges of learning/teaching English as a second language • Langauge Acquisition and second Language Learning	**03**	**05**
UNIT-2	**LEARNING LSRW SKILLS THROUGH THE FOLLOWING LANGUAGE FUNCTIONS**	• Greeting • Taking leave • Enquiring, giving information • Apologizing • Appreciating • Giving directions	**47**	**65**
UNIT-3	**STUDY KILLS**	• Dictionary skills • Note Making • Information transfer • Interpretation of data	**08**	**10**
UNIT-4	**APPROACHES AND METHODS OF SECOND LANGUAGE TEACHING**	• Approaches and methods of teaching English as second language • Recent Developments • Classroom management • The English Language Teacher as an Innovator	**15**	**30**

UNIT-5	**EVALUATION**	• good test items • Preparing test items • analysis and preparation of blue print	**07**	**10**

Internal Assessment	**20 marks**
Internal Assessment will be based on assessment of listening (5 marks), speaking (5 marks) reading aloud (5 marks) writing (5 marks)	

Reference:

- Howard Peter, Perfect Your Punctuation, Orient Longman.
- Madappally Joseph, Write Better Speak Better, Orient Longman.
- Howard Peter, Perfect Your Grammar, Orient Longman.
- Wallace Michael J., Study Skills in English, Cambridge University Press.
- Hewings Martin, Advanced Grammar in Use, Cambridge University Press.
- Kudchedkar S., Readings in English Language Teaching in India, Orient Longman.
- Naylor Helen with Murphy Raymond, Essential English Grammar Supplementary Exercises, Cambridge University Press.
- Freeman - Diane Larsen, Techniques and Principles in Language Teaching, Oxford University.
- Richards Jack C. and Rodgers Theodore S, Approaches and Methods in Language Teaching, Cambridge University Press.
- Saraswathi V., English Language Teaching, Orient Longman.
- Sasikumar V. and Dutt P. Kiranmai, Rajeevan Geetha. A Course in Listening and Speaking I, Foundation Books.
- Mani P. and Deepthi S, English For Teaching For Secondary School Teachers, Cambridge University Press.
- Nunan David. Designing Tasks for the Communicative Classroom, Cambridge University Press.
- Sadanand Kamlesh, Punitha Susheels, Spoken English A Foundation Course Part I, Orient Black Swan.
- Sadanand Kamlesh, Punitha Susheels, Spoken English A Foundation Course Part II, Orient Black Swan.
- Taylor Grant., English Conversation Practice, Tata McGraw-Hill Publishing Company LTD.
- Mckay Penny and Guse Jenni, Five-Minute Activities for Young Learners, Cambridge University Press.
- Teaching English-Primary Level Block - 1, IGNOU.
- Diploma in Education (D.Ed.) Teachers Handbook.
- National Council for Teacher Education Syllabus Diploma in Elementary Education.
- Self learning Material Pedagogy of English - 2 (Semester - IV) SCERT, Mahendru, Patna, Bihar.
- Curriculum Framework of Diploma in Elementary Teacher Education (D.EL.ED.) Programme, NCTE.
- Diploma in Education (D.Ed.) Distant Education, SCERT, Raipur.
- English Language Proficiency and Pedagogy BSTC (D.EI.Ed.) First-Year, SCERT, Udaipur, Rajasthan.
- English Language Proficiency and Pedagogy B.S.T.C. (D.EI.Ed.) Second-Year, SCERT, Udaipur, Rajasthan.

प्रश्न पत्र – छठा
गणित शिक्षण

उद्देश्य –

- गणित की प्रकृति दैनिक जीवन में इस की महत्ता एवं विशेषताओं को समझना।
- गणितीय अवधारणाओं की समझ कैसे विकसित होती है यह समझना।
- पाठ्यक्रम को पूरा करते समय शिक्षक किसी बच्चे को तथा उसके शैक्षिक विकास के चरणों को समझ सकेंगे तथा यह तय कर पाएँगे कि प्राथमिक गणित की विभिन्न अवधारणाओं को किस स्तर पर, किस तरह पढ़ाया जाए, इसे समझना।
- बच्चे कैसे सीखते हैं तथा उनकी गणितीय सोच को विकसित करने के लिए कैसे उनकी मदद की जा सकती है, इसे समझना।
- गणित सीखने में खेलों की भूमिका तथा सीखने में मदद करने वाले अन्य वैकल्पिक तरीकों को समझना।
- अवधारणाओं को सीखने की उपयुक्त रणनीति के साथ, संख्या की अवधारणा, स्थानीय मान, गणितीय संक्रियाएँ तथा स्थान संबंधी अवधारणाओं की विस्तृत चर्चा कर अवधारणाओं को सीखते समय हम जिन समस्याओं से जूझते हैं उन्हें समझने तथा उनके उपचार के तरीकों को समझना।

गणित शिक्षण				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	बेकसूर गणित	गणित क्या है, कहाँ से आया है ? चारों ओर गणित – क्या हमारी सभी गतिविधियों में गणित शामिल है?	15	24
		सीखने वालों को पहचानें : बच्चों की सोच – बच्चे कैसे सीखते हैं? गणित सीखना – अपना–अपना तरीका। गणित की भाषा – अपने पर भरोसा – लगातार विकास – संक्रियात्मक अवस्थाएँ – हर बच्चा अनूठा।		
		सीखने वालों के बारे में विचार : सीखने वालों के बारे में विचार – क्या बच्चे बड़ों की नकल करके सीखते हैं? – क्या बच्चे खाली स्लेट हैं? – क्या बच्चे सीखने को उत्सुक हैं? – कुछ और उदाहरण भारतीय गणितज्ञ		

2	जड़ में है : गिनती	गिनना कैसे सिखायें? : गिनती का मतलब – अनुभव से अवधारणा तक गिनती। इकाई, दहाई और आगे ..... : बुनियादी समझ – संक्रियाएँ लगाने में दिक्कतें – स्थानीय मान क्या है?	12	16
3	पहला और आखिरी गणित	जोड़ना और घटाना : जोड़ने का मतलब – घटाने की समझ– जोड़ने और घटाने का संबंध – एल्गोरिदम का इस्तेमाल – अंदाज लगाना गुणा और भाग करना : परिचय–गुणा करने से पहले गुणा की समझ– पहाड़े या तोता रटंत? – गुणा का एल्गोरिदम – भाग का मतलब– भाग का एल्गोरिदम	14	22
4	टुकड़े या पूरे	किस पूर्ण के हिस्से? : परिचय – आधारित यानि कितना? पूर्ण और पूर्ण के टुकड़े भिन्न की किस्में : परिचय–भिन्न की तस्वीर बनाना– भिन्नों का मापन एवं भिन्नों का पैमाना – जटिल भिन्न दशमलव : परिचय– भिन्नों के लिए दस का पैमाना– दशमलवों का गणित	15	26
5	जगह की समझ	जगह की समझ : बंद आकृतियां–समतल सतह–सम आकृ. तियां–सममित आकृतियां कोण नापना : कोण क्या होता है? – कोण मापना मापन की शुरूआत : लम्बाई मापना– गैर मानक और मानक इकाइयाँ – मानक इकाइयाँ – उप–इकाइयाँ और मिश्रित इकाइयाँ – क्षेत्रफल का अर्थ क्या है – क्षेत्रफल मापना	14	20
6	बच्चे और गणित	बच्चों की गणित सीखने में मदद : परिचय – बच्चे की पृष्ठभूमि के आधार पर आगे बढ़िए – संबंध जोड़ना – खेल–खेल में सीखना – सीखने में मददगार अन्य तरीकें – जरूरी नहीं कि दोहराव उबाऊ हो – बच्चे एक दूसरे से सीखते हैं – ग़लतियाँ उपयोगी होती हैं कक्षा का कामकाज – आकड़ो का संकलन –	10	12

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

(1) दृश्य एवं अन्तः क्रियात्मक उपकरण/ स्क्रेप बुक (खेल, पजल्स, पहेलियाँ) तैयार करना।

(2) प्रश्न–पत्र बनाना, परीक्षा लेना तथा मूल्यांकन करना, बच्चों द्वारा की गई गलतियों का विश्लेषण उनकी समझ को जानने के लिए करना।

(3) प्राथमिक कक्षाओं की किसी एक गणित पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करना।

(4) Activity sheets तैयार करना।

(5) अपने स्कूल परिसर का नक्शा बनाना, आस–पास के चीजों को संकेतों से व्यक्त करना।

संदर्भ–

- इग्नू की शिक्षक संदर्शिका –AMT-01 खण्ड 1

  AMT-DI

  LMT खण्ड 6

  NCF 2005

  AMT-01 खण्ड 1,AMT-01 खण्ड 2, AMT-01 खण्ड 2, ईकाई 7 एवं 8

  LMT-01 खण्ड 2 ईकाई 07, AMT-01 खण्ड 4 ईकाई 12

  AMT-01 खण्ड 5 ईकाई 16 , LMT-01 खण्ड 3 ईकाई 08

  LMT-01 खण्ड 1 ईकाई 04

प्रश्न पत्र – सातवां

पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण

उद्देश्य–

- पर्यावरण से क्या तात्पर्य है, समझ सकें।
- मानव/समाज और पर्यावरण की अन्तःक्रिया के महत्व को समझे।
- बच्चे की समझ पर्यावरण के बारे में क्या हैं ? समझ सकें तथा इसका उपयोग सीखने–सिखाने की प्रक्रिया हेतु करें।
- अवलोकन, पहचानना, जानकारी एकत्र करना, विभेदीकरण तुलना, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण आदि कौशलों के विकास की पर्यावरण अध्ययन तथा विज्ञान शिक्षण कार्य में कैसे जगह बनाएं? यह समझ सकें।
- पर्यावरण की विविधता और विभिन्नता का सम्मान कर सकें, स्वयं तथा बच्चो को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बना सकें।
- पर्यावरण अध्ययन हेतु विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी प्रासंगिकता को देख पाएं।

गणित शिक्षण				
क्र.	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	स्वयं के पर्यावरण को समझना	• पर्यावरण क्या है? • पर्यावरण घटक • पर्यावरण घटकों की अंत क्रियाएँ • पर्यावरणीय समस्याएँ बनाम सामाजिक समस्याएँ	10	12
2	पर्यावरण के बारे में बच्चे की समझ	• बच्चों की नज़र में पर्यावरण के आयाम • बच्चे की समझ • बच्चे का दृष्टिकोण • सात–आठ साल की बच्ची क्या–क्या जानती है? • कैसे पता करें कि बच्चा पर्यावरण के बारे में क्या–क्या जानता है?	06	10

3	बच्चे कैसे सीखते हैं ?	• पर्यावरण अध्ययन की एक कक्षा • रचनावाद क्या है? • सीखने में समाज और वयस्क की	05	10
4	पर्यावरण अध्ययन क्यों पढ़ाएँ	• पर्यावरण अध्ययन एवं पर्यावरण शिक्षा में अंतर • पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम के सरोकार • पर्यावरण अध्ययन में क्या–क्या किया जा सकता है? • अवधारणाओं का बनना • अवधारणाओं के बनने की प्रक्रिया • कौशल क्या है?	16	20
5	पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में क्या पढ़ाएँ	• पर्यावरण अध्ययन का दृष्टिकोण • पर्यावरण अध्ययन में जरूरी आयाम • संभव विकल्पों पर एक नजर	11	20
6	पर्यावरण अध्ययन कैसे पढ़ाएँ	• पर्यावरण अध्ययन में विज्ञान व सामाजिक विज्ञान का समावेश • सामाजिक विज्ञान शिक्षण • कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य	16	24
7	पर्यावरण अध्ययन व कक्षाकक्ष की गतिविधियाँ	• गतिविधि क्या है? • कक्षा में गतिविधि का आयोजन एवं संगठन • कक्षा कक्ष में की जा सकने वाली कुछ गतिविधियाँ • पुस्तकालय–सीखने के संसाधन के रूप में	16	24

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. अपने क्षेत्र की मान्यताओं एवं उनके पीछे छिपे पौराणिक आधारों को संकलित करें।
2. ''विभिन्न ऋतुओं के खान–पान एवं उनके पीछे छिपे ''विज्ञान'' पर प्रायोजना कार्य करें।
3. अपने आसपास के क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिटिट्यों के नमूनों का संकलन कर उनकी विभिन्नताओं की पहचान करें एवं उनका महत्व बताएँ।
4. ''मौसम एवं स्वास्थ्य – कैसे करें बचाव'' इस विषय पर प्रायोजना तैयार करें।
5. किसी पर्यावरणीय तथ्य/विषय–वस्तु/समस्या पर मॉडल तैयार कीजिए।
6. विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों का संकलन कर उसके भावों का वर्णन करें।
7. अपने डाइट परिसर में वनस्पति उद्यान का निर्माण कर उसमें लगे पौधों की विस्तृत जानकारी तथा प्रत्येक 15 दिन में परिवर्तन को नोट करें तथा उसकी चर्चा कक्षा में करें।
8. अपने गाँव व मुहल्ले का सर्वे कर पता करें कि पॉलीथीन का उपयोग किन –किन कार्यों के लिए किया जाता है। इनका उपयोग कम करने के उपाय सुझायें।

संदर्भ–

- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3–एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
- मूल्याकंन की संदर्भ पुस्तिका, –एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
- पर्यावरण अध्ययन संगठन और क्रियान्वयन, –इग्नू
- खोजबीन –विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- कुछ करें भाग 1–विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- प्राशिका– एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- संदर्भ –एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- ज्ञान–विज्ञान (अंक 18,दिसम्बर 2002)
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3 से 5 –एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 से 8– एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़

प्रश्न पत्र – आठवाँ

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास

उद्देश्य–

- भारतीय शिक्षा तंत्र की संरचना एवं कार्यप्रणाली से परिचित हो सकेंगे।
- शालेय संस्कृति से जुड़े विभिन्न अवयवों पर व्यापक समझ विकसित कर सकेंगे व एक समृद्ध संस्कृति विकसित करने हेतु नवाचार कर सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों व स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शालेय प्रभावशीलता की अवधारणा व उससे जुड़े पहलुओं को परिभाषित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड निर्मित कर सकेंगे व उनको प्राप्त करने के तरीकों पर समझ विकसित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता एवं शालेय संस्कृति के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों के अनुरूप बदलाव हेतु शाला में समृद्ध संस्कृति के निर्माण एवं शाला प्रभावशीलता के मापदण्डों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक नेतृत्व एवं प्रबंधन के कौशलों पर समझ विकसित कर सकेंगे।
- शाला एवं समुदाय के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे। विद्यालय विकास की अवधारणा समझ सकेंगे व विद्यालय विकास योजना बना सकेंगे।

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	विद्यालय की संकल्पना परिचय	• विद्यालय की आवश्यकता एवं उद्देश्य – • विद्यालय की संकल्पना – एक अधिगम केन्द्र के रूप में • विद्यालय के आधार • प्रभावी विद्यालय की विशेषता • विद्यालय और समाज का अंतर्संबंध • कल्याणकारी योजनाएँ • विद्यालय एक सामाजिक संस्था के रूप में	20	30
2	शिक्षा संचालन व्यवस्था	• संवैधानिक प्रावधान • शिक्षा का क्षेत्राधिकार • शैक्षिक सहयोग के औपचारिक संगठन • राज्य की शिक्षा व्यवस्था • शिक्षा संबंधी विभिन्न प्रशासनिक सहयोगी संस्थाएँ	15	20

3	विद्यालय के प्रकार	• विद्यालय की संरचना • केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालय • राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय • निजी विद्यालय • विशिष्ट विद्यालय • कॉमन स्कूल सिस्टम	10	20
4	विद्यालय संस्कृति और परिवेश	• विद्यालयों में बच्चों को सामान्य एवं श्रेष्ठ श्रेणियों में वर्गीकृत करना। • विद्यालयी प्रवृत्तियां और अनुशासन • वार्षिकोत्सव • विद्यालय परिवेश और मूलभूत संकेतक	15	20
5	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन–	• संस्था प्रमुख की चुनौतियाँ • प्रशासनिक नेतृत्व • शालेय शिक्षा में परिवर्तन लाने हेतु नेतृत्व • शाला के विकास में संस्था प्रमुख की भूमिका दत्तकार्य एवं संदर्भ ग्रंथ	20	30

आंतरिक मूल्यांकन **कुल 20 अंक**

कुछ उदाहरण –

- संस्था प्रमुख की भूमिका।
- सहयोगी संगठन से अंतःक्रिया।
- शाला विकास की योजना बनाना।
- शाला सुविधाओं की सुलभता सुनिश्चित करने हेतु शालाओं में किए गये नवाचारों का अध्ययन।
- शाला प्रबंधन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ–बाल पंचायत/बाल संसद इत्यादि।
- विभिन्न विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।
- शालेय संस्कृति और शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्संबंधों का अध्ययन।
- शाला से समुदाय की अपेक्षाएँ एव अपेक्षानुसार शाला में किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन।

संदर्भ –

- Sood Neelam - Management of School Education in India, Delhi: APH Publishing House, 2003 (NIEPA-2003)
- Earley Peter and Dick Weindling-Understanding School Leadership, Sage Publication India Pvt. Ltd. , 2004
- Michael Fullan - Education Leadership, Jossey Bass Publisher, 2006
- एस. मजूमदार – अधो संरचना एवं शिक्षा प्रशासन।
- बत्रा, एस.(2003) – शालेय सहयोग के लिये शाला निरीक्षण।
- आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन, (2005)
- अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय प्रकाशन – लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012) हिंदी अंक 04 – स्कूल नेतृत्व।
- Webliogra http://azimpremjifoundation.org/pdf/LCSchool_LshipHINDI.pdf

प्रश्न पत्र – नवाँ

आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

उद्देश्य–

- आधुनिक विश्व की तीन प्रमुख प्रक्रियाएँ जिन्होंने सार्वजनिक शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित किया है –कृषि, औद्योगीकरण, राज्य एवं राष्ट्र की स्थापना व लोकतंत्र। इन अवधारणाओं और शिक्षा पर उनके प्रभाव को समझना।
- शाला का संस्थागत स्वरूप शाला प्रबंधन और शिक्षकों को उनके महत्व को समझने में समर्थ बनाना।
- आधुनिक शालाओं के वास्तविक रूप ने सामाजिक असमानता को किस हद तक दूर किया ? बच्चों की सृजनात्मकता का विकास तथा मानवीय व लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा दे पाने की योग्यता की समीक्षा करना।
- स्वतंत्र भारत में शिक्षा की चुनौतियाँ, इनका सामना करने के लिए संसाधन व तरीकों तथा प्रयासों व उपलब्धियों की समीक्षा करना। (इस संदर्भ में अपनाई गई विभिन्न नीतियों व कार्यक्रमों की समीक्षा करना)
- भारत में अपनाए गये वैकल्पिक शैक्षणिक प्रयोगों की समीक्षा करना।

आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
01	आधुनिक विश्व की विशेषताएँ	• आधुनिक विश्व और शालेय शिक्षा • आधुनिक विश्व में कृषि • औद्योगिक उत्पादन	15	17
02	राष्ट्रवाद	• राष्ट्रवाद • लोकतंत्र क्या? लोकतंत्र क्यों? • वैश्वीकरण और शिक्षा	15	17
03	आधुनिक विश्व और शाला का स्वरूप	• सार्वजनिक स्कूली शिक्षा का विकास • सबके लिए शिक्षा –कैसी शिक्षा ?	15	17

04	स्वतंत्र भारत में शिक्षा से अपेक्षाएं और शिक्षा नीति	• विकासोन्मुखी भारत में शिक्षा की भूमिका • स्वतंत्र भारत में शिक्षा : 1947–1964 • कोठारी आयोग की सिफारिश और क्रियान्वयन 1964–1986 • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986–1992 और जिला परियोजना • बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार	15	17
05	शाला का संस्थागत स्वरूप	• अच्छी शाला की कल्पना • भारत और छ.ग. में शाला के संस्थागत ढ़ॉचे की समीक्षा • शालाओं के प्रकार और सार्वभौमिक शिक्षा की चुनौती • शाला प्रबंधन में सामुदायिक सहभागिता • कक्षा का ढांचा कितना उचित • लोकतांत्रिक विद्यालय • अध्यापक और समाज	20	22

संदर्भ –

1. राजनैतिक सिद्धान्त, कक्षा 11वीं–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली
2. लोकतांत्रिक राजनीति कक्षा 9–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली
3. लोकतांत्रिक विद्यालय (मूल पुस्तक– डेमोक्रेटिक स्कूल)–संम्पादन डब्ल्यू, एपल व जेम्स ए. वीन, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (म.प्र.)
4. 'शिक्षा का समाजशास्त्रीय संदर्भ, (ए.आर.कामथ का लेख)–सम्पादक–सुरेश शुक्ल और कृष्ण कुमार ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. 'भारत की शिक्षा व्यवस्था–विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
6. 'समग्र नई तालीम/सम्पादन–शेखर–दत्त प्रकाशक– नयी तालीम समिति, आश्रम सेवाग्राम वर्धा (महाराष्ट्र) एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट नई दिल्ली
7. 'शिक्षा विमर्श' (त्रैमासिक पत्रिका) अंक–मई 98, प्रकाशन–दिगन्तर खेलकूद समिति, जयपुर (राजस्थान)
8. 'भारत का राजपत्र' असाधारण, भाग – 2, खण्ड 1 प्राधिकार से प्रकाशित नई दिल्ली वृहस्पतिवार, अगस्त 27, 2009/भाद्र 5, 1931, विधि एवं न्याय मंत्रालय, बच्चों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
9. 'प्राशिका/एकलव्य का प्राथमिक शिक्षा में अभिनव प्रयोग–रत्न सागर प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित।

10. राज समाज और शिक्षा–कृष्णकुमार, राजकमल प्रकाशन 2006, नई दिल्ली
11. 'खतरा स्कूल' (मूल पुस्तक–डेंजर स्कूल)–विनोद रैना, प्रकाशक–भारत ज्ञान विज्ञान समिति
12. Education com and after, J.P.Naik
13. Short history of education in India, J.P.Naik
14. समरहिल–ए. एस. नील., एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)
15. असफल स्कूल–जॉन होल्ट, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)
16. रविन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन–ग्रंथ शिल्पी, प्रा. लि. नई दिल्ली

प्रश्न पत्र – दसवां

सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम

उद्देश्य–

- बच्चों व बचपन के बारे में अवधारणाओं की समीक्षा कर पाएँगे।
- संज्ञानात्मकता क्या है, बच्चे कैसे सीखते हैं, इस पर विचार कर पाएँगे।
- कक्षा कक्ष/विद्यालय परिस्थितियों में बच्चों के सीखने के तरीके और उनकी प्रकृति को समझने में शिक्षकों की सहायता करना।
- तर्क करने, विमर्श करने तथा अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा शास्त्रीय आचरण की संकल्पनात्मक समझ के लिए शिक्षकों की दक्षताओं का विकास करना।
- बच्चों के अधिगम के प्रभावी सरलीकरण के लिये उपयुक्त तरीकों एवं रणनीतियों को चुनने और प्रयोग करने के लिए शिक्षकों को समर्थ बनाना।
- अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने तथा उनको कक्षागत अधिगम की प्रोन्नति में प्रभावी प्रयोग करने में समर्थ बनाने के लिये शिक्षकों को स्वायत्त करना।
- परिणाम मूलक लक्ष्य की प्राप्ति करने में शिक्षकों को सक्षम बनाना।

सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम				
क्र.	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
01	शिक्षा और ज्ञान विविध परिपेक्ष्यों की समझ	• शिक्षा की अवधारणात्मक समझ • शिक्षा और समाज • शिक्षा के आधारों की समझ • शिक्षा के उद्देश्यों एवं मूल्यों की समझ • विद्यालय में शिक्षा की प्रकृति • ज्ञान की अवधारणात्मक समझ • समेकन तथा सीखने–सिखाने में सहयोगी ई–संसाधन	08	09
02	बचपन और सामाजीकरण	• बच्चे तथा बचपन की समझ • समाजीकरण की समझ	08	09
03	शिक्षा विद्यालय तथा समाज–अन्तर संबंधी पड़ताल	• प्रस्तावना • अधिगम उद्देश्य • विविधता, असमानता तथा वंचना – अंतर संबंधी पड़ताल • शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन में संबंध	08	09

04	विद्यालय के शुरुआती समय के दौरान अधिगम एवं शिक्षण	• अधिगम प्रक्रिया • बच्चा कैसे सीखता है। • शिक्षण की प्रक्रिया	08	09
05	शिक्षण और अधिगम की विधियाँ	• शिक्षण और अधिगम की प्रभावकारी विधियाँ • अनुदेशात्मक विधियाँ • विद्यार्थी–केंद्रित विधियाँ • प्रगति की जाँच के लिए आदर्श उत्तर	08	09
06	शिक्षार्थी और अधिगम केंद्रित उपागम	• अधिगम उपागम • क्रियाकलाप आधारित उपागम • योग्यता आधारित उपागम • संरचनात्मक उपागम	08	09
07	अधिगम शिक्षण अधिगम का प्रबंधन कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया का प्रबंध	• अधिगम परिस्थितियों का प्रबंधन • अधिगम और शिक्षण के लिए समय और स्थान का प्रबंधन • प्रोत्साहन व अनुशासन के लिए प्रबंधन • प्रबंधक के रूप में अध्यापक की भूमिका • प्रगति की जाँच के लिए आदर्श उत्तर	08	09
08	सुविधावंचित शिक्षार्थियों हेतु संदर्भित अधिगम	• अधिगम के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ • सुविधावंचित बच्चों की शिक्षा • सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में जन–जाति के बच्चों की शिक्षा • प्रगति की जाँच के लिए आदर्श उत्तर	08	09
09	निर्धारण तथा मूल्यांकन के आधार	• शिक्षार्थियों की प्रगति का आकलन • आकलन की प्रक्रिया • अधिगम एवं आकलन	08	09
10	रवीन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरविंद, महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द	• रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन • रवीन्द्रनाथ टैगोर – प्रकृति और सामाजिक संदर्भ से दूर न हो शिक्षा • महर्षि अरविंद का शैक्षिक दर्शन • मोहन दास करमचन्द गांधी (2 अक्टूबर 1869–30 जनवरी 1948) • स्वामी विवेकानंद शिक्षा दर्शन	08	09

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- अपने गांव की सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता का विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिये।
- अर्थपूर्ण अधिगम बनाने और ज्ञान के निर्माण के लिये शिक्षण के बीच संबंधों का परीक्षण किस प्रकार करेंगे।
- कक्षा कक्ष शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनुदेशात्मक विधियों एवं विद्यार्थी अनुकुल विधियों में से आप किस विधि का प्रयोग करना चाहेंगे ? और क्यों ? स्पष्ट कीजिये।
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय के एक विषय से उचित उदाहरण प्रस्तुत करके विशेषताओं की व्याख्या कीजिये। इस उपागम के लाभ व सीमाओं का वर्णन करें।
- अधिगम के आकलन तथा अधिगम के लिये आकलन में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

संदर्भ :–

- पुस्तक – विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा
- लेखक – गुरुसरनदास त्यागी
- लेख – डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र, विद्या शाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का लेख।
- दिल्ली विश्वविद्यालय के एजुकेशन डिपार्टमेंट में प्रोफेसर नमिता रंगनाथ की किताब 'द प्राइमरी स्कूल चाइल्ड' का हिंदी अनुवाद।
- R.F. मुक्त ज्ञान कोश विकिपीडिया।
- NIOS डी.एल.एड. पाठ्यक्रम।
- IGNOU डी.एल.एड. पाठ्यक्रम नई दिल्ली।

प्रश्न पत्र – ग्यारहवाँ

विविधता, समावेशी शिक्षा व जेण्डर

उद्देश्य–

- अपने आस पास की विविधता एवं समानता की समझ का विकास करना।
- अपने आस पास की विविधताओं का चिन्हांकन कर आने वाली समस्याओं की पहचान एवं निदान कर पाना।
- अपने आस पास की विविधता एवं समानता की समझ कर अपने व्यवहार में अभिव्यक्त कर पाना।

विविधता, समावेशी शिक्षा एवं जेण्डर				
क्र	**पाठ / विषयवस्तु**		**कुल अंक 80** **कालखण्ड 90**	
			अंक	कालखण्ड
01	समाज में विविधता और समानता	• विविधता से आशय • दोस्ती करना • जाति व्यवस्था असमानता का एक अन्य रूप • भारत में विविधता • हम विविधता को कैसे समझें? • भौगोलिक स्थितियां विविधता का एक कारक • विविधता में एकता • आइए समानता पर भी चर्चा करें	07	10
02	विविधता और भेदभाव	• पूर्वाग्रह • लड़के और लड़की में भेदभाव • रुढ़िबद्ध धारणाओं की समझ • असमानता एवं भेदभाव • समाज में भेदभाव का सामना • समानता के लिए संघर्ष	07	10
03	विविधता : समाज और विद्यालय में एक महत्वपूर्ण स्रोत	विविधता को पाटने में बच्चों की भागीदारी – • छोटे विद्यालय में आरंभ • वृहत या अपेक्षाकृत बड़े विन्यासों में भिन्नताओं को मान्यता • शिक्षण विधि द्वारा भिन्नता को संभालना तथा बच्चों की भागीदारी	06	10
04	शैक्षिक व्यवस्था में समावेश विशेष आवश्यकता के बच्चे के संदर्भ में	• समावेशन की अवधारणा • NCF-2005, NCFTE-2009 में समावेशी शिक्षा • शैक्षिक व्यवस्था में समावेशन • समावेशी शिक्षा की आवश्यकता • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति नजरिया • समावेशन प्रोत्साहन के तरीके	10	10

05	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वर्गीकरण, प्रकार, पहचान व शिक्षा	• बच्चों का सामान्य वर्गीकरण (पहचान, कारण, शिक्षा) • निःशक्त जन अधिनियम के आधार पर विशेष आवश्यकता / दिव्यांगता के प्रकार	6	6
06	समावेशन के अवसर व संभावनाएँ	• समावेशी शिक्षा के मायने • शिक्षा में समावेशन चुनौती व समाधान	6	6
07	संसाधन, प्रोत्साहन, योजनाएँ व अनुशंसाएँ	• दिव्यांग बच्चों के लिए बाधारहित वातावरण का निर्माण • CWSN बच्चों हेतु संसाधन • दिव्यांगता एवं शिक्षण सामग्री • मूल्यांकन • कानूनी प्रावधान एवं सुविधाएं • दिव्यांग बच्चे एवं खेलकूद • पुनर्वास	8	8
08	जेण्डर : अवधारणा महिला, पुरूष, थर्ड जेण्डर	• जेण्डर का अर्थ • जेण्डरीकरण • सेक्स और जेण्डर में अन्तर • सामाजिक लिंग–प्राकृतिक लिंग • पहनावा, गुण व विशेषताएं • भूमिकाएं एवं जिम्मेदारियां • लैंगिक अन्तर एवं जैविकीय सत्य • औरतों के बारे में फैलाई गई अफवाहें • सामाजिकरण एवं सालैंगीकरण • सामाजिककरण की प्रक्रिया • तृतीय लिंग अथवा ट्रांसजेण्डर	12	12
09	मातृ एवं पितृ सत्तात्मक समाज में चुनौतियाँ	• पितृसत्ता क्या हैं? • पितृसत्ता की पहचान • पितृसत्ता व्यवस्था में नियंत्रण के क्षेत्र • पितृसत्तात्मक व्यवस्था और विभिन्न संस्थाएँ • मातृसत्तात्मक व्यवस्था	6	6
10	संसाधन, प्रोत्साहन, योजनाएँ व अनुशंसाएँ	• बालिकाओं की शिक्षा हेतु किए गए योगदान • प्रथम स्कूल प्रथम अध्यापिका • शिक्षा एक हथियार	12	12

संदर्भ –

- शाला और समुदाय SCERT , (D.ED) SCERT C.G. 2012
- विविधता समावेशित शिक्षा और जेण्डर–डॉ.सविता शर्मा SHRI VINOD PUSTAK MANDIR 2016
- समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे – राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद (यू.पी.)
- शिक्षा निर्देशन व परामर्श – BTC तृतीय सेमेस्टर।
- समावेशी शिक्षा संदर्शिका

प्रश्न पत्र –बारहवां

हिंदी भाषा शिक्षण स्तर –2

उद्देश्य–

- हिंदी भाषा की संरचना के विभिन्न पहलूओं की समझ बनाना।
- सोचने और मौलिक चिंतन की प्रवृत्ति का विकास एवं उन विचारों को आत्मविश्वास पूर्वक अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
- कल्पनाशक्ति, विस्मयबोध, कोतूहल, जिज्ञासा, तर्क एवं सृजनशीलता का विकास करना।
- आनन्द व उत्साह पूर्वक अध्ययन–अध्यापन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- बाल साहित्य पढ़ने व उसके विभिन्न पहलूओं को समझ पाने के लिए प्रेरित करना।
- साहित्य एवं साहित्यिक विधाओं से परिचय एवं समझ विकसित करना।
- भाषा एवं विचार के सम्बन्ध को समझना।
- कक्षा–कक्ष में भाषा सीखने–सिखाने के महत्व को समझना।
- पुस्तक–केन्द्रित व रटन्त प्रणाली से हटकर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।

भाषा (हिंदी) व भाषा शिक्षण				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
01	बच्चों में भाषा का विकास	• भाषा शिक्षण का वर्तमान परिदृश्य : कुछ प्रचलित मान्यताएँ : • बालक की मातृभाषा एवं भाषाई क्षमता • भाषा शिक्षण के उद्देश्य • भाषा की कक्षा कैसी हो?	20	18
02	भाषा व विचार – व्यक्तिगत विकास में भाषा की भूमिका –	• भाषा व विचार • भाषा और विचार का संबंध • भाषा व्यक्ति के लिए क्यों आवश्यक है? • भाषा का सीखने – सिखाने से संबंध	12	14

03	पुस्तकालय एवं बाल साहित्य	• पुस्तकालय का उपयोग क्यों व कैसे • कक्षा में अन्य पुस्तकें • कहानी कथन कौशल • बाल साहित्य • क्या–क्या हो बच्चों की एक किताब में • संकलित बात साहित्य एवं गतिविधियाँ	15	20
04	साहित्य की अनुभूति	• साहित्य की अनुभूति	15	20
05	हिंदी भाषा व उसका व्याकरण	• हिंदी भाषा व उसका व्याकरण	10	10
06	इम्तहान / आकलन–	• आकलन (NCERT Handbook) • मूल्यांकन (एन.सी.एफ.) • मूल्यांकन क्यों?	8	8

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- प्राथमिक कक्षाओं में भाषा क्यों पढ़ाई जाती है? का अध्ययन। (टीप :– छात्राध्यापक अपने शिक्षकों, साथियों एवं प्रथम वर्ष के छात्राध्यापकों से चर्चा करें।)
- अपने क्षेत्र के स्थानीय बाल साहित्य / गीत / कविता / कहानियों / कथाओं का संकलन कर बच्चों की भाषाई क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन करें।
- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को कहानी और कविता क्यों पढ़ाते हैं इस पर प्राथमिक शिक्षकों से बातचीत कर विश्लेषण तैयार करना।
- चित्रों के माध्यम से प्राथमिक कक्षा के बच्चे से कहानी का निर्माण करवाकर उसका विश्लेषण कर प्रतिवेदन तैयार करें।
- प्राथमिक शाला के किसी एक कक्षा के बच्चों के साथ संवाद करने हेतु आप क्या–क्या करेंगे। इस पूरी प्रक्रिया को लिपिबद्ध कर प्रस्तुत करें।

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, किताबों आदि में प्रकाशित बालकहानी / कविता / नाटक / चित्रों / खेल / कथा का संकलन करें। इसका उपयोग अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने–सिखाने में कर इस पर प्रतिवेदन तैयार करें।

संदर्भ –

- एक टोकरी भर मिट्टी–कहानी – पं. माधवराव सप्रे।
- उदात्त संगीत –मुक्तक – डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र
- पुस्तक के मायने – डॉ. हृदयकांत दीवान, बच्चों की भाषा क्षमता –हृदयकान्त दीवान, विद्याभवन सोसायटी, कक्षा में दीगर किताबें –शहनाज. डी.के.(खोजबीन अंक 5)
- कुछ कहानियाँ कविताएँ, पहेलियाँ व उन पर गतिविधियाँ – आकलन स्त्रोत पुस्तिका, एन.सी.ई.आर.टी. व एकलव्य

प्रकाशन

- पिस्ते बादाम – इंदिरा वासवानी, अनुवाद – मोतीलाल जोतवाणी
- तोंबा – शिजगुममयुम, अनुवाद – नीलवीर शास्त्री।
- कहानी सुनाने का हुनर – प्रो. कृष्णकुमार
- दूंगी फूल कनेर के – गंगा प्रसाद।
- प्रायश्चित – भगवती शरण वर्मा।
- गुलेलबाज लड़का – भीष्म साहनी
- पापा खो गए – बसंत, कक्षा 7 हिंदी एन.सी.ई.आर.टी की पाठ्यपुस्तक, दादाजी – संकलित
- जो बीत गई – हरिवंश राय बच्चन।
- छोटा जादूगर –जयशंकर प्रसाद
- पिता के पत्र पुत्री के नाम – जवाहर लाल नेहरू
- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय –हिंदी पाठ्यपुस्तक कक्षा..... छत्तीसगढ़
- नमक का दारोगा– मुंशी प्रेमचंद।
- छात्र की परीक्षा–रविन्द्रनाथ टैगोर का बाल साहित्य
- तू जिन्दा है तो..... जवाब दर सवाल, एकलव्य
- विद्यार्थी की आत्मकथा (नए निबंध) श्यामजी गोकुल वर्मा विद्या विहार,नई दिल्ली
- प्रोपेगैंडा (आधुनिक युग का शक्तिशाली अस्त्र) बाबू गुलाबराय (किताबघर)
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य –एन.सी.ई.आर.टी

1- भाषा की कक्षा के कुछ उदाहरण सक्रिय लिखित माहौल विकसित करना – कीर्ति जयराम (संदर्भ एकलव्य)

2- मुझे क्या मालूम हुआ – लक्ष्मी नारायण, संदर्भ एकलव्य

- भाषा और विचार भाग 1 – अनुवाद – सुनीता मिश्रा
- भाषा और विचार भाग 2 – अनुवाद – पुष्पराज राणावत
- भाषा इंसानों के लिए क्यों जरूरी है और इसका विकास कैसे होता है ? – वी.बी. ई. आर.सी, उदयपुर, (राजस्थान)
- भाषा व समझ भाग 1 व 2 – रोहित धनकर।
- हिंदी शिक्षण – रमण बिहारी लाल
- हिंदी शिक्षण – डॉ. एन.आर. शर्मा।
- स्वतंत्रोत्तर हिंदी बाल साहित्य – डॉ. कामना सिंह
- लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन – नई दिल्ली

प्रश्न पत्र – तेरहवाँ – भाग–01

अंग्रेजी शिक्षण

Objectives -

- To develop the language skills and knowledge (about the language) of the student teachers so that they can use English fluently.
- To equip student teachers with skills to put into practice theoretical and pedagogical perspectives on English as a second language. Student teachers will be able to practice theory contextually and innovatively.
- To develop critical awareness of approaches, methods and principles of language learning/ acquisition in the student teachers.
- To familiarize the student teachers with different aspects of effective classroom management, procedures and strategies for teaching English.
- To provide hands on experience in developing lesson planning for effective teaching of English.
- To develop or make use of resources and materials for teaching and assessing young learners.
- To conduct classroom researches to handle classroom challenges.

ENGLISH (Proficiency and Pedagogy)				
इकाई क्रमांक	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 40 कालखण्ड 45	
			अंक	कालखण्ड
UNIT-1	CONTEXTS OF ENGLISH LANGUAGE LEARNING (SECOND LANGUAGE)	• Indicators of Learning (Learning Outcomes) • Textbook Analysis • Principles of Learning English as a second language • Characteristics of curriculum, syllabus, textbook • Principles of Designing Lesson Plans and formats • English Language Teaching-Learning Processes (Learning through games, literature, authentic materials, literature, real-life situations, ICT)	20	20
UNIT-2	LEARNING AND TEACHING OF ENGLISH AS A SECOND LANGUAGE (CONCEPTS, DEVELOPING TEACHING-LEARNING PLANS AND MATERIALS)	• Listening (L) • Speaking (S) • Reading (R) • Writing (W) • Vocabulary (V) • Grammar (G) • Poetry • Integrated (for L,S,R,W,V,G)	20	25

Internal Assessment	10 marks
Internal assessment will be based on project work (10 marks)	

Reference:

- Agnihotri R.K. and A.L.Khanna, 1996 English Grammar in Context, Ratna Sagar Publication.
- *Adrioan Doff, Teacher's workbook – Teah English-Cambridge Teacher Training and Development.*
- Das Gupta, J. 1970. Language Conflict and National Development : Group Politics and National language Policy in India, p. 43-45)
- George Yule, Second Language acquisition/learning – Pg no. 162 to 170 - The study of Language (Third edition)
- J.C. Aggarwal, Principles, methods and techniques of teaching, Vikas Publishing House PVT LTD, Second Revised Edition.
- *Jack C. Richards, Theodore S. Rodgers, Approaches and methods in language teaching:* Foundation of Bilingual education and bilingualism, Colin Baker.
- Jim Trelease, When to begin read – The new read aloud Handbook
- Lorna M. Earl, Assessment as Learning – Using classroom assessment to maximize student learning, Corwin Press, INC.
- *Mary Spratt., English for the teacher – A language development course –*
- V. Saraswati, English Language Teaching Principle, Practices Orient Longman
- Dianne Larsen – Freeman Technique and Principle in Language Teaching OUP
- Jane Willis- Teaching English Through English .
- Kamlesh Sadanand & Susheela Punita 2014 - Spoken English – A Foundation Course
- Learn English, Teach English: English Skills for Teachers- Ravinarayan Chakrakodi
- Padhne ki sanajh – Reading development Cell – NCERT
- Reading for meaning – Reading development Cell – NCERT
- Robert L. Linn, Norman E. Gronlund, Measurement and Assessment in Teaching, Englih edition, Person Education, Inc.
- *Rungeen singh, Kitu oges on a holiday – Vishv books*
- S. nagarajan, 'the decline of English in India', college English, Vol. 43, No. 7, Nov. 1981, Pg 665
- Susan B. Neuman and Kathleen Roskos, Nurturing Knowledge.
- The TKT Tteaching Knowledge Textbook- Mary Spratt, Ala Pulverness, Melanie Williams-CUP
- Brad Decan and Tim Murphy, Kahani sunakar to dekho
- IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, pg no. 25-26
- IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, Pg 24
- Learning Curve – Language Issue – Azim Premji Foundation
- NCERT- NCF –2005
- Prashant Agrawal, 'Leader Article: Myths about English', The Times of India, Nov 17, 2007

- Sanjiv Kaura, 'Language Without barriers', The times of India, Mar 11, 2010
- *Time to rhyme – ACBT publication – Eklavya*
- *Young India 1919-22, p. 451*

Web links:

- *http:// www.uwsp.edu/education/lwilson/learning/quest2.htm*
- *http:// www. Educationsoasis.com/curriculum/LP/LP resources/lesson objectives.htm#avwww.cbse.nic .in*
- *www.ncert.nic.in*
- *http:// www.improvespokenenglish.org/search/label/Conversation*
- *http:// www.mindmapart.com/energy-saving-mind-map-jane-genovese*
- *http:// www.msu.edu/caplan/drama/tesol2005/situations.doc*
- *http:// www.scribd.com/doc/391505/Paragraph-Writing*
- *http:// www.teflgames.com/why.html- May 28, 2010*
- *www.sendaiedu.com/effectiveuseofthetxtbookhandouthung.doc*
- *www.slideshare.net/wisdom/adaptingalanguagetextbook*
- *en.wikipedia.org/wiki/Children's_literature*
- *http://www.brighthub.com/education/k-12/articles/6211.aspx#ixzzorUR6623j*

प्रश्न पत्र – तेरहवाँ – भाग–02

संस्कृत शिक्षण

उद्देश्य–

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा शिक्षण के महत्व से अवगत होना।
- भाषाई कौशलों का विकास करना।
- संस्कृत में प्रश्नोत्तर एवं संस्कृत वाक्य रचना करने योग्य बनाना।
- राष्ट्र के प्रति आदर एवं भावात्मक एकता का विकास करना।
- भाषिक तत्वों की प्रयोगात्मक क्षमता का विकास करना।
- नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता का विकास करना।
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम के अनुसार जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित रोचक एवं ज्ञानात्मक क्षमता का विकास करना।
- प्रश्न निर्माण करने की क्षमता का विकास करना।

भाषा (संस्कृत) व भाषा शिक्षण				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 40 कालखण्ड 45	
			अंक	कालखण्ड
01	संस्कृत भाषा शिक्षण	• संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ • संस्कृत भाषायी कौशलों का विकास कैसे हो? • संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें • संस्कृत में नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें • संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरुचि कैसे सृजित करें	10	10
02	आधार पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु पर आधारित मनोरम संस्कृत कक्षा 8	• सरल संस्कृत में गद्य पठन • सरल संस्कृत में पद्य पठन • लघु कथा / आरव्यायिकाओं को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ • संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि बढ़ाने हेतु • स्वस्तिवाचन / मङगलाचरण कैसे करावें • मित्र / माता / गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें?	10	10

03	व्याकरणिक विधाएँ	• भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप • को कैसे निर्धारित करें। • संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ। • बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की • अवधारणा को कैसे पुष्ट करें ? • सरल संस्कृत में क्रिया, पुरूष काल व लिङ्ग का प्रयोग कैसे करावें ? • सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे करावें • गद्य शिक्षण अथवा पद्य शिक्षण में आये अव्यय अथवा उपसर्गों का बोध • कराते हुए बच्चों को सरल संस्कृत कैसे सिखाएँ? • सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे करावें।	10	15
04	काव्यतत्व (काव्य तत्वों की जानकारी)	• मात्रिक व वर्णिक छंदों का कैसे बोध करावें। • अनुष्टुप, उपेन्द्रवजा, द्रुतविलंबित तथा वसंततिलका आदि छंदों का • ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ ? • अनुप्रास, यमक व श्लेष जैसे अलंकारों के माध्यम से बच्चों में काव्यगत सौंदर्यानुभूति का बोध कैसे करावें ? • करूण रस तथा वीर रस के माध्यम से काव्यगत रसानुभूति कैसे करावें ? • सरल संस्कृत वाक्यों में लाकोक्ति/मुहावरें का प्रयोग कर संस्कृत के भाव को कैसे सुदृढ़ीकरण करें ?	10	10

आंतरिक मूल्याँकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- दो संस्कृत गद्यों का हिंदी में अनुवाद।
- वर्णमाला का चार्ट निर्माण।
- संस्कृत के पांच कवियों के नाम लिखना व उनकी रचना एवं वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालना।
- एक गद्य, पाठ्योजना तैयार करना
- पाठ्योजना हेतु सहायक सामग्री का निर्माण।
- संस्कृत में किसी विषय पर व्यावहारिक संवाद।
- संस्कृत में किसी विषय पर निंबंध लेखन
- संस्कृत के व्यावहारिक शब्दों का संकलन (विद्यालय, घर, परिवेश पशु, पक्षी, फल शाकादि।

प्रश्न पत्र – चौदहवाँ

गणित शिक्षण

उद्देश्य–

- गणित की प्रकृति के बारे में समझना।
- विभिन्न गणितीय अवधारणाओं यथा भिन्न की संक्रियाएँ दशमलव, आँकड़ों का विश्लेषण, आयतन, धारिता, ऋणात्मक संख्याएँ इत्यादि के बारे में समझना।
- गणित व भाषा का संबंध, गणित सीखने में भाषा की भूमिका के बारे में समझना।
- कक्षा कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर समझ तथा एक अच्छी गतिविधि के गुणों को समझना।
- संभावना (प्रायिकता) के बारे में समझ।
- नई गतिविधियों का निर्माण करना।

गणित व गणित शिक्षण				
क्र	**पाठ / विषयवस्तु**		**कुल अंक 80 कालखण्ड 90**	
			अंक	कालखंण्ड
01	गणित की प्रकृति	• गणित का स्वरूप • गणित के तत्व • भाषा का विकास	12	13
02	भिन्नात्मक संख्याएँ	• भिन्न की संक्रियाएँ • भिन्नों में सूत्र विधि पर चर्चा	14	16
03	मापन की समझ	• मापन की समझ • समय का मापन	07	09
04	गणित सीखना–सिखाना व गतिविधियाँ	• गतिविधियों से सीखना • सीखने की प्रक्रिया पर विभिन्न विचार निरूपण	15	16
05	आँकड़ों का निष्कर्ष और संभावना	• आँकड़ों से निष्कर्ष निकालना कैसे सिखाएँ • संभावना के बारे में सीखना	10	12
06	संख्याओं का वृहद स्वरूप	• ऋणात्मक संख्याएं • अंकगणित से बीजगणित की ओर	15	16
07	वैदिक गणित व भारतीय गणितज्ञ	• वैदिक गणित व भारतीय गणितज्ञ	07	08

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. किसी कक्षा के विद्यार्थियों की ऊँचाई का आंकड़ा एकत्रित कीजिए व उसका विश्लेषण कीजिए।

2. भिन्न पर आधारित प्रश्न–पत्र बनाइए तथा बच्चों द्वारा दिये गये जवाबों का विश्लेषण कीजिए (क्या आता है? क्या नहीं आता है ? क्या सिखाने की जरूरत है ?)

3. गणित की किसी अवधारणा को तीनों मॉडलों (बैंकिग, प्रोग्रामिंग, रचनावाद मॉडल) की सहायता से समझाने के लिए किसी कक्षा की शिक्षण योजना का निर्माण।

4. दो गणितज्ञों का परिचय एवं उनकी उपलब्धियां के बारे में जानकारी संकलित करना।

5. भाग की संक्रिया में बच्चों को होने वाली कठिनाईयां (भिन्न–भिन्न प्रश्नों के संदर्भ में) एवं उनका विश्लेषण

6. संभावना के बारे में बच्चों की धारणा को जानने के लिए आंकड़े एकत्रित करें।

7. आप जिस बच्चे को पढ़ा रहे हैं, उसकी गणित पाठ्यपुस्तक के किसी अध्याय का भाषा की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।

संदर्भ–

- LMT खण्ड –1, इकाई –1, इकाई –2
- LMT खण्ड –2, इकाई –4, इकाई –5, इकाई –6, इकाई –7
- LMT खण्ड –3, इकाई –8, इकाई –9, इकाई –10
- LMT खण्ड –5, इकाई –14, इकाई –15
- LMT खण्ड –6, इकाई –17
- AMT खण्ड –2, इकाई –10
- AMT खण्ड –3, इकाई –9, इकाई –11
- AMT खण्ड –4, इकाई –14
- AMT खण्ड –5, इकाई –17
- NCERT class 6th Text book

प्रश्न पत्र – चौदहवाँ

विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य–

- प्रेक्षण, वर्गीकरण, मापन तथा संप्रेषण आदि प्रक्रियाओं के कौशलों का विकास।
- ज्ञान की प्राप्ति तथा समझ, समस्या समाधान, कौशल का विकास, अन्वेषण कौशल, तर्कपूर्ण ढंग से विचार करने की योग्यता एवं प्रयोगों के आधार पर निष्कर्ष निकालना।
- सामान्य सिद्धान्तों पर पहुंचने की योग्यता का विकास तथा दैनिक समस्याओं की हल करने के लिए ज्ञान का प्रयोग।
- विज्ञान तथा समाज के अर्न्तसम्बन्ध की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में सृजनात्मकता तथा विज्ञान में नवीनीकरण संबंधी प्रयोगों को करने की योग्यता का विकास।
- विज्ञान के द्वारा विद्यार्थी की जिज्ञासा, ईमानदारी, आत्म विश्वास एवं निर्णय लेने की योग्यता, जीवनमूल्यों की जांच करना, तार्किकता एवं विज्ञान संबंधी नैतिकता

विज्ञान एवं विज्ञान शिक्षण				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
01	विद्यालयीन परिप्रेक्ष्य में विज्ञान	• विज्ञान की प्रकृति • विज्ञान शिक्षा की वैधता • विज्ञान एवं समाज • विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य	12	12
02	विज्ञान शिक्षण की विधियॉ एवं कौशल विकास	• शिक्षण विधि की उपयोगिता • विज्ञान शिक्षण विधियाँ • अधिगम प्रक्रिया एवं विज्ञान शिक्षण की विधियाँ • अधिगम के कुछ आधारभूत कारक • शिक्षण विधियाँ • विज्ञान शिक्षण की तकनीकियाँ एवं कौशल विकास • विज्ञान शिक्षण में चयनशील प्रकृति	18	22
03	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं करके देखना	• शिक्षण अधिगम सामग्री से आशय • प्रमुख शिक्षण अधिगम सामग्री • अधिगम में प्रत्यक्ष अनुभव की भूमिका • विज्ञान में उच्च प्राथमिक स्तर के विषयवस्तु पर आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री के साथ – गतिविधियाँ – 1,2,3,4,5,6 • कबाड़ से जुगाड़	18	21

04	विज्ञान शिक्षण में योजना एवं प्रबंधन	• विज्ञान की पाठ्यचर्या • योजना एक दृष्टि • विज्ञान शिक्षक के गुण • विज्ञान शिक्षक के दायित्व और प्रकार्य • कक्षा–कक्ष में वैयक्तिक विभिन्नताओं की पहचान • विज्ञान की विभिन्न योजना / गतिविधि • परिशिष्ट	18	20
05	विज्ञान शिक्षण में आकलन एवं मूल्याँकन	• उद्देश्य • मूल्यांकन एवं आकलन की अवधारणा • विज्ञान में आकलन एवं मूल्यांकन • विज्ञान शिक्षण में कठिन बिन्दुओं की पहचान एवं अधिगम में मदद हेतु आकलन का उपयोग • संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं मनोगत्यात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन • ब्लू प्रिंट • क्रियात्मक अनुसंधान	14	15

आंतरिक मूल्याँकन	कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • Action Research - शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान आने वाली किसी एक समस्या पर कुल अंक – 10 • Project work - सैद्धांतिक नियम पर आधारित कुल अंक – 05 • Assignment - सैद्धांतिक विषय पर आधारित कुल अंक – 05	

संदर्भ :–

- NIOS की D.EL.ED. COURSE BOOK.
- IGNU की D.EL.ED. COURSE BOOK.
- Bloom B.S. (1956),Taxonorry of Educational Objectives Handbook, I Longmam
- मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन – डॉ.विपिन अस्थाना, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2, 2010 / 2011
- विज्ञान शिक्षण – डॉ.संजय गुप्ता,श्री विनोद पुस्तक मंदिर
- विज्ञान का अध्यापन – इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली Es-341 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों शिक्षा संस्थान उ.प्र.विज्ञान शिक्षण
- विज्ञान शिक्षण – शशिकिरण पांडे–वाणी प्रकाशन,21 A दरीयागंज
- विज्ञान शिक्षण– डॉ.श्रीमती प्रभा, डॉ.श्रीमती शोभा गोलवलकर, डॉ, श्रीमती निरूप्या शर्मा, श्रीमती शैलजा भारद्वाज, शारदा पुस्तक इलाहाबाद प्रथम संस्करण 01.2007
- जीव विज्ञान शिक्षण – डॉ.मुदित राठौर, अमिता सिंह, शिक्षा प्रकाशन जयपुर (2012),

- साधारण विज्ञान शिक्षण – डॉ.एस.के. मंगल,प्रकाशक आर्यबुक डिपो करोलबाग,नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण 1990
- जीव विज्ञान शिक्षण – डॉ.पी.के.माहेश्वरी,आर.लाल बुक डिपो,निकट राजकीय इंटर कॉलेज मेरठ,तृतीय संस्करण 2003
- विज्ञान शिक्षण – डी.एस.रावत
- David E. Hennessy ; Elementary Teachar's Classroom Science Demonstrations and Activities,Prenrice hall of Indian N.D.(1996)
- Huffmire,D.Wynent:Teacher Demonstrations Laboratoty Expriences and Projects,Science Edu.262(3) 49-264.(1965)
- विज्ञान शिक्षण – शशिकिरण पांडेय, वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002
- सहायक सामग्री निर्देशका–शैल कुमार पांडेय
- सामान्य विज्ञान शिक्षण – पी.स्क्वायर सॉल्यूशन्स।
- Theory in to Practice; Activity in school for Students Teacher, John Haysom, Clive Suttow, Me Graw-Hill Book Company(U.K.) Ltd. London.

प्रश्न पत्र – चौदहवाँ

सामाजिक विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य –

- उन तरीकों को पहचानना जिनके द्वारा राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दे उनके दैनिक जीवन को समय–समय पर प्रभावित करते हैं।
- अपने स्वयं के क्षेत्र से परिचित होना तथा विभिन्न प्रदेशों (स्थानीय से लेकर भूमंडलीय) की पारस्परिक निर्भरता को समझना।
- संसाधनों के स्थानीय वितरण तथा उनके संरक्षण को समझना।
- भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के ऐतिहासिक विकास को समझना, विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों से इतिहासकार अतीत का अध्ययन कैसे करते हैं? इसे समझना।
- एक स्थान/क्षेत्र के विकास का दूसरे से संबंध स्थापित करते हुए ऐतिहासिक विविधता को समझना।
- भारतीय संविधान के मूल्यों और दैनिक जीवन में उनके महत्व को आत्मसात करना।
- भारतीय लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं एवं संघीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर की प्रक्रियाओं के प्रति समझ विकसित करना।
- परिवार, बाजार और सरकार जैसी संस्थाओं की सामाजिक आर्थिक भूमिका से परिचित होना।
- राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण–प्रक्रियाओं में समाज के विभिन्न वर्गों के योगदान को पहचानना।

सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षण				
क्र.	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
1	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	• सामाजिक विज्ञान – विकास की संकल्पना (विकास का क्रम–पर्यावरण, सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान) • परिवार एवं समाज के प्रति बच्चे की समझ • समाज की तात्कालिक स्थिति – • सामाजिक विज्ञान के घटक – संस्कृति	13	13
2	विद्यालय पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	• औपनिवेशिक शक्ति – राष्ट्रवादी विकल्प. • स्वतन्त्रता पश्चात् सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या • सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में तात्कालिक राष्ट्रीय सोच। सोशल मीडिया – और फेक न्यूज 1. संचार माध्यमों को समझना 2. विज्ञापनों को समझना	13	13

3	इतिहास शिक्षण और इतिहास की समझ	• प्रारंभिक स्तर पर इतिहास की समझ • इतिहास अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	10	10
4	प्रारंभिक स्तर पर भूगोल शिक्षण और भूगोल की समझ	• प्रारंभिक स्तर पर भूगोल की समझ • भूगोल अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	10	10
5	राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन	• प्रारंभिक स्तर पर राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र की समझ • राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	08	10
6	अधिगमकर्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ	• अधिगमकर्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ बच्चों को संकल्पना की समझ • सामाजिक विज्ञान के ज्ञान की संरचना और कक्षा–कक्ष अर्न्तः क्रिया	07	09
7	शिक्षण अधिगम की रणनीतियाँ।	• 1. प्रजातांत्रिक व्यूह रचना – • विचार विमर्श या विवेचन, अन्वेषण, योजना, मस्तिष्क विप्लव, पात्र अभिनय, स्वतंत्र अध्ययन, संवेदनशील प्रशिक्षण, समाजीकृत अभिव्यक्ति	07	09
8	सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधन	• सामाजिक विज्ञान में – • अधिगम संसाधनों के प्रकार • अधिगम, संसाधनों का प्रबंधन • विद्यालय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन,	07	09
9	सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन	➢ मूल्यांकन किसका, क्यों और कैसे. मूल्यांकन का आधार,	05	07

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

इतिहास खण्ड –

1. अपने गाँव/नगर/शहर का इतिहास लिखिए।
2. सल्तनत काल से लेकर मुगल काल तक भारतीय जन जीवन का वर्णन कीजिए।

नागरिक शास्त्र –

1. अपने गाँव/नगर/शहर में कार्यरत स्व–सहायता समूह की सूची बनाइए तथा उनके कार्य से प्राप्त लाभ को सूचीबद्ध कीजिए।
2. अपने आस–पास हो रहे मीडिया के प्रभाव और दुष्प्रभाव को रेखांकित कीजिए।

भूगोल–

1. अपने गाँव/नगर/शहर का नजरी नक्शा बनाइए तथा महत्वपूर्ण स्थानों को संकेतों द्वारा प्रदर्शित कीजिए जैसे – तालाब, मंदिर, पक्की सड़क, कच्ची सड़क, विद्यालय इत्यादि।
2. अपने गाँव/नगर/शहर के आस–पास पर्यावरण प्रदूषण के कारणों का पता लगाइए।

संदर्भ :–

- सामाजिक विज्ञान शिक्षण – डॉ.के.सी.वशिष्ठ
- सामाजिक विज्ञान का शिक्षण शास्त्र – डॉ. मोहन लाल आर्य
- – डॉ. महेन्द्र प्रसाद पाण्डेय
- – भूपेन्द्र कौर
- – राजकुमारी गोला
- – क्रांति मोहन श्रीवास्तव

- छ.ग. में प्रचलित पाठ्यपुस्तक सामाजिक विज्ञान कक्षा – 10
- इतिहास शिक्षण – राम कुमार पचौरी
- राजनीति विज्ञान विश्वकोष– ओमप्रकाश
- राजनीति विज्ञान –एस.गुप्ता (नीलम पब्लिकेशन)
- भारतीय इतिहास 12वीं – एन.सी.ई.आर.टी.
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण – आचार्या मंजू शर्मा
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण – डॉ. एस.आर. शर्मा
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण – ओ.पी.गर्ग डॉ. संतोष शर्मा, लक्ष्मण
- राजनीति विज्ञान– अपेक्स सिंह देवल आई.ए.एस.एकेडमी
- एन.सी.ई.आर.टी.– रेडियो क्रार्यक्रम
- भारतीय अर्थव्यवस्था –रमेश सिंह
- भूगोल शिक्षण की आदर्श विधियाँ – कमलेश्वर वर्मा
- एन.सी.एफ.2005

व्यावहारिक मूल्यांकन – अ

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1

उद्देश्य–

- बच्चों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास में योगदान देना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को रोचक व तनाव रहित बनाना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में बच्चों को आनन्द उठाने में समर्थ बनाना।
- बच्चों को सौंदर्य की पूर्ण सराहना एवं अनुभव करने की ओर आकर्षित करना। बच्चों को प्रकृति के करीब लाना। नयी पीढ़ी को अपनी धरोहर, परम्पराओं से अवगत कराना।
- बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना।

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
			अंक	कालखण्ड
1	कला शिक्षा की अवधारणा एवं समझ	• क्षेत्रीय कला तथा शिल्प परिचय : शैक्षिक उपयोगिता। कला शिक्षण विधि के रूप में। • दृश्य व प्रदर्शन कला और शिल्पकारी के संदर्भ में कला एवं शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन। • नियमित रूप से किसी एक प्रसंग का बुलेटिन बोर्ड का प्रदर्शन। प्रसंग इस प्रकार हो सकते हैं – फिल्म, पुस्तकें, त्योहार, शिल्प, कलाकार, लेखक, स्थानीय कला व संस्कृति, कहानी, कविता, कार्टून आदि। • शाला अनुभव कार्यक्रमों के अंतर्गत कला, शिल्प, संस्कृति संबंधी, विविध प्रोजेक्ट। • कार्यशाला सजावट व शाला सौंदर्यीकरण।	5	6

2	कला समेकित शिक्षा एवं विद्यालय में शिक्षक	• कला समेकित शिक्षा की अवधारणात्मक समझ व शैक्षिक उपयोगिता। • विद्यालय की दैनिक गतिविधियॉ एवं विभिन्न विषयों के संदर्भ में कला शिक्षण को एकीकृत करना जैसे–कला और भाषा, कला एवं गणित, कला और पर्यावरण। • सीखने के संसाधन के रूप में शिल्प, हस्त शिल्प, संग्रहालय, ऐतिहासिक इमारतें, भवन, फिल्म, पुस्तकें, उत्सव, पर्यटन इन पर रिपोर्ट लेखन एवं समीक्षा।	5	6
3	दृश्य एवं प्रदर्शन कलाएँ	• दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सामग्री निर्माण : मिट्टी से सामग्री निर्माण, कबाड़ से जुगाड़, कठपुतली निर्माण, खिलौने, कॉलाज, मुखौटे बनाना, रंगोली, चित्रकारी, पेपर क्राफ्ट एवं अन्य स्थानीय शिल्प आदि। कला संबंधी कौशलों का विकास एवं शिक्षण में उपयोग।	5	6
4	दृश्य एवं प्रदर्शन कलाएँः छत्तीसगढ़ के संदर्भ मे	• गायन, वादन, नृत्य, रंगमंच एवं समकालीन प्रदर्शन कलाओं के विविध स्वरूपों को विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ना। • कला संबंधी विभिन्न स्थानों का भ्रमण एवं रिपोर्ट लेखन।	5	6

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- स्थानीय सामग्री से खिलौना एवं कलाकृति बनाना। (मिट्टी, बांस, घास आदि)।
- पेपर क्राफ्ट संबंधी प्रोजेक्ट।
- स्थानीय कलाओं की जानकारी एकत्र करना तथा उसके ऐतिहासिक संदर्भों को लिपिबद्ध करना।
- स्थानीय समस्याओं को नाटक एवं कला के अन्य रूपों द्वारा प्रस्तुत करना।
- कला कृतियों का स्थानीय कला व शिल्प के संदर्भ में निर्माण।
- विभिन्न कलाओं, शिल्पों एवं शिल्पकारों के स्थानीय संदर्भ में मानचित्रीकरण।
- कबाड़ से कलाकृतियों का निर्माण।
- संस्थान में कला संसाधन केन्द्र का निर्माण (जिसमें कला के विविध आयाम एवं नाटकों उपयोगी सामग्रियों का संकलन)

संदर्भ –

- पाठ्यचर्या नवीनीकरण के लिए शिक्षक–शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 (ड्राफ्ट)
- छत्तीसगढ़ समग्र, संस्करण – प्रथम 2013, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी एवं ग्रंथ अकादमी, पी–3, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर, रायपुर (छ0ग0)
- हस्तशिल्पों की धरोहर, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- कला से सीखना – जेन साही एवं रोशन साही, एकलव्य का प्रकाशन।
- प्राथमिक शाला में कारीगरी की शिक्षा – गिजुभाई, साक्षरता केन्द्र, नई दिल्ली।
- समेकित पाठ्यपुस्तक (गणित–पर्यावरण), कक्षा–5 भाग–2, 2014–15 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- शिक्षा का वाहन – कला – देवी प्रसाद, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया।
- कला व शिक्षा पर आधार पत्र – एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर।
- ''कबाड़ से जुगाड़'' – विष्णु चिचोंलकर
- ड्रामा विथ चिल्ड्रन – सारा फिलिप

व्यावहारिक मूल्यांकन – ब

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–1

उद्देश्य–

- उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखीजीवन की समग्र अवधारणात्मक समझ का विकास।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मध्य गुणात्मक संबंध की समझ का विकास करने में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करना।
- स्वच्छ पेय जल, संतुलित आहार एवं संपूर्ण परिवेशीय स्वच्छता की जानकारी देना।
- समाज के वंचित एवं उपेक्षित वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
- योग, व्यायाम एवं खेलकूद की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करना।

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–1				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
			अंक	कालखण्ड
1	बच्चों के स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन की समझ	• शरीर के विभिन्न अंगों की सफाई जैसे – आँख, नाक, कान मुँह, हाथ, नाखून एवं बालों की सफाई। • कपड़ों की सफाई एवं नित्य स्नान का महत्व।	04	04
2	विद्यालय के संदर्भ में बच्चों का स्वास्थ्य	• विद्यालयीन स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वास्थ्य परीक्षण, हेल्थ कार्ड एवं उपचार व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा का महत्व, आकस्मिक दुर्घटना, जलने, चोट लगने, डूबने आदि पर प्राथमिक उपचार। • विद्यालय के संदर्भ में स्वास्थ्य सुविधाओं का आकलन–क्लासरूम, पेयजल, स्वच्छता, शौचालय एवं खेल का मैदान। • मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम का उद्देश्य, मुख्य तत्व एवं क्रियान्वयन।	04	05
3	सामुदायिक स्वास्थ्य एवं उपभोक्ता जागरूकता	• जल संरक्षण एवं रखरखाव, जल प्रदूषण एवं उससे होने वाली बीमारियाँ। • सार्वजनिक स्वच्छता, स्वच्छ भारत अभियान, खुले में शौच के दुष्प्रभाव।	04	05
4	समावेशी शिक्षा	• गरीबी, असमानता और स्वास्थ्य के मध्य अंतर्संबंधों की समझ।	04	05
5	योग, व्यायाम एवं खेल गतिविधियों का स्वास्थ्य से संबंध	• योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम की प्राथमिक स्तर की गतिविधियाँ। • शारीरिक शिक्षा के आधार पर मूल्यों का विकास–सहयोग एवं समन्वय, समूह भावना, भावात्मक स्थिरता एवं सृजनात्मकता। • शारीरिक शिक्षा की अवधारणा एवं महत्व, प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए शारीरिक शिक्षा की प्रमुख गतिविधियाँ, प्रचलित स्थानीय खेल।	04	05

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- कक्षा में लगातार अनुपस्थित बच्चें के सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक कारणों का पता लगाना एवं नियमित उपस्थिति के लिए प्रेरक प्रयास करना।
- स्थानीय उपलब्धता के आधार पर घरेलू एवं प्राकृतिक चिकित्सा के उपायों की जानकारी एकत्रित करना।
- समुदाय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- अस्वच्छता के कारण बच्चों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन।
- स्थानीय स्तर पर जल स्त्रोतों की जानकारी जल प्रदूषण एवं उनसे स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों का दस्तावेजीकरण

संदर्भ –

- स्वास्थ्य शिक्षा – इग्नू एन.सी.ई.आर.टी. सहयोगात्मक परियोजना नई दिल्ली
- विकलांग स्वस्थ व आत्मनिर्भर कैसे बने – विनोद कुमार मिश्र, कल्याणी शिक्षा परिषद् दरियागंज, नई दिल्ली
- योग (कक्षा 6 से 8) शिक्षा – भाग–2, एन.सी.ई.आर.टी रायपुर
- विद्यालय स्वास्थ शिक्षा – सरयू प्रसाद चौबे अखिलेश चौबे, मयुर पेपर बैक्स ए–95, सेक्टर–5 नोएडा
- स्थानीय लोक खेल – चन्द्रशेखर चकोर, बरछाबारी
- प्रमुख खेल नियम – हरिसिंह अहलावत, बी.आर.पब्लियर्स जयपुर–01
- स्वास्थय एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1 – डा. एच.एल.खत्री, पैरागॉन इन्टरनेशनल पब्लियर्स नई दिल्ली
- जीवन कौशल शिक्षा – श्रीमती समता शेखावत, दिशा पब्लिकेशन जयपुर
- मूल्य एवं नैतिक शिक्षा – श्रेनु चौधरी, अपोलो प्रकाशन, पिंक सीटी मार्केट पंचवटी राजापार्क जयपुर

व्यावहारिक मूल्यांकन – स

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1

उद्देश्य–

- कार्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को समझना।
- कार्य शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य तथा विषय क्षेत्र को समझना।
- शिक्षक शिक्षा में कार्य शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व को पहचानना, विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों में से सीखने की गतिविधियों को खोजना तथा उनका आयोजन करना।
- अधिगम सामग्री के महत्व को समझना तथा स्वनिर्मित अधिगम सामग्री का उपयुक्त परिस्थितियों में उपयोग करना
- कार्य शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों की पहचान करना तथा आवश्यक गतिविधियों से जुड़ना।
- शिक्षा में कार्य शिक्षा की आवश्यकता, संकल्पना और प्रकृति को समझना।
- कार्य शिक्षा को अन्य विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत कर पाना।
- श्रम तथा श्रमिक के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास ।
- कार्य को बच्चे के शारीरिक, मानसिक सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के उपकरण के रूप में उपयोग करने के कौशल का विकास।
- कार्य शिक्षा के लिए समुदाय के संसाधनों को पहचानना और संगठित करना।

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1			
पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
विषय प्रवेश	• कार्य का अर्थ • शिक्षा में कार्य	अंक	कालखण्ड
		04	04

कार्य शिक्षा का क्रियान्वयन (सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू)	• कार्य शिक्षा का पाठ्यक्रम • छात्रों के समूह बनाना • विभिन्न कक्षाओं के लिए कार्य शिक्षा की योजना • प्रारंभिक कक्षाओं के लिए सामग्री का चयन और समन्वयन से संबंधित कार्य शिक्षा • सामग्री और उपकरणों का भंडारण • पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों का अनुभव और एकीकृत करने के तरीके • कार्य शिक्षा से संबंधित शिक्षण अधिगम गतिविधियों के तरीके • कार्य शिक्षा में गतिविधियों का चयन करने के लिए मापदंड और आधार	06	07
शाला एवं समुदाय में कार्य शिक्षा	• उद्देश्य • कार्य शिक्षा के संदर्भ में समुदाय की भूमिका • कार्य शिक्षा को लागू करने के लिए सामुदायिक संसाधनों की पहचान और उपयोग • कार्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में समुदाय का उन्मुखीकरण एवं मार्गदर्शन	04	06
कार्य शिक्षा में मूल्यांकन	• उद्देश्य • मूल्यांकन क्या है ? • मूल्यांकन के उपकरण एवं विधियाँ • मूल्यांकन में सहपाठियों की भूमिका • मूल्यांकन में पालकों की भूमिका • विद्यार्थियों की प्रगति रिपोर्ट पर पालकों से संवाद	06	07

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- माचिस की तीलियों से गुड़िया बनाना
- रबर के खिलौने बनाना
- माचिस के बक्से से वाहन बनाना
- कार्ड बोर्ड से मुखौटे बनाना
- नारियल जूट से आकृतियाँ बनाना
- कागज के बैग बनाना
- कागज तथा कपड़े के फूल बनाना
- मोमबत्ती बनाना
- बोनसाई तैयार करना
- ग्रीटिंग कार्ड्स बनाना
- फ्लावरपॉट बनाना/सजाना
- अनुपयोगी सामग्री से फोटोफ्रेम आदि बनाना
- मॉडल बनाना
- पेपर मेशी से मूर्तियाँ बनाना
- घरेलू उपकरणों का रखरखाव
- शाला में बागवानी
- खाद्य प्रसंस्करण

संदर्भ –

- Work Education in Schools, CBSE, Delhi
- Elementary Teacher Education Curriculum
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE- 1986)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF – 2000)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF - 2005)
- राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF - 2007)
- कार्यक्रम निर्देशिका 'सेवारत अप्रशिक्षित' अध्यापकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा।
- कार्यानुभव शिक्षण – मंजू शर्मा, शंकर सिंह नाथावत।
- कार्यशिक्षा डॉ. मुनेष कुमार।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य।
- कार्य अनुभव का शिक्षण डॉ. मुनेष कुमार।
- शिक्षा की बुनियाद – अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी।

व्यावहारिक मूल्यांकन – द

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–1

उद्देश्य :–

- छात्राध्यापकों में सहशैक्षिक गतिविधि के रूप में कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि का निर्माण करना।
- छात्राध्यापकों में प्रयोगों जैसे– Constructive and creative approach की अवधारणा को विकसित करना।
- सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा शिक्षा में सुधार लाना।
- छात्राध्यापकों में सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल का विकास करना।
- छात्राध्यापकों में वैश्विक स्तर अनुसार तकनीकी के आधार पर व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–1			
पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
		अंक	कालखण्ड
कम्प्यूटर का परिचय	कम्प्यूटर का परिचय, कम्प्यूटर के उपयोग, कम्प्यूटर के प्रमुख भाग, हार्ड डिस्क, सी.डी. / डी.वी.डी. पेन ड्राइव, प्रिंटर, स्पीकर, आपरेटिंग सिस्टम का सामान्य परिचय।	03	04
वर्ड प्रोसेसर एवं स्प्रेडशीट	वर्ड को प्रारंभ करना, नया डाक्यूमेंट बनाना एव सेव करना, पहले से सेव किये गये डाक्यूमेंट को खोलना, लेटर लिखना, टेक्सट / कॉपी / डिलीट / बोल्ड / अंडरलाइन / इटालिक करना, फोंट बदलना, अनडू करना, साधारण टेबल बनाना। स्प्रेडशीट, स्प्रेडशीट की विशेषतायें, स्प्रेडशीट को प्रारंभ करना, संख्या की फार्मेटिंग करना, सेल को कॉपी / पेस्ट करना, फॉन्ट बदलना, शार्ट आउट करना, रो इंसर्ट करना, कालम इंसर्ट करना, रो / सेल डिलीट करना।	03	04
प्रजेंटेशन	प्रेजेंटेशन को प्रारम्भ करना, नया प्रेजेंटेशन बनाना, डिज़ाइन टेम्पलेट उपयोग करना, बुलेट एवं नंबरिंग, नया स्लाइड जोड़ना, स्लाइड डिलीट करना, बीच में स्लाइड जोड़ना, स्लाइड में इमेज का उपयोग करना, प्रजेंटेशन विविध तरीके से प्रिंट करना।	04	05
इन्टरनेट, ई–मेल एवं विविध	इंटरनेट का संक्षिप्त परिचय, इंटरनेट ब्राउज करना। इंटरनेट एक शैक्षिक उपकरण के रूप में, इंटरनेट का उपयोग दैनिक जीवन में (न्यूज पेपर, रेल्वे टाइमटेबल आदि.....), ई–मेल आईडी बनाना(याहू एवं जी–मेल), ई–मेल में अटैचमेंट भेजना एवं ई–मेल से अटैचमेंट डाउनलोड करना।	05	06

डिजिटल भुगतान प्रणाली	इंटरनेट बैंकिग, वालेट भुगतान प्रणाली (एस.बी.आई. बडी, एस.बी.आई. पे., भीम एप) डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड से भुगतान की प्रणाली, USSD द्वारा भुगतान की प्रक्रिया, ऑनलाइन/वॉलेट/डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड के द्वारा भुगतान से संबंधित समस्याओं का निराकरण।	05	05

कम्प्यूटर के आंतरिक मूल्यांकन हेतु दिशा निर्देश :–

कम्प्यूटर की प्रायोगिक परीक्षा के अंक निम्नानुसार निर्धारित हैं :

1. प्रायोगिक कार्यों का अभिलेख — 08 अंक
2. बाह्य परीक्षक द्वारा आबंटित कोई तीन प्रायोगिक कार्य — 08 अंक
3. बाह्य परीक्षक द्वारा लिया गया मौखिक परीक्षा — 04 अंक

पूर्णांक — 20 अंक

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- एक कम्प्यूटर का स्वच्छ नामांकित चित्र बनाइये एवं सभी प्रमुख भागों का वर्णन कीजिये।
- वर्ड प्रोसेसर को प्रारम्भ करने, नया फाइल बनाने एवं उसे सेव करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- वर्ड प्रोसेसर के अंतर्गत किसी टेक्सट को सेलेक्ट/कापी/डिलिट/अनडू करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- प्रजेंटेशन के प्रारंभ करने, नया फाइल बनाने एवं उसे सेव करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- प्रजेंटेशन के अंतर्गत अलग–अलग डिजाइन टेम्पलेट का उपयोग करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- स्पेडशीट में डी.एड. की माक्रशीट बनाने की प्रक्रिया लिखिये।
- स्प्रेडशीट में रो/कालम इंसर्ट करने, रो/सेल डिलीट करने/वक्रशीट इंसर्ट करने, डिलीट करने की प्रक्रिया लिखिये।
- गूगल में ई–मेल आईडी बनाने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- ई–मेल में किसी फाइल को अटैच करने एवं डाउनलोड करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- रेल्वे की आधिकारिक वेबसाईट "http://www.irctc.co.in" में प्रमुख ट्रेनों में रिजर्वेशन की स्थिति पता लगाने की प्रक्रिया लिखिये। (युजर नेम एवं पासवर्ड डी.एड. छात्रों को उपलब्ध कराया जायेगा।)
- ऑनलाइन बैंक एकाऊण्ट खोलने की प्रक्रिया का वर्णन करना।
- किसी एक मोबाईल एप से भुगतान करने की विधि का वर्णन करना।
- ऑनलाइन बैंकिग, वालेट, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, में अन्तर का वर्णन कीजिए।

संदर्भ –

1. How computer work - Que 10th edition
2. PCs for dummies - Dan Gookin 3rd edition
3. Hardware bible - Que 6th edition
4. Building the Perfect PC - o' Reilly 3rd edition
5. Microsoft word made easy- Rob Hawkins 2017 edition
6. Microsoft word 2007 for dummies - Dan Gookin
7. Microsoft office 2016 for dummies - peter weverka
8. Discovering computer and ms office - Shelly Cashman series 2016
9. डिजिटल कम्प्यूटर इलेक्ट्रानिक्स – गौरव शर्मा।
10. माइक्रोसॉफ्ट 2010 हिंदी संस्करण।
11. Computer Fundamentals - Architecture organization, Ram, B 4th edition

व्यावहारिक मूल्यांकन – अ

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–2

उद्देश्य–

- बच्चों के व्यक्तित्व के चहुमुखी विकास में योगदान देना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को रोचक व तनाव रहित बनाना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में बच्चों को आनन्द उठाने में समर्थ बनाना।
- बच्चों को सौंदर्य की पूर्ण सराहना एवं अनुभव करने की ओर आकर्षित करना। बच्चों को प्रकृति के करीब लाना। नयी पीढ़ी को अपनी धरोहर, परम्पराओं से अवगत कराना।
- बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना।

कला शिक्षा व लोक संस्कृति भाग–2			
पाठ / विषयवस्तु			कुल अंक 20 कालखण्ड 21
		अंक	कालखण्ड
1	• प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला एवं कला शिक्षा • कला शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा	05	04
2	• कला एवं संस्कृति : अवधारणा, समझ एवं महत्व	05	05
3	• कला का इतिहास : भारतीय एवं वैश्विक कला के सन्दर्भ में • चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, गीत संगीत, रंगमंच	05	06
4	• प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला शिक्षण की योजना, आकलन व मूल्यांकन	05	06

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- निम्नांकित भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की सूची को भारत के मानचित्र में राज्यों के आधार पर अंकित कर इनका संक्षिप्त विवरण एकत्रित करना।

  1. कत्थक 2. कथकली 3. भरतनाट्यम 4. कुचीपुड़ी 5. ओडिसी

- विभिन्न विषयों के शिक्षण में नाटक का समावेश कैसे करेंगे, ताकि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया आनन्दायी हो सके। किसी एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करना।
- अपनी संस्था या स्कूल में कला मड़ई का आयोजन समुदाय के साथ मिलकर करना।
- राज्य में प्रचलित दंतकथाओं/मान्यताओं के अतंर्गत त्यौहारों, अवसरों/प्रसंगों पर बनाये जाने वाले लोक चित्रों का अंकन या संकलन कर बुलेटिन बोर्ड में प्रदर्शन करना।
- नियमित रूप से बुलेटिन बोर्ड में कला संबंधित समाचार लिखना।
- समुदाय में निहित लोक कथाओं का संकलन कर सीखने सिखाने की प्रक्रिया में इनका उपयोग करना।
- डाइट और स्कूलों में कला संसाधन केन्द्र (कोना) का विकास बच्चों, शिक्षकों व समुदाय के सहयोग से करना।
- विभिन्न राज्यों के ऐतिहासिक इमारतों के चित्रों का संग्रह कर स्क्रैब बुक का निर्माण करना।
- मूल्यांकन और परीक्षा में आपके हिसाब से क्या अंतर है? कक्षा शिक्षण में आप इनको कैसे सम्मिलित करेंगे?
- किसी एक कला विधा को कक्षा में बच्चे कैसे सीख रहे हैं, किन्ही दो बच्चों का अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार करना।

संदर्भ :–

- शिक्षा का वाहन कला – देवी प्रसाद ,नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- हस्तशिल्पों की धरोहर– राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- डिप्लोमा इन एजुकेशन, प्रथम वर्ष 2013 हेतु कला एवं कला शिक्षण, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर छ.ग.।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- प्राथमिक शाला में कारीगरी की शिक्षा – गिजुभाई, साक्षरता केन्द्र, दिल्ली।
- नाट्यशास्त्र – पं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
- Source book on assessment for Class I-V, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- डिप्लोमा इन ऐलीमेन्ट्री एजुकेशन (दूरस्थ शिक्षा) स्वाध्यायी सामग्री, कला शिक्षा 2 राज्य शिक्षा शोध एवं शिक्षक परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी. पटना (बिहार)।
- सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण , विषय – कला शिक्षण, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राजस्थान, राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर।

व्यावहारिक मूल्यांकन – ब

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–2

उद्देश्य–

- उत्तम स्वास्थ्य की समग्र अवधारणात्मक समझ का विकास।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मध्य गुणात्मक संबंध की समझ का विकास करने में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करना।
- स्वच्छ पेय जल, संतुलित आहार एवं संपूर्ण परिवेशीय स्वच्छता की जानकारी देना।
- समाज के वंचित एवं उपेक्षित वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
- योग, व्यायाम एवं खेलकूद की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करना।

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावत्मक शिक्षा भाग–2				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
			अंक	कालखण्ड
1	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा	• बच्चों में शारीरिक, भावनात्मक, सवेगात्मक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य का निवास • अच्छी आदतों का विकास एवं समय प्रबंधन जैसे जल्दी जागना, जल्दी सोना, समय पर भोजन तथा समय पर अध्ययन करना। • स्वास्थ्य एवं शिक्षा के बीच, शिक्षा की पूर्व अपेक्षा के रूप में स्वास्थ्य और शिक्षा के लक्ष्य के रूप में स्वास्थ	05	05
2	विद्यालय में स्वास्थ शिक्षा कार्यक्रंम	• विद्यालय में विद्यार्थी की सुरक्षा सावधानियाँ एवं प्रतिरोधक उपाय तथा प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा • भोजन के पोषक तत्व संतुलित एवं स्वास्थ्यवर्धक आहारऔर कुपोषण की समस्या, निवारण, मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम • रेडक्रास, स्काऊट गाइड की कार्यशैली का परिचय	05	05
3	आवश्यक सामुदायिक स्वास्थ्य	• सामुदायिक स्वास्थ्य का अर्थ, स्वच्छ परिवेश की विशेषताएँ • वृध्दों, बीमारों तथा दिव्यांगजनों की देखभाल, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्थानीय प्रशासन की भूमिका • बाजारों में बिकने वाली खुली एवं डिब्बा बंद खाद्य पदार्थो के दुष्प्रभाव की जानकारी	05	05
4	व्यायाम, योग एवं स्थानीय खेल	• उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए शारीरिक शिक्षा की अवधारणा तथा योग की प्रमुख गतिविधियाँ • स्थानीय खेल तथा प्रमुख खेलों की जानकारी तथा मैदानों का चिन्हीकरण • शारीरिक शिक्षा में खेलों का अध्ययन विधियाँ	05	06

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- स्वास्थ्य, मनुष्य की सबसे अमूल्य संपत्ति है,को दर्शाते हुए स्वास्थ्य के विभिन्न पक्षों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
- मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए सुखमय जीवन हेतु अपने विचारों को परिभाषित कीजिए।
- मध्याहन भोजन कार्यक्रम से विधार्थियों के सामाजिक,धार्मिक,नैतिक मूल्यों का विकास होने के कारणों का उल्लेख कीजिए।
- विद्यालय में रेडक्रास और स्काउट–गाइड के शिक्षण एवं प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में होने वाले गुणवत्ता पर प्रकाश डालिए।
- डिब्बा बंद खाद्य सामग्री के सेवन के पूर्व उत्तम स्वास्थ्य हेतु सावधानियों का उल्लेख कीजिए।
- विद्यार्थियों को विद्यालय में स्वच्छ वातावरण एवं उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाले तथ्यों का उल्लेख कीजिए।
- परिवार में वृद्व एवं बीमार सदस्यों के देखभाल एवं उपचार के नैतिक कर्त्तव्यों की आवश्यकता है, पर प्रकाश डालिए।
- योग को विद्यालय में प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों के दिये गये सुझाव का अवलोकन कर क्रियान्वित कीजिए।
- विद्यालय में प्रमुख एवं स्थानीय खेलों का अभ्यास कराकर, वार्षिक प्रतियोगिता आयोजित करें, तथा किये गये खेलों को सूचीबद्ध करते हुए परिणाम को पंजीबद्ध कीजिए।

संदर्भ –

- स्वास्थ्य शिक्षा – इग्नू एन.सी.ई.आर.टी.सहयोगात्मक परियोजना नईदिल्ली
- विकलांग स्वस्थ व आत्मनिर्भर कैसे बने – विनोद कुमार मिश्र, कल्याणी शिक्षा परिषद् दरियागंज, नई दिल्ली
- योग(कक्षा 6 से 8) शिक्षा – भाग–2, एन.सी.ई.आर.टी रायपुर
- विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा – सरयू प्रसाद चौबे, अखिलेश चौबे, मयुर पेपर बैक्स ए–95, सेक्टर–5 नोएडा
- स्थानीय लोक खेल बरछाबारी –चन्द्रशेखर चकोर,
- प्रमुख खेल नियम – हरिसिंह अहलावत, बी.आर.पब्लियर्स जयपुर–01
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1 – डा. एच.एल.खत्री, पैरागॉन इन्टरनेशनल पब्लिसर्स नई दिल्ली
- जीवन कौशल शिक्षा – श्रीमती समता शेखावत, दिशा पब्लिकेशन जयपुर
- मूल्य एवं नैतिक शिक्षा – रेनु चौधरी, अपोलो प्रकाशन, पिंक सिटी मार्केट पंचवटी राजापार्क जयपुर

व्यावहारिक मूल्यांकन – स

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2

उद्देश्य–

- कार्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को समझना।
- कार्य शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य तथा विषय क्षेत्र को समझना।
- अधिगम सामग्री के महत्व को समझना तथा स्वनिर्मित अधिगम सामग्री का उपयुक्त परिस्थितियों में उपयोग करना ।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त गतिविधियों की योजना बनाना तथा उनका आयोजन करना।
- कार्य शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों की पहचान करना तथा आवश्यक गतिविधियों से जुड़ना।
- शिक्षा में कार्य शिक्षा की आवश्यकता, संकल्पना और प्रकृति को समझना।
- कार्य शिक्षा को अन्य विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत कर पाना।
- श्रम तथा श्रमिक के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास।
- कार्य को बच्चे के शारीरिक, मानसिक सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के उपकरण के रूप में उपयोग करने के कौशल का विकास।
- कार्य शिक्षा के लिए समुदाय के संसाधनों को पहचानना और संगठित करना।

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20	कालखण्ड 21
			अंक	कालखण्ड
1	कार्य शिक्षा परिप्रेक्ष्य	• सीखने के उद्देश्य • ऐतिहासिक परिदृश्य • कार्य शिक्षा के उद्देश्य	10	04
2	कार्य शिक्षा एवं शिक्षण कौशल	• सीखने के उद्देश्य • कार्य शिक्षा एवं शिक्षण कौशल	10	05
3	कार्य शिक्षा के क्षेत्र	• सीखने के उद्देश्य • कार्य शिक्षा के क्षेत्र • प्रायोगिक कार्य	20	12

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. गांधी जी की बुनियादी शिक्षा का सिद्वांत आज भी प्रासंगिक है इसे परिवेश के उदाहरण द्वारा समझाइए।
2. व्यक्ति एक साथ शारीरिक श्रम और अकादमिक चिंतन करता है उदाहरण सहित समझाइए।
3. कक्षा 5 वीं गणित की किसी एक अवधारणा को कार्यशिक्षा से जोड़कर एक गतिविधि का निर्माण कीजिए।
4. विज्ञान के ऐसे 5 सिद्धांतों की सूची बनाएं जिन्हें कार्य शिक्षा के माध्यम से समझाया जा सकता है।
5. कक्षा 7 सामाजिक विज्ञान विषय में कार्य शिक्षा को शामिल करने हेतु गतिविधि की योजना बनाएं। इस गतिविधि से शिक्षक के किन–किन शिक्षण कौशलों का विकास हुआ?

कुछ सुझावात्मक कार्य

क. समाज सेवा एवं उत्पादक कार्य– जैसे मोमबत्ती (कैंडल), डिटरजेंट पाउडर, बर्तन साफ करने का पाउडर बनाना आदि।

ख. खाद्य एवं कृषि–जैसे कच्चे आम का स्क्वैश, अन्नानास का गीला मुरब्बा, मिश्रित सब्जियों का अचार बनाना, विद्यालय में हर्बल गार्डन का निर्माण आदि।

ग. वस्त्र–जैसे बुटिक, बंधेज आदि बनाना।

घ. संस्कृति तथा मनोरंजन–जैसे मधुबनी पेंटिंग, भित्ती चित्र आदि बनाना।

ड. घरेलू विद्युत उपकरण मरम्मत–जैसे विद्युत वायरिंग, स्विच बोर्ड लगाना आदि।

च. सूचना प्रौद्योगिकी–जैसे लघु फिल्म निर्माण आदि।

छ. परम्परागत व्यवसाय–जैसे छींद के पत्तों का आसन, छींद की पत्तियों का फूल झाड़ू , चिकनी मिट्टी के खिलौने आदि बनाना।

संदर्भ –

- Work Education in Schools, CBSE, Delhi
- Elementary Teacher Education Curriculum
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE- 1986)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF – 2000)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF - 2005)
- राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF - 2007)
- कार्यक्रम निर्देशिका 'सेवारत अप्रशिक्षित' अध्यापकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा।
- कार्यानुभव शिक्षण – मंजू शर्मा, ांकर सिंह नाथावत।
- कार्यशिक्षा डॉ. मुनेष कुमार।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य।
- कार्य अनुभव का शिक्षण डॉ. मुनेष कुमार।
- शिक्षा की बुनियाद – अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी।

व्यावहारिक मूल्यांकन – द

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2

उद्देश्य :–

- छात्राध्यापकों में सहशैक्षिक गतिविधि के रूप में कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि का निर्माण करना।
- छात्राध्यापकों में प्रयोगों जैसे– Constructive and creative approach की अवधारणा को विकसित करना।
- सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा शिक्षा में सुधार लाना।
- छात्राध्यापकों में सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल का विकास करना।
- छात्राध्यापकों में वैश्विक स्तर अनुसार तकनीकी के आधार पर व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
			अंक	कालखण्ड
1	हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर का परिचय	कम्प्यूटर के विभिन्न भागों (हार्ड डिस्क, रेम मदरबोर्ड, बैटरी, एसएमपीएस, फैन, सी.डी./डी.वी.डी, की पहचान करना तथा इनके कनेक्शन को समझना। आपरेटिंग सिस्टम, साफ्टवेयर एप्लीकेशन एवं एंटीवायरस को इंस्टाल करने की विधि का सैधांतिक परिचय।	04	04
2	शैक्षिक उपकरण के रूप में इन्टरनेट का उपयोग	OER (Open Educational Resorces) वेबसाइट का परिचय OER में शैक्षिक सामग्री सर्च करना, डाउनलोड करना एवं उपयोग करना, teacher tube, youtube, Wi-Fi का उपयोग करना। राज्य, राष्ट्र एवं अंर्तराष्ट्रीय शैक्षिक संस्थानों के वेबसाइट से सामग्री प्राप्त करना। इन्टरनेट पर कार्य करते समय सुरक्षा सावधानियां।	04	04
3	वर्ड प्रोसेसर एवं प्रेजेन्टेशन का उन्नत उपयोग	वर्ड प्रोसेसर में टेबल के विभिन्न अवयवों का अध्ययन ,मेल मर्ज, स्पेलिंग एवं ग्रामर, आटोटेक्स्ट, आटो करेक्ट ,वर्ड का उपयोग। प्रेजेन्टेशन में चित्रों, ऑडियो, विडियो एवं हाइपरलिंक का उपयोग करना। प्रेजेन्टेशन का ले–आऊट एवं कलर स्कीम बदलना, स्लाइड शो का उपयोग करना।	04	04

4	डाटा विश्लेषण में स्प्रेडशीट का उपयोग	स्प्रेडशीट में गणितीय, तार्किक एवं सांख्यिकीय फार्मूला का उपयोग करना, कॉलम के आधार पर डाटा सॉर्ट करना, फिल्टर, पिवोट टेबल, सब टोटल, रो एवं कॉलम को रोटेट करना, पेस्ट स्पेशल का उपयोग।	04	04
5	विविध	हिंदी फॉन्ट (युनीकोड एवं अन्य), गूगल इंडिक का उपयोग, गूगल ड्राइव, डिजिटल लॉकर, सोशल मीडिया MOOC and CMS का परिचय। ऑन लाइन कार्य करने हेतु महत्वपूर्ण जानकारियां।	04	05

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- किसी एक OER के वेबसाइट का वर्णन कीजिए।
- इन्टरनेट पर कार्य करते समय क्या सुरक्षा सावधानियाँ रखनी चाहिए।
- एन्टीवायरस क्या है एवं क्यों आवश्यक हैं किसी तीन एन्टीवायरस के नाम लिखिए।
- वर्ड प्रोसेसर में मेल मर्ज करने की विधि का वर्णन कीजिए।
- प्रजेन्टेशन में आडियो एवं विडियो का हाइपरलिंक बनाने की विधि वर्णन कीजिए।
- पिवोट टेबल को उदाहरण सहित समझाइयें।
- गणितीय,तार्किक एंव सांख्यिकी से समबंधित दो–दो फार्मूला का वर्णन कीजिए।
- गूगल ड्राइव क्या है इसके उपयोग पर टिप्पणी लिखिए।
- MOOC एवं CMS पर टिप्पणी लिखिए।
- डिजिटल लॉकर पर टिप्पणी लिखिए।

संदर्भ –

- How computer work - Que 10th edition
- PCs for dummies - Dan Gookin 3rd edition
- Hardware bible - Que 6th edition
- Building the Perfect PC - o' Reilly 3rd edition
- Microsoft word made easy- Rob Hawkins 2017 edition
- Microsoft word 2007 for dummies - Dan Gookin
- Microsoft office 2016 for dummies - peter weverka
- Discovering computer and ms office - Shelly Cashman series 2016
- डिजिटल कम्प्यूटर इलेक्ट्रानिक्स – गौरव शर्मा।
- माइक्रोसॉफ्ट 2010 हिंदी संस्करण।
- Computer Fundamentals - Architecture organization, Ram, B 4th edition

मार्गदर्शिका

शाला अवलोकन कार्यक्रम (प्रथम वर्ष)

1. भूमिकाः—

विभिन्न पेशेवर कार्यक्रम की तरह शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भी पेशेवर दक्षता और कौशल प्रदान करने हेतु स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (School Internship Program) को रखा गया है, ताकि भावी शिक्षकों में स्कूल शिक्षा और शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित किया जा सके। शाला अनुभव/शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों में शिक्षण एवं शिक्षा के संबंध में पेशेवर समझ दक्षता, कौशल एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु शिक्षण प्रशिक्षण संस्था के लैब स्कूल में भेजा जाता है। इस कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापक विभिन्न स्कूलों में जा कर शिक्षण कार्य का अनुभव लेते है एवं शिक्षण कला में प्रायोगिक तौर पर प्रशिक्षण प्राप्त करते है। वर्तमान शिक्षा में स्वाध्याय, स्वज्ञान एवं ज्ञान निर्माण (constructism) उपागम पर आधारित है, जिसमें छात्र केन्द्रित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जाता है। शाला अनुभव कार्यक्रम भावी शिक्षकों को शैक्षिक सिद्धांत और शैक्षिक अवधारणाओं को जोड़ने के लिए, सैद्धांतिक प्रस्तावों की वैधता का परीक्षण करने के लिए वास्तविक विद्यालय में अभ्यास करने हेतु एक अवसर प्रदान करता है।

स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (School Internship Program) का उद्देश्य केवल एक विषय के पाठों की, पाठ योजना बना कर प्रदर्शन के लिए नहीं होना चाहिए अपितु इसमें छात्राध्यापकों को सम्पूर्ण शाला के साथ कार्य करके उसके विभिन्न पहलुओं यथाः बच्चे, कक्षा, कक्षाकक्ष प्रक्रिया बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम आदि को समझने का अवसर मिलना चाहिए।

2. स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम *(School Internship Program)* **से आशय एवं स्वरूप :—**

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के विचार को साकार रूप देने के लिए ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम एवं अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जो शिक्षकों में बच्चों की समझ, शिक्षा की समझ, समस्याओं को पहचानने तथा विभिन्न समकालीन चुनौतियों पर चिंतन कर उन पर विजय प्राप्त कर सकने में मदद कर सके। डी.एल.एड. नवीन पाठ्यक्रम में छात्राध्यापकों की समझ एवं आवश्यक क्षमताओं को इसी दिशा में विकसित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों की आवश्यकता नवीनतम् शिक्षा सिद्धांतों एवं बहुआयामी विकास कार्यक्रमों की समझ बढ़ाने हेतु प्रयोग एवं अभ्यास के अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। समझ की स्पष्टता के लिए छात्राध्यापक विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों में एक पूर्णकालिक शिक्षक की भाँति शिक्षण अनुभव प्राप्त करेंगे।

द्विवर्षीय डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत् शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों तथा शिक्षण कार्य को स्कूल के परिवेश

व सीखने–सिखाने की परिस्थितियों को एक दूसरे की पृष्ठभूमि में समझा जाएगा। इसीलिए इस कार्यक्रम को दो चरणों में किया जाना है जिसमें प्रथम वर्ष में नियमित रूप से पढाना नही है अपितु प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों का सूक्ष्म अवलोकन एवं बच्चों, शिक्षकों, पालकों व समुदाय के साथ चर्चा व अंतः क्रिया कर विद्यालयीन परिवेश, सीखने–सिखाने की परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया जावेगा। यह कार्य प्रथम वर्ष में 24 कार्यदिवसों (लगभग 4 सप्ताह) में **शाला अवलोकन** के रूप में संपन्न किया जावेगा, द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह का **शालानुभव कार्यक्रम** संपन्न होगा। जिसमें छात्राध्यापकों को नियमित रूप से प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में कार्य करना होगा।

एन.सी.टी.ई. के द्वारा दिए गए सिद्धांत आधारित शाला स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम इस प्रकार है–

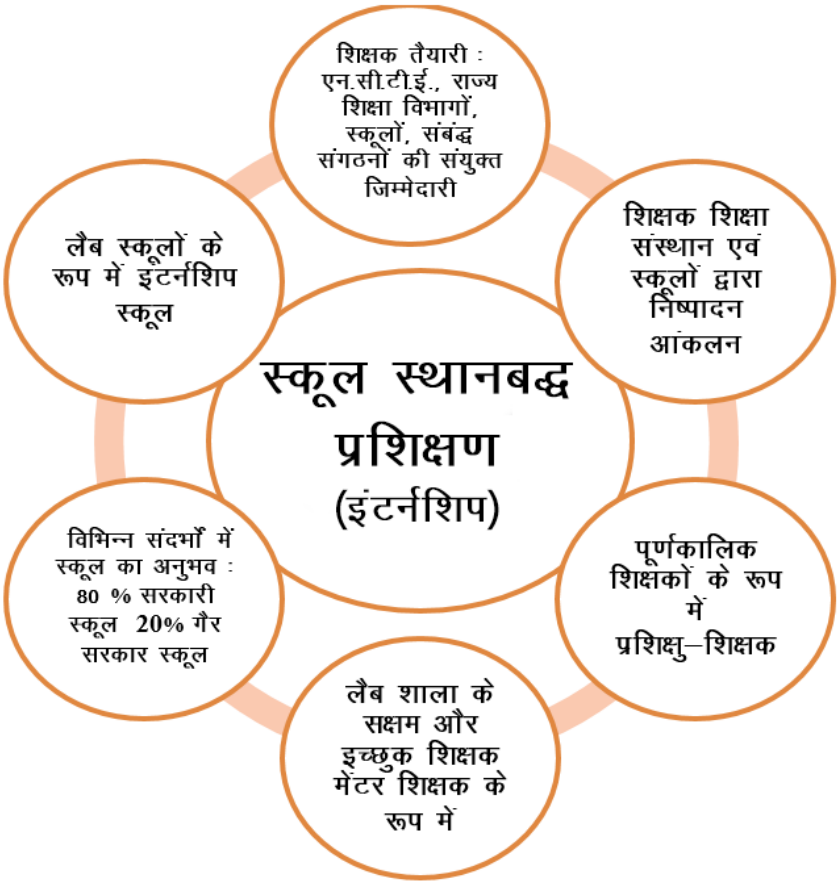

एन.सी.टी.ई. के गाईडलाइन के अनुसार राज्य के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में स्कूल स्थानबद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप) को विकसित किया गया है। एनसीटीई के गाईडलाईन के अनुसार इंटर्नशिप स्कूल के कुछ शिक्षकों को ''मेंटर शिक्षक'' के रूप में नामांकित किया जाना है। प्रथम वर्ष के 04 सप्ताह के इंटर्नशिप कार्यक्रम में प्रत्येक मेंटर 04–08 छात्राध्यापकों को उनकी विषय विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए अपने साथ संलग्न कर सकता है। मेंटर शिक्षक छात्राध्यापकों को विस्तारित शिक्षक शिक्षा संकाय के सदस्य के रूप में कार्य करा सकते है तथा उनको उस क्षेत्र में विकसित कर सकते है।

छात्राध्यापक जिन विद्यालयों में इंटर्नशिप करेंगे उसे शिक्षक शिक्षा संस्थान के लैब स्कूल के रूप में माना जाना चाहिए ताकि शिक्षकों और छात्राध्यापकों को स्कूल के छात्रों, शिक्षकों और स्थानीय समुदाय के साथ लगातार संलग्न करने में सक्षम बनाया जा सके, जिसमें शिक्षा प्रणाली, स्वयं शालेय छात्र, समुदाय आदि

की समझ विकसित की जा सके। विद्यालयों में छात्राध्यापक विभिन्न शैक्षिक प्रयोग, बातचीत, सूचना एकत्रित करना आदि संकलित कर सके इसके लिए ये स्कूल उन्हें उपलब्ध कराया जाना है।

स्कूल इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों का प्रदर्शन और उपलब्धियों का मूल्यांकन/प्रमाणन के उद्देश्य के लिए स्कूल के प्रधानपाठक एवं शिक्षक शिक्षा संस्था के संकाय सदस्य उनका लगातार निर्धारित तरीके से मूल्यांकन करेंगे। शिक्षक शिक्षा संस्थान स्कूलों को मूल्यांकन योजना (एनसीटीई की इंटर्नशिप पुस्तिका में प्रदान किए गए) के लिए विस्तृत दिशा निर्देश उपलब्ध करायेंगे।

3. स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम की आवश्यकताः–

स्कूल शिक्षा की बदलती हुई आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रचलित अध्यापन– अभ्यास /क्षेत्र– अनुभव कार्यक्रम आदि औपचारिकता मात्र रह गये हैं। पाठयोजनाएँ संख्या पूर्ण होने तक केन्द्रित रहती है जो परंपरावादी तरीके से केवल संकीर्ण उद्देश्यों की पूर्ति मात्र कर रही है। साथ ही पाठयोजना वास्तविक चिंतन के अभाव में केवल मशीनीकृत रूप से बनायी जाने लगी है। शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर दिन–प्रतिदिन घटता जाता जा रहा है। NCFTE 2009 द्वारा शाला अनुभव कार्यक्रम के रूप में एक ऐसे प्लेटफार्म की आवश्यकता महसूस की गई, जिसमें छात्राध्यपक अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया करवा सके साथ ही वह शाला, समुदाय व परिवेश से निरंतर सीखता रहे और उसमें स्वतत्रं चिंतन की क्षमता विकसित हो सके। NCF 2005 के अनुसार आज का छात्राध्यापक भविष्य में भावी शिक्षक के रूप में समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी भूमिका को सुविधादाता के रूप में निभाने वाला होना चाहिए।

4. स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम का महत्वः–

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम द्वारा भावी शिक्षक अपने व्यवसाय से परिचित होते है, जहां उन्हें शाला की वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव प्राप्त होता है। छात्राध्यापक सीधे कक्षा शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया से जुड़ता है एवं शालेय शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों के द्वारा उसे समाज और समुदाय से जुड़ने में मदद मिलती है जिससे उसकी अंतःदृष्टि का विकास होता है। वह अपने कार्यों का स्वमूल्यांकन व विश्लेषण कर आगामी शिक्षण कार्य योजना बनाता है, जिससे बच्चों को अधिगम के अधिक से अधिक अवसर मिलते हैं। छात्राध्यापक विद्यार्थियों से फीडबैक प्राप्त कर अपने अधिगम अनुभवों के आधार पर अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करता है, जिससे उसका प्रभाव (reflection) उसके शिक्षण में दिखाई देगा। इस प्रकार ''शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम'' मात्र उपाधि प्राप्ति के अधीन न रहकर छात्राध्यापकों को एक योग्यताधारी एवं व्यावसायिक रूप से भावी शिक्षक बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

5. स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम के उद्देश्यः–

1. शाला में कार्य करते हुए शाला को तथा उसमें कार्य करने के तरीकों को समग्र रूप से समझने हेतु अवसर प्रदान करना।
2. विद्यालय संबंधी विभिन्न कार्यों को समीप से देखने का अवसर उपलब्ध कराना ताकि वे प्रत्येक समस्या एवं चुनौती को पहचान कर, हल कर पाने की क्षमता स्वयं में विकसित कर सकें।
3. बच्चों की समझ के अनुरूप प्रभावी शिक्षण कार्य के लिए स्वयं को तैयार करना।

शाला अवलोकन के दौरान शाला प्रबंधन, समुदाय के साथ कार्य, बच्चों को समझना, पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों को समझना एवं प्रभावी शिक्षण हेतु इनकी आवश्यकता को महसूस करने का अवसर देना जिससे विद्यालय, समुदाय तथा बच्चों के बीच आपसी संबंध की समझ विकसित हो सके।

6. प्रथम वर्ष शाला अवलोकन कार्यक्रम की रूपरेखा :–

प्रथम वर्ष के अवलोकन में वे, बच्चे कैसे सीखते हैं, सीखने के दौरान बच्चों को कहाँ–कहाँ किस तरह की कठिनाइयाँ आती है व क्यों आती है तथा उसके लिए क्या किया जा सकता है इस पर समझ बनाने का प्रयास करेंगे तथा नियमित विचार कर उसका सतत् आकलन करते हुए आगे बढ़ेंगे। शालानुभव कार्यक्रम में दो–दो छात्राध्यपकों की टीम एक साथ काम करेगी ताकि छात्राध्यपक एक–दूसरे से विभिन्न विषयों पर अपनी समझ को बाँट सके, उस पर चर्चा कर सके व सीख सके।

7. शाला अवलोकन के चरण :–

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक हेतु शाला अनुभव कार्यक्रम का आयोजन निम्नांकित चरण/क्रम में सम्पन्न होगा :–

सारणी क्रमांक 7.1

क्रम/चरण	कार्यक्रम/गतिविधियाँ	दिवस
7.1 प्रथम	शालाओं का चयन	–
7.2 द्वितीय	चयनित शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों का उन्मुखीकरण (01 दिवस प्राथमिक व 01 दिवस उच्च प्राथमिक शाला के प्रधानपाठकों, शिक्षकों (मेंटर) के साथ)	02 दिवस
7.3 तृतीय	4 सप्ताह के शाला अवलोकन कार्यक्रम के लिए छात्राध्यापकों/संकाय सदस्य की प्रशिक्षण संस्थाओं में तैयारी	06 दिवस
7.4 चतुर्थ	चयनित प्राथमिक शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम चरण में दो सप्ताह का शाला अवलोकन।	12 दिवस
7.5 पंचम	प्रथम चरण के दो सप्ताह के शाला अवलोकन का संस्थान में लेखन व 25–25 के समूह में अनुभव बांटना	05 दिवस
7.6 षष्ठम्	चयनित उच्च प्राथमिक शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा द्वितीय चरण में दो सप्ताह का शाला अवलोकन।	12 दिवस
7.7 सप्तम्	द्वितीय चरण के दो सप्ताह के शाला अवलोकन का संस्थान में लेखन व 25–25 के समूह में अनुभव बांटना	03 दिवस
7.8 अष्ठम्	छात्राध्यापकों का मूल्यांकन	

7.1 प्रथम चरणः अवलोकन हेतु शालाओं (practicing school) का चयनः–

- ❖ राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले के जिला शिक्षा अधिकारी एवं डाइट की मदद से प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा अवलोकन हेतु उन प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शालाओ का चयन किया जाएगा जो 08 कि.मी. की परिधि में हो। यद्यपि छात्राध्यापकों को ग्रामीण क्षेत्रों में 08 कि.मी. से अधिक दूर की शालाओं के चयन की छूट होगी किन्तु यात्रा भत्ता की पात्रता नहीं होगी। किसी भी स्थिति में एक शिक्षकीय शाला का चयन नहीं किया जाएगा।
- ❖ चयनित समस्त स्कूलों का प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा आकलन कर सूची तैयार की जाएगी कि वहाँ क्या–क्या भौतिक एवं मानवीय संसाधन उपलब्ध हैं, बच्चों की दर्ज संख्या, शिक्षकों की स्थिति, गांव – मोहल्लों का सहयोग, विद्यालय में शिक्षण का स्तर इत्यादि।

❖ दर्ज संख्या को ध्यान में रखकर 50 तक की दर्ज संख्या वाली प्राथमिक शालाओं में एक समूह (एक समूह में दो छात्राध्यापक) 50 से 100 तक की दर्ज संख्या वाली शालाओं में तीन समूह (छः छात्राध्यापक) तथा 100 से अधिक दर्ज संख्या वाले प्राथमिक शालाओं में चार समूह में छात्राध्यापकों को भेजा जा सकेगा। किसी भी शाला में चार से अधिक समूह नहीं भेजे जाएँगे।

❖ यदि किसी शाला में कुल दर्ज संख्या 50 से कम हो, तो उक्त शाला का चयन नहीं किया जाएगा।

नोटः– जिला शिक्षा अधिकारी, डाइट प्राचार्य के मार्गदर्शन में जिले के सभी प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए शालाओं का आबंटन मिलकर करेंगे।

7.2 द्वितीय चरणः चयनित शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों का उन्मुखीकरण :–

प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शालाओं के चयन पश्चात् उन शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं एक शिक्षक के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं में दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नांकित हैं–

❖ प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों को शाला अवलोकन कार्यक्रम से परिचित कराना तथा बदलाव की आवश्यकता पर ध्यान आकृष्ट कर कार्यक्रम के महत्व को समझने में मदद करना।

❖ 24 दिवसीय (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) शाला अवलोकन कार्यक्रम के दौरान प्रधान अध्यापकों एवं शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करना।

❖ 24 दिवसीय (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) शाला अवलोकन की कार्ययोजना तैयार करना।

कार्यक्रम में शिक्षकों व प्रधान अध्यापकों की भूमिका निम्नानुसार अपेक्षित है–

❖ छात्राध्यापकों को शाला तथा शाला में होने वाली विभिन्न गतिविधियों का परिचय देना।

❖ शाला में शिक्षक तथा प्रधान अध्यापक की भूमिका के बारे में बातचीत करना।

❖ शाला के विभिन्न अभिलेखों, पंजियों से अवगत कराना तथा उनकी जरूरत व उनके संधारण के उद्देश्य व तरीकों को समझने में मदद करना।

❖ शाला की विभिन्न समितियों के बारे में परिचय तथा समितियों की आवश्यकता व उनके कार्य को समझने में मदद करना।

❖ शाला के बच्चों (प्रत्येक छात्र–छात्रां) का व्यक्तिगत परिचय (उनकी विशेषताओं सहित) कराएँगे जिससे छात्रों को समझने में छात्राध्यापकों को आसानी होगी।

❖ उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य छात्राध्यापकों को शालेय वास्तविकता से परिचित होने में मदद करना है ताकि वे आगामी वर्ष, 16 सप्ताह के शालानुभव कार्यक्रम की कार्ययोजना इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए बना सकें।

❖ छात्राध्यापक को यदि कोई समस्या है तो उसका समाधान वह स्वयं ढूंढ़ सके, इस हेतु प्रेरित करेंगे।

❖ 24 दिवसीय (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) शाला अवलोकन के दौरान प्रधान अध्यापक व शिक्षक (मेंटर) यह सुनिश्चित करें कि छात्राध्यापक अवलोकन का काम ठीक से कर पाएँ। अतः इस दौरान उन्हें शाला के अन्य कार्यों से न जोड़ा जावे। इन 24 दिनों के दौरान छात्राध्यापक केवल अवलोकन करेंगे उन्हें पढ़ाने के लिए बाध्य न किया जाए, इस बात पर अवश्य चर्चा की जावे।

❖ इस प्रक्रिया का लक्ष्य छात्राध्यापकों को यह समझने में मदद करना है कि विभिन्न शालेय गतिविधियाँ किस प्रकार संचालित होती है, एवं इन गतिविधियों के संचालन में एक शिक्षक की भूमिका क्या होती है।

❖ प्रत्येक छात्राध्यापक को यह समझने में मदद करें कि उन्हें आगामी वर्ष 16 सप्ताह के शालानुभव कार्यक्रम

में किस तरह कक्षा में कार्य करना है और उस दौरान वह बच्चों के साथ किन विषयों, अवधारणाओं पर कार्य करेंगे तथा कैसे करेंगे?

नोटः– डाइट प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि उपरोक्त उन्मुखीकरण में सभी अकादमिक सदस्य अनिवार्य रुप से सहभागिता करें।

प्रशिक्षण संस्थाओं की सुविधा हेतु 02 दिवसीय उन्मुखीकरण की समय सारणी परिशिष्ट क्रमांक–1 में दी गई है जिससे प्रथम दिवस प्राथमिक व द्वितीय दिवस उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधान पाठकों व शिक्षकों (मेंटर) का उन्मुखीकरण किया जा सकेगा एवं इसे आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।

7.3 तृतीय चरणः 24 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम के लिए छात्राध्यापकों की डाइट/ अशासकीय प्रशिक्षण संस्थान में 06 दिवसीय तैयारी –

7.3.1 शाला अवलोकन हेतु भेजने से पूर्व छात्राध्यापकों से 06 दिनों तक डाइट में चर्चा कर अवलोकन के उद्देश्यों, निर्देशों एवं अवलोकन के समय ध्यान दी जाने वाली बातों के बारे में स्पष्ट समझा दिया जाएँ इस अवधि में निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा अपेक्षित है–

- अवलोकन के उद्देश्य।
- अवलोकन संबंधी प्रपत्रों के बारे में विस्तृत चर्चा तथा स्पष्टीकरण, छात्राध्यापकों की शंकाओं का समाधान।
- नियमित अवलोकन का लेखन।
- सूक्ष्म अवलोकन करने के तरीके।

प्रशिक्षण संस्थाओं की सुविधा हेतु 06 दिवसीय कार्यक्रम की समय सारणी (रूपरेखा) ***परिशिष्ट क्रमांक – 2*** में दी गई है जिसमें आवश्यकतानुसार संशोधन किया जा सकेगा।

7.3.2 शाला अवलोकन हेतु जाने से पूर्व छात्राध्यापकों को दिए जाने वाले सामान्य निर्देशः–

12 दिवसीय शाला अवलोकन के समय छात्राध्यापकों से निम्नांकित ***कार्यों की अपेक्षा*** की जाती है –

- शाला लगने के निर्धारित समय से 10 मिनट पूर्व पहुँचें एवं प्रार्थना में अनिवार्य रूप से शामिल हों।
- शाला में रखी उपस्थिति पंजी पर नियमित हस्ताक्षर करें। यह विद्यालय की नियमित पंजी से अलग होगी तथा उसे शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात प्रधानपाठक द्वारा उपस्थिति प्रमाणित कर डाइट में जमा किया जाएगा।
- शाला के समस्त कार्यों का जिनका छात्राध्यापक को अवलोकन करना है, उनकी सूची बनाकर उन्हें सम्पन्न करने हेतु 12 दिनों का टाइम टेबल (प्रधान अध्यापक के सहयोग से) बनाएँ।
- टाइम टेबल में समुदाय (गाँव के कुछ लोगों से मिलना), अभिभावकों से मिलना, बच्चों से बातचीत करना, शालेय कार्यों में सहयोग करना आदि को भी शामिल करें।
- एक समूह के दोनों छात्राध्यापक एक ही कक्षा में जाकर कक्षा का अवलोकन करें तथा आपसी चर्चा कर अपने अनुभवों को व्यक्तिगत रूप से लिखें।
- सभी अवलोकन प्रपत्र भरें व अवलोकन की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करें।

- ❖ प्रशिक्षण संस्था के निर्धारित गणवेश में शाला में उपस्थिति दें।
- ❖ छात्राध्यापक यह भी लिख कर लाएँगे कि वे बच्चों को जो सिखाना चाहते हैं उसमें से अभी मोटे तौर पर बच्चों को क्या–क्या आता है।
- ❖ छात्राध्यापक निर्धारित शाला से अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् नियत तिथि पर संबंधित डाइट में अपनी उपस्थिति देंगे।

7.3.3 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अध्यापकों के लिए दिशा निर्देश जारी करना जिससे कि वे छात्राध्यापकों को उचित मार्गदर्शन दे सकें।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अध्यापकों के लिए दिशा निर्देशः–

प्रत्येक लगभग 04–08 छात्राध्यापकों के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं का एक अध्यापक, पर्यवेक्षक (Mentor) नियुक्त होगा, जिसके द्वारा प्रत्येक 12 दिवसीय अवलोकन में कम से कम 2 बार प्रत्येक प्रशिक्षार्थी का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जाएगा। इस कार्य के लिए निम्नांकित कार्य योजना प्रस्तावित है–

I. पहली बार अवलोकन – प्रथम सप्ताह में

II. दूसरी बार अवलोकन – द्वितीय सप्ताह में सभी छात्राध्यापकों की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में प्रत्येक 12 दिवसीय शाला अवलोकन के पश्चात् 05 दिवसीय बैठक आयोजित की जाए जिसमें शाला अवलोकन पर फीड बैक प्राप्त किया जाए।

III. पर्यवेक्षक के रुप में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षक अवलोकन के समय शाला में ही छात्राध्यापकों से चर्चा करें उनके अनुभवों, कठिनाइयों आदि को सुनें एवं उचित मार्गदर्शन दें। इस बैठक में मुख्य रूप से निम्नांकित बिन्दुओं को देखें–

- ❖ कार्य कैसा चल रहा है। छात्रों को किस प्रकार के मार्गदर्शन व सहयोग की आवश्यकता है?
- ❖ कैसा लिखा जा रहा है? शाला अवलोकन कार्यक्रम के अन्त तक छात्राध्यापक एक रिफलेक्टिव प्रतिवेदन लिखने में सक्षम हो जाएँ, अतः प्रतिवेदन पर भी उन्हें फीडबैक दें।
- ❖ स्कूल के साथ संवाद की गुणवत्ता व स्कूल से मिल रहे सहयोग का प्रकार ?
- ❖ प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति को बेहतर करना।

7.4 चतुर्थ चरण : चयनित प्राथमिक शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा 12 दिवसीय (2 सप्ताह) शाला अवलोकन–

जैसा कि पहले भी कहा गया है इस कार्यक्रम से यह अपेक्षा है कि छात्राध्यापक शाला को समझें तथा इसके विभिन्न घटकों से परिचित हों, कक्षा–कक्ष प्रक्रिया को समझें, विषयवस्तु के बारे में अपनी समझ बना पाएँ, कक्षा–कक्ष में व शाला में अध्यापक की भूमिका को समझे ताकि वे शाला में बच्चों एवं समाज के प्रतिनिधियों के साथ भविष्य में क्या कार्य किया जाना है यह तय करने में सक्षम हों।

7.5 पंचम चरण : के दो सप्ताह शाला अवलोकन का संस्थान में लेखन व 25–25 के समूह में अनुभव बांटना

सर्वप्रथम अपूर्ण प्रतिवेदन/विश्लेषणात्मक रिपोर्ट पूरा करने हेतु छात्राध्यापकों को एक दिन का समय प्रदान करें। इसके पश्चात् सभी छात्राध्यापकों को 25–25 के समूह में बाँटकर 12 दिवसीय शाला

अवलोकन में उनके ***अनुभवों का प्रस्तुतीकरण कराएँ***। इसके लिए प्रत्येक चरण के बाद 04 दिन का समय पर्याप्त होगा। प्रस्तुतीकरण में चर्चा के बिन्दु निम्न होंगे–

(अ) शाला परिचय

(i) ग्रामीण/शहरी

(ii) कुल बच्चे व शिक्षक

(iii) भौतिक संसाधन (कमरे, खेल का मैदान इत्यादि)

(ब) शाला अवलोकन अनुभव

(i) कार्यालयीन गतिविधियाँ

(ii) खेलकूद संबंधी जानकारी

(iii) पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप

(iv) अन्य शालेय गतिविधियाँ

(v) समुदाय व उसकी सहभागिता

(स) कक्षा–कक्ष प्रक्रिया

(i) शिक्षक ने क्या किया

(ii) बच्चों ने क्या किया

(iii) पाठ पढ़ाने का तरीका

(iv) कक्षा का समग्र वातावरण

(v) बच्चों से बातचीत का अनुभव

इसके साथ–साथ छात्राध्यापकों में यह भी बातचीत की जाए कि पूरे अवलोकन के दौरान उन्हें क्या–क्या बातें अच्छी लगी व ऐसी कौन सी थी जो अच्छी नहीं लगी व क्यों?

(प्रशिक्षण संस्थाओं के सदस्य प्रश्नावली बनाकर रखें, जिससे छात्राध्यापकों के अनुभवों को जानकर उनकी समस्त जानकारियों के बारे में समझ विकसित हो सके। प्रस्तुतीकरण के समय छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करें।)

छात्राध्यापकों के प्रस्तुतीकरण एवं शाला अवलोकन अनुभव के प्रतिवेदन के आधार पर प्रशिक्षण संस्थाओं के पर्यवेक्षक (Mentor) कार्यों का विश्लेषण करेंगे।

सहयोगी के रूप में छात्राध्यापक की भूमिका –

दोनों छात्राध्यापक एक समूह (टीम) के रूप में कार्य करेंगे, एक दूसरे के साथ सहयोग कर निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखेंगे तथा एक दूसरे के कार्यों का विश्लेषण कर श्रेष्ठता की ओर बढ़ेंगे कार्य के दौरान :–

- सहयोगी, छात्राध्यापक के साथ मिलकर शिक्षकों के अध्यापन का ध्यान से अवलोकन करेंगे तथा कक्षा–कक्ष प्रक्रिया के बारे में विश्लेषणात्मक दृष्टि रखते हुए अपने अवलोकन कक्षा के पश्चात् अपने साथी को बताएँगे। यानि सिर्फ यह कहना काफी नहीं होगा कि यह अच्छा था बल्कि यह भी कि क्या अच्छा नहीं था और उसे ठीक करने के लिए क्या–क्या किया जाना चाहिए।
- दोनों छात्राध्यापक मिलकर स्कूल के बच्चों पालकों व समुदाय के साथ कार्य करेंगे व एक दूसरे को फीड बैक देंगे। कक्षा कक्ष में विशेषकर निम्न तरह के अवलोकन होंगे जो रिकार्ड के रूप में भी रखेंगे:–

- बच्चों को कितना मौका मिला?
- किस तरह के सवाल पूछे?
- समूह कार्य पर्याप्त् था कि नहीं?
- सभी बच्चों को शामिल कर पाए कि नहीं?
- बच्चों ने कैसे जवाब दिए?
- और क्या–क्या करना चाहिए?

7.6 षष्ठम् चरण : चयनित उच्च प्राथमिक शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा 12 दिवसीय (02 सप्ताह) शाला अवलोकन :–

भविष्य में छात्राध्यापकों की उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन की सम्भावनाओं को देखते हुए शाला अवलोकन में इस वर्ष से उच्च प्राथमिक शालाओं को भी अवलोकन हेतु चयनित किया गया है ताकि उच्च प्राथमिक शालाओं की शैक्षिक गतिविधियाँ जो प्राथमिक शालाओं से भिन्न होती है। उनमें छात्राध्यापक अपनी समझ भली भांति बना सके।

7.7 सप्तम् चरण : द्वितीय चरण के दो सप्ताह के शाला अवलोकन का संस्थान में लेखन व 25–25 के समूह में अनुभव बांटना :–

सर्वप्रथम अपूर्ण प्रतिवेदन/विश्लेषणात्मक रिपोर्ट पूरा करने हेतु छात्राध्यापकों को एक दिन का समय प्रदान करें। इसके पश्चात् सभी छात्राध्यापकों को 25–25 के समूह में बाँटकर 12 दिवसीय शाला अवलोकन में उनके अनुभवों का प्रस्तुतीकरण कराएँ। इसके लिए प्रत्येक चरण के बाद 04 दिन का समय पर्याप्त होगा। प्रस्तुतीकरण में चर्चा के बिन्दु निम्न होंगे–

(अ) शाला परिचय

(i) ग्रामीण/शहरी

(ii) कुल बच्चे व शिक्षक

(iii) भौतिक संसाधन (कमरे, खेल का मैदान इत्यादि)

(ब) शाला अवलोकन अनुभव

(i) कार्यालयीन गतिविधियाँ

(ii) खेलकूद संबंधी जानकारी

(iii) पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप

(iv) अन्य शालेय गतिविधियाँ

(v) समुदाय व उसकी सहभागिता

(स) कक्षा–कक्ष प्रक्रिया

(i) शिक्षक ने क्या किया

(ii) बच्चों ने क्या किया

(iii) पाठ पढ़ाने का तरीका

(iv) कक्षा का समग्र वातावरण

(v) बच्चों से बातचीत का अनुभव

इसके साथ–साथ छात्राध्यापकों में यह भी बातचीत की जाए कि पूरे अवलोकन के दौरान उन्हें क्या–क्या बातें अच्छी लगी व ऐसी कौन सी थी जो अच्छी नहीं लगी व क्यों?

(प्रशिक्षण संस्थाओं के सदस्य प्रश्नावली बनाकर रखें, जिससे छात्राध्यापकों के अनुभवों को जानकर उनकी समस्त जानकारियों के बारे में समझ विकसित हो सके। प्रस्तुतीकरण के समय छात्राध्यापकों में आत्मविंवास बढ़ाने का प्रयास करें।)

छात्राध्यापकों के प्रस्तुतीकरण एवं शाला अवलोकन अनुभव के प्रतिवेदन के आधार पर प्रशिक्षण संस्थाओं के पर्यवेक्षक (Mentor) कार्यों का विश्लेषण करेंगे।

सहयोगी के रूप में छात्राध्यापक की भूमिका –

दोनो छात्राध्यापक एक समूह (टीम) के रूप में कार्य करेंगे, एक दूसरे के साथ सहयोग कर निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखेंगे तथा एक दूसरे के कार्यों का विश्लेषण कर श्रेष्ठता की ओर बढ़ेंगे कार्य के दौरान :–

- सहयोगी, छात्राध्यापक के साथ मिलकर शिक्षकों के अध्यापन का ध्यान से अवलोकन करेंगे तथा कक्षा–कक्ष प्रक्रिया के बारे में विश्लेषणात्मक दृष्टि रखते हुए अपने अवलोकन कक्षा के पश्चात् अपने साथी को बताएँगे। यानि सिर्फ यह कहना काफी नहीं होगा कि यह अच्छा था बल्कि यह भी कि क्या अच्छा नहीं था और उसे ठीक करने के लिए क्या–क्या किया जाना चाहिए।

- दोनों छात्राध्यापक मिलकर स्कूल के बच्चों पालकों व समुदाय के साथ कार्य करेंगे व एक दूसरे को फीड बैक देंगे। कक्षा कक्ष में विशेषकर निम्न तरह के अवलोकन होंगे जो रिकार्ड के रूप में भी रखेंगे:–

  - बच्चों को कितना मौका मिला?
  - किस तरह के सवाल पूछे?
  - समूह कार्य पर्याप्त् था कि नहीं?
  - सभी बच्चों को शामिल कर पाए कि नहीं?
  - बच्चों ने कैसे जवाब दिए?
  - और क्या–क्या करना चाहिए?

7.8 अष्टम् चरण : छात्राध्यापकों का मूल्यांकन:–

अ. प्रधान अध्यापक/शिक्षक किन–किन बिन्दुओं पर आकलन करेंगे–

1. अध्यापन कार्य

- कक्षा में छात्रों की भागीदारी,
- कितने प्रतिशत बच्चे कक्षा में पूरी तरह शामिल थे ?
- भाषा का प्रयोग
- विषयवस्तु के बारे में स्वयं की समझ
- विषयवस्तु सीखने–सिखाने का तरीका
- बच्चों से बातचीत का तरीका
- छात्रों को फीड बैक देने का तरीका
- छात्राध्यापक का कक्षा संचालन
- उपलब्ध सामग्री का अध्यापन में प्रयोग कितना उपयुक्त है ?

- कक्षा प्रबंधन (बैठक व्यवस्था) पाठ के अनुकूल है या नहीं ?
- बच्चों को अध्यापन में मजा आ रहा है, या नहीं ?
- शिक्षण विधि बच्चों के स्तर के अनुरूप थी या नहीं?
- छात्राध्यापक की कक्षा में स्थानीय परिवेश और भाषा का प्रयोग हो रहा था या नहीं?

2. नियमितता
3. पूर्व तैयारी
4. तारतम्यतता / क्रमबद्धता
5. स्वच्छता में योगदान (परिसर, कक्षों, विद्यार्थियों आदि की)
6. छात्राध्यापक का समुदाय से संबंध।
7. अनुपस्थित बच्चों को पुनः शाला में लाने में उनके प्रयास।
8. बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षाकार्य की (नोट बुक या कॉपियों की) नियमित जाँच।

ब. प्रथम वर्ष में शाला अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत शाला अवलोकन हेतु छात्राध्यापकों के मूल्यांकन की योजना निम्नानुसार होगीः–

मूल्यांकनकर्ता एवं आधार सामग्री	निर्धारित अंक
1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के पर्यवेक्षक द्वारा – • प्रधान अध्यापक की राय पर आधारित मूल्यांकन :– • छात्राध्यापकों के द्वारा 24 दिनों (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) के दौरान किए कार्य के अवलोकन के आधार पर • बच्चों, पालकों, शिक्षकों व समुदाय के साथ अंतः क्रिया के आधार पर	कुल अंक 20
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर संस्थान स्तर पर बनी समिति द्वारा– • छात्राध्यापकों द्वारा 24 दिनों (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) के शाला अवलोकन में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण। • अभ्यास शाला में किए गए अन्तः क्रिया, खेलकूद संचालन तथा अन्य कार्य	कुल 20 अंक
कुल अंक	कुल अंक–40

स. मूल्यांकन कैसे करेंगे?

(A) **शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान के पर्यवेक्षक द्वारा मूल्यांकन 20 अंक हेतु –**

शिक्षक प्रशिक्षक / पर्यवेक्षक द्वारा छात्राध्यापक के क्रियाकलापों का अवलोकन कर मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जाएगा –

मूल्यांकन पत्रक –1

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक विभाजन	विशेष टीप
1	छात्राध्यापक द्वारा शाला अवलोकन में किए कार्यो की स्वयं द्वारा की गई मानिटरिंग के आधार पर	05	
2	प्रधानाध्यापक द्वारा दिए गए अवलोकन रिपोर्ट के आधार पर	05	
3	समुदाय एवं पालकों व एस.एम.सी. के साथ किए गए कार्य एवं प्रतिवेदन के आधार पर	05	
4	कक्षा व शाला में छात्राध्यापक का व्यवहार एवं भागीदारी तथा बच्चों के समझ के विषय में लिखे गए रिफ्लेक्टिव डायरी तथा ड्राप आउट बच्चों को शाला में लाने हेतु किए गए कार्य के आधार पर	05	
	योग	20	

हस्ताक्षर
शिक्षक प्रशिक्षक/पर्यवेक्षक

हस्ताक्षर
पी.एस.टी.ई प्रभारी

(B) **शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर मूल्यांकन 20 अंकों के लिए**
यह मूल्यांकन शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य तथा उनके द्वारा गठित समूह निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करेंगे–

मूल्यांकन पत्रक–2

1	छात्राध्यापक द्वारा अपने किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरणः कार्य की समझ (छात्राध्यापक के शिक्षकीय कार्य) बच्चों के बारे में समझ कक्षा अवलोकन की समीक्षा समुदाय के बारे मे समझ	अंक विभाजन 8	विशेष टीप
2	24 दिन (12 प्राथ+ 12 उच्च प्राथमिक) का शाला अवलोकन प्रतिवेदन	4	
3	प्रधानाध्यापक द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन	4	
4	छात्राध्यापक से सवाल–जवाब	4	
	योग	20	

हस्ताक्षर
गठित समिति के सदस्य

हस्ताक्षर
प्राचार्य

8. अवलोकन प्रपत्र

कक्षा कक्ष अवलोकन के संदर्भ में अवलोकन कौशल एक मुख्य वैज्ञानिक प्रक्रिया है और इसका उपयोग छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शिक्षा को बढ़ाने के लिए कक्षाओं में शिक्षण/सीखने की रणनीति के रूप में किया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रेक्षण कौशल महत्वपूर्ण है। इससे उनके आसपास की चीजों के द्वारा बच्चों में वैचारिक समझ को विस्तार करने में और उनकी प्राकृतिक जिज्ञासा को बढ़ावा देने में भी मदद मिलती है।

शिक्षण/सीखने की रणनीति के रूप में अवलोकन का उपयोग, इसके प्रयोग की संभावनाएं और शिक्षण के दौरान आने वाली चुनौतियों से कक्षा, परिवेश को बदलने पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, निष्कर्ष बताते हैं कि अध्यापन, शिक्षण/सीखने की रणनीति के रूप में विद्यार्थियों को कुशल बनाने के लिए इंद्रियों का उपयोग करके अपने परिवेश की खोज के लिए आकर्षक बनाने में बहुत प्रभावी है। इसके अलावा, यह एक शिक्षक को छात्रों की कक्षा कार्यों में अधिकतम भागीदारी बनाने में मदद करता है। शिक्षण/सीखने की रणनीति के रूप में अवलोकन का उपयोग विद्यार्थियों के उत्साह, जिज्ञासा को बढ़ावा देता है, और सीखने में एक प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कार्य करता है। सीखने की रणनीति के रूप में अवलोकन कौशल का उपयोग करना सीखना, जानकारी इकट्ठा करनें में रूचि होना और विशेष रूप से विज्ञान की शिक्षा के लिए शिक्षण/सीखने की सेटिंग्स का उपयोग करते हुए ध्यान केन्द्रित अवलोकन शामिल है। इसके अलावा, अवलोकन के लिए पुनरावृत्ति, चीजों की तुलना करना कुछ ऐसे उदाहरण है जो उद्देश्य से प्राप्त परिणामों को प्राप्त करने में मददगार साबित होते है।

शाला अनुभव कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक, अभ्यास परक और अनुभव आधारित बनाने के प्रयास के तहत प्रत्येक स्तर पर हुए अनुभवों एवं क्रिया–कलापों की समुचित जानकारी एवं व्यवस्थित मूल्यांकन की दृष्टि से विभिन्न अवलोकन प्रपत्र विकसित किए गए हैं। जिनमें से कुछ छात्राध्यापकों द्वारा, कुछ प्रशिक्षण संस्थाओं के शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा और कुछ प्रधान पाठक अथवा स्कूल के शिक्षकों द्वारा भरे जाएंगे।

इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि छात्राध्यापकों के अवलोकन स्तर का विस्तार होगा। दृष्टि जो उनके शिक्षण, शाला और छात्र तीनों के उन्नयन में सहायक होगा। अवलोकन प्रपत्र निम्नलिखित बिन्दुओं से संबंधित होंगे –

1. शाला अवलोकन रिपोर्ट
2. कक्षा अवलोकन रिपोर्ट
3. दैनिक अवलोकन रिपोर्ट
4. बच्चों से बातचीत
5. प्रधानाध्यापक के क्रियाकलापों का अवलोकन
6. गाँव /मोहल्ला की (स्थानीय) जानकारी
7. शाला प्रबंधन समिति एवं पालक शिक्षक संघ का अवलोकन
8. शालेय अभिलेख अवलोकन रिपोर्ट
9. स्व मूल्यांकन प्रपत्र
10. खेल रिपोर्ट
11. प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन प्रपत्र
12. प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट
13. रिफलेक्टिव डायरी
14. छात्राध्यापक का शाला अवलोकन का प्रतिवेदन

छात्राध्यापक द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र

प्रपत्र 1

(बारह दिवसीय शाला अवलोकन) संपूर्ण शाला अवलोकन प्रपत्र

शाला का नाम :– ..... शाला का डाइस कोड :– ..... क्षेत्र :– .....

जनशिक्षा केन्द्र :– ..... विकासखण्ड :– ..... जिला :– .....

संकुल केन्द्र :– ..... अवलोकन दिनांक :– .....

- क्या मिशन स्टेटमेंट बनाया गया है? यदि हाँ तो उल्लेख करें .....
- मिशन स्टेटमेंट के अनुसार विद्यालय उन्नयन योजना का निर्माण –

अ. सामान्य जानकारी

1. शाला के प्रधानाध्यापक / प्रभारी का नाम .....
2. शाला में कार्यरत शिक्षकों की कुल संख्या .....

   अ. पदस्थ शिक्षक .....ब. अतिथि शिक्षक .....
3. स्टॉफ उपस्थिति – कुल .....अ. पदस्थ शिक्षक .....ब. अतिथि शिक्षक.....
4. शाला में ग्राम शिक्षा रजिस्टर (VER) उपलब्ध है ..... हाँ / नहीं.....
5. ग्राम शिक्षा रजिस्टर के अन्तर्गत :–

   अ. शाला में दर्ज बच्चों की संख्या .....

   ब. शाला के बाहर बच्चों की संख्या .....

   स. शाला त्यागी बच्चों की संख्या .....
6. कक्षावार उपस्थिति –

कक्षा	दर्ज			उपस्थिति			अनुपस्थिति		
	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
1									
2									
3									
4									
5									

7. शाला में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कुल संख्या .....

   अ. बालक .....

   ब. बालिका.....

ब. भौतिक पक्ष

1. शाला भवन ..... शासकीय भवन /किराये पर
2. शाला में बाउण्ड्रीवाल ..... हाँ/ नहीं
3. शाला में सूचना पटल है ..... हाँ/ नहीं
4. सूचना पटल पर शाला संबंधित सूचनाएं प्रदर्शित है ..... हाँ/ नहीं
5. कक्षाओं में ग्रीन / ब्लैक बोर्ड ..... उपलब्ध / अनुपलब्ध/ अस्थाई व्यवस्था
6. प्रधानाध्यापक हेतु फर्नीचर /कुर्सी बोर्ड ..... उपलब्ध / अनुपलब्ध/ अस्थाई व्यवस्था
7. प्रधानाध्यापक हेतु फर्नीचर / कुर्सी टेबल ..... उपलब्ध / अनुपलब्ध/ अस्थाई व्यवस्था
8. स्टॉफ हेतु बैठक व्यवस्था ..... उपलब्ध / अनुपलब्ध/ अस्थाई व्यवस्था
9. स्टॉफ हेतु कुर्सी टेबल..... उपलब्ध / अनुपलब्ध/ अस्थाई व्यवस्था
10. कक्षाओं में बच्चों की बैठक की व्यवस्था ..... फर्नीचर/टाट्पट्टी / दरी/ चटाई
11. कक्षा में बच्चों की संख्या के आधार पर बैठक व्यवस्था पर्याप्त/ अपर्याप्त
12. कक्षाओं का आकार बच्चों की संख्या के अनुसार ..... पर्याप्त/ अपर्याप्त
13. शाला में बिजली एवं पंखे की व्यवस्था ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
14. पीने के पानी की व्यवस्था ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
15. पीने के पानी के संग्रह का साधन ..... मटका/स्टील–टंकी/सीमेन्ट–टंकी/बोरिंग
16. शाला में अभिलेखों का संधारण ..... पेटी/ अलमारी/ खुली रैक /टेबल रेफ/ कोई अन्य साधन
17. शाला में मध्यान्ह भोजन हेतु किचन शेड ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
18. मध्यान्ह भोजन बनाने हेतु बर्तन ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
19. मध्यान्ह भोजन खिलाने हेतु बर्तन ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
20. शाला में खेल का मैदान ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
21. शाला में खेल सामग्री ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
22. शाला में उपलब्ध खेल सामग्री का नाम .....
23. शाला में रैम्प की सुविधा ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
24. शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
25. कक्षा–कक्ष में टी.एल.एम. सामग्री ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
26. कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित टी.एल.एम. सामग्री..... शिक्षक या बच्चों द्वारा स्वनिर्मित/तैयार सामग्री / दोनों
27. शाला में कम्प्यूटर की उपलब्धता ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
28. शाला में रेडियों की उपलब्धता ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
29. शाला में घंटी की व्यवस्था ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
30. शाला में शौचालय की व्यवस्था ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
31. शौचालय स्टॉफ हेतु अलग से है ..... हाँ /नहीं
32. बालक–बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय है ..... हाँ /नहीं
33. शाला में गणित, विज्ञान कि किट हैं ..... हाँ /नहीं
34. सफाई कर्मी :– उपलब्ध/ अनुपलब्ध
35. साफ सफाई व्यवस्था
    - शाला में सफाई व्यवस्था ..... उपलब्ध/ अनुपलब्ध
    - शाला परिसर साफ–सुथरा है ..... हाँ /नहीं
    - बच्चें साफ कपडों में आते हैं ..... हाँ /नहीं
    - बच्चें के नाखून कटे हुए हैं ..... हाँ /नहीं
    - बच्चें हाथ धोकर मध्यान्ह भोजन करते हैं ..... हाँ /नहीं
    - पीने के पानी के बर्तन साफ व स्वच्छ ..... हाँ /नहीं
    - शौचालय में पानी की व्यवस्था है अ) स्टॉफ हाँ /नहीं
      ब) बालक हाँ /नहीं
      स) बालिका हाँ /नहीं

स. अकादमिक पक्ष

1. शाला में समय–सारणी की व्यवस्था ..... स्थाई निर्मित / सुविधानुसार / परिवर्तनशील

2. शाला अवलोकन के दौरान शाला का संचालन हो रहा था .... स्थाई निर्मित / सुविधानुसार / परिवर्तनशील समय–सारणीनुसार

3. शाला का प्रारंभ प्रार्थना से होता है ..... हाँ / नहीं

4. प्रार्थना सभा में सभी बच्चे व स्टॉफ नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं हाँ / नहीं

5. क्या सभी छात्र गणवेश में आते हैं ..... हाँ / नहीं

6. बच्चों के गणवेश में न आने का कारण .....गणवेश गंदी / फट गई / गणवेश नहीं है।

7. शाला अवलोकन के दौरान पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन होता पाया गया.. हाँ / नहीं

8. कौन – कौन सी पाठ्य – सहगामी क्रियाओं के आयोजन का अवलोकन किया गया।

   (i)
   (ii)
   (iii)
   (iv)
   (v)

9. पाठ्य– सहगामी क्रियाओं के स्तर पर अवलोकनकर्ता के रूप में आपकी टिप्पणी –

   अ. सामान्य ब. सामान्य से कम स. उत्कृष्ट

10. क्या बच्चों को नियमित गृहकार्य दिया जाता है ? ..... हाँ / नहीं

    यदि हाँ तो बच्चें गृहकार्य पूर्ण कर लाते हैं। बच्चों का गृहकार्य प्रतिदिन जांचा जाता है।

11. क्या सभी बच्चों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें दी गई हैं ..... हाँ / नहीं

    यदि हाँ तो पाठ्यपुस्तकों की स्थिति कटी–फटी / साफ– स्वच्छ / सामान्य / कवर सहित।

12. शाला में किन–किन कार्यक्रमों में समुदाय की सहभागिता परिलक्षित होती है। उपलब्ध रिकार्ड एवं कार्यक्रमों के फोटोग्राफ के आधार पर लिखे .....

13. शिक्षक पालक संघ की नियमित बैठक होती है ..... हाँ / नहीं

14. 2 अक्टूबर / 14 नवम्बर / 15 अगस्त एवं 26 जनवरी के कार्यक्रम होते हैं उपलब्ध रिकार्ड एवं फोटोग्राफ के आधार पर ..... हाँ / नहीं

15. शाला प्रबंधन समिति (SMC) के द्वारा नियमित जांच होती है ..... हाँ / नहीं

16. क्या शाला प्रबंधन समिति द्वारा अनुपस्थित बच्चों को शाला में लाने के लिए प्रयास किया गया ..... हाँ / नहीं

    यदि हाँ, तो कितने बच्चों का .....

17. शिक्षक द्वारा बच्चों के पालकों से चर्चा की गई,(रिकार्ड के अनुसार)..... हाँ / नहीं

यदि हाँ तो कब की गई, दिनांक .....

18. क्या शाला में प्रत्येक बच्चें का फोर्टफोलियों संधारित किया गया है ..... हाँ / नहीं

19. क्या बच्चों का एनकडोटल रिकार्ड उपलब्ध है ..... हाँ / नहीं

20. क्या शाला में ऑलराउण्डर (उत्कृष्ट) बच्चों के नाम सूचना पटल पर प्रदर्शित हैं .... हाँ / नहीं

21. क्या बच्चों को यूर्नीफार्म / साइकिल / छात्रवृत्ति का वितरण हो रहा है? ..... हाँ / नहीं

22. पुस्तकालय की जानकारी –

i	कुल पुस्तकों की संख्या	
ii	कविताओं की पुस्तकें	
iii	कहानियों की पुस्तकें	
iv	विषय संबंधित पुस्तकें	
v	अन्य पुस्तकें	

अ. क्या पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों को अलग से समय दिया जाता है? हाँ / नहीं

ब. कितना समय दिया जाता है व कब ? .....

स. पुस्तकों की स्थिति व रख–रखाव के बारे में टिप्पणी। .....

मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था के बारे में :–

विवरण	हाँ	नहीं
मध्यान्ह भोजन मैन्यू अनुसार होता है?		
खाना बनाने हेतु बर्तन है?		
भोजन (बचे हुए) के लिए अलग पात्र है?		
क्या सभी बच्चे खाना खाते हैं ?		
शिक्षक भी बच्चों के साथ खाना खाते हैं?		
खाने के पश्चात् साफ–सफाई होता है?		
थाली में शेष बचे भोजन का क्या उपयोग होता है ?		
अन्य अवलोकन		

- शाला में कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त होने वाली गतिविधियाँ।

अ. आप जब शाला में थे उस दौरान शाला में किन–किन गतिविधियों का आयोजन किया गया ?

.....

ब. क्या उस दौरान शाला में अध्ययनरत् किसी बच्चे/ बच्चों के पालक शाला में आए ? किस वजह से ?

.....

स. शाला में वृक्षारोपण, उद्यान।

.....

द. शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों को कहीं ले जाया जाता है?

.....

इ. शिक्षक–छात्र अनुपात

.....

25. बच्चों की पृष्ठभूमि क्या है जैसे :–

अ. कितने बच्चों का परिवार कृषि कार्य में संलग्न है ? :– .....

ब. कितने बच्चे श्रमिक परिवार से हैं ? :– .....

स. कितने बच्चों के माता–पिता दोनों श्रमिक हैं ? :– .....

द. कितने बच्चे नौकरी पेशा वर्ग के हैं ? :– .....

य. कितने बच्चे व्यापारी वर्ग के हैं ? :– .....

र. कितने बच्चों के पालक पढ़े–लिखे हैं ? :– .....

ल. कितने बच्चों के भाई या बहन भी स्कूल अथवा कालेजों में पढ़ते हैं ? :– .....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)	छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम	नाम
संस्था का नाम	संस्था का नाम
दिनांक	दिनांक

प्रपत्र – 2

(बारह दिवसीय शाला अवलोकन) कक्षा अवलोकन

(किसी एक शिक्षक की एक कक्षा का अवलोकन कर निम्न बिन्दुओं पर प्रतिवेदन बनावें)

सामान्य जानकारी

1. दिनांक .....कक्षा.....शिक्षक.....
2. कक्षा में कुल बच्चे .....लड़के .....लड़कियाँ.....
3. उपस्थित बच्चे .....लड़के .....लड़कियाँ .....
4. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे .....

कक्षा प्रक्रिया

1. शिक्षक ने कक्षा की शुरूआत कैसे की ?

   .....

2. विषय .....
3. किन अवधारणाओं पर कार्य हो रहा था ?

   .....

4. शिक्षक ने बच्चों को क्या कार्य करने को दिया ?

   .....

5. कार्य हेतु क्या निर्देश दिये गये ?

   .....

6. बच्चों द्वारा कार्य को कैसे किया गया ?

   अ. बच्चों ने समूहों में काम किया या व्यक्तिगत रूप से अन्य। :–.....

   ब. कितने बच्चे कार्य में मशगूल थे ? :–.....

   स. कितने बच्चे कार्य में मशगूल नहीं थे व क्यों? :–.....

   द. शिक्षक ने बच्चों से क्या – क्या पूछा/बातचीत के कुछ उदाहरण

   .....

   य. बच्चों द्वारा दिए गये जवाब एवं पूछे गए प्रश्न, कुछ उदाहरण

   .....

7. बच्चे द्वारा ध्यान न देने पर शिक्षक की क्या प्रतिक्रिया थी ?

   .....

8. क्या पूरी कक्षा के दौरान शिक्षक ने बच्चों को मारा–पीटा/डाटा–फटकारा/अपमानित किया?

   .....

9. शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार ।

   अ. क्या शिक्षक बच्चों के नाम जानते हैं ?

   .....

ब. क्या सभी बच्चों से बात करते हैं ?

.....

स. अमूमन किस भाषा में बात करते हैं?

.....

10. बच्चों के बीच आपसी संबंध।

.....

11. क्या पढ़ने के अलावा कोई अन्य कार्य शिक्षक द्वारा किया गया ?

.....

12. शिक्षण के पूर्व शिक्षण योजना बना कर शिक्षण किया जाता है अथवा नहीं?

.....

13. यामपट का इस्तेमाल किस प्रकार हो रहा था ?

.....

14. छात्रों की बैठक व्यवस्था किस प्रकार थी? क्या उसमें चक्रीय क्रम का पालन होता है?

.....

15. शिक्षक ने बच्चों की समझ को कैसे जांचा ? उदाहारण के साथ बताईये।

.....

16. क्या शिक्षण मासिक संकेतक के अनुरूप सम्पन्न हुआ ?

.....

17. कक्षा का समापन कैसे हुआ ?

.....

18. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

अ. क्या शिक्षक ने बच्चों को अलग से कार्य दिया ? .....

ब. कक्षा में इन बच्चों के पढ़ने–लिखने में मदद के लिए अलग से सामग्री उपलब्ध है? .....

स. शिक्षक का इन बच्चों के साथ व्यवहार। .....

द. अन्य बच्चों का इन बच्चों के साथ व्यवहार। .....

य. इस विषय में अन्य अवलोकन।

.....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)	छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम	नाम
संस्था का नाम	संस्था का नाम
दिनांक	दिनांक

प्रपत्र – 3
दैनिक अवलोकन रिपोर्ट

सुबह से शाम तक शालेय कार्यक्रम की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट छात्राध्यापक प्रतिदिन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर तैयार करेंगे–

- शाला का प्रारम्भ किस प्रकार हुआ ?

  .....

- शाला का खुलना एवं बच्चों का प्रवेश?

  .....

- प्रार्थना सभा एवं बाल सभा के आयोजन पर टीप –

  अ. क्या गतिविधियाँ हुई व कितने बच्चों ने भाग लिया ?

  .....

  ब. सभा के दौरान शिक्षकों का बच्चों के साथ व्यवहार

  .....

  स. सभा के लिए क्या तैयारी की जाती है ?

  .....

  द. कितने शिक्षक उपस्थित थे ?

  .....

  इ. सभा के दौरान शिक्षक क्या करते है ?

- मध्याह्न भोजन के समय शाला में शिक्षकों एवं बच्चों की क्या–क्या भूमिका रही ?

  .....

- सीखने–सिखाने में शिक्षकों एवं बच्चों की भागीदारी ?

  .....

- क्या बच्चे शिक्षक द्वारा बताए निर्देश समझ पा रहे थे ? उन्हें क्या कठिनाई हो रही थी ?

  .....

- शाला में स्वच्छता की स्थिति, किस प्रकार व्यवस्थित की जाती है ?

  .....

- बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता की स्थिति ?

  .....

- बच्चों ने कितना समय पढ़ने में, खेलने में तथा कितना समय अन्य गतिविधियों में लगाया ?

  .....

- दिन भर की पाठयेत्तर गतिविधियों पर संक्षिप्त टीपः–

  .....

  .....

  .....

  .....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर व दिनांक | छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

संस्था का नाम | संस्था का नाम

प्रपत्र – 4 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन)

बच्चों से बातचीत

(शाला शुरू होने से पूर्व, अवकाश में एवं खेल के मैदान में बच्चों से निम्न बिंदुओ पर बातचीत की जा सकती है। कम से कम 15 बच्चों से बातचीत कर एक प्रतिवेदन तैयार करें।)

बातचीत की शुरूआत आप, आपका परिचय देकर, बच्चों के नाम, उनकी पसंद–नापसंद, खेल इत्यादि के बारे में पूछते हुए कर सकते हैं।

1. आज आपकी कक्षा के कितने बच्चे नहीं आए हैं ?

.....

2. आपको शाला में आना क्यों अच्छा लगता हैं? यदि अच्छा नहीं लगता तो क्यों?

.....

3. शाला में आप क्या–क्या करते हैं ?

.....

4. शाला में क्या करना आपको सबसे अच्छा लगता है ?

.....

5. आप पुस्तकालय में कब जाते हो ? आपकी मनपसंद पुस्तक कौन सी है ? और क्यों?

.....

6. कौन – कौन से खेल खेलते है ?

.....

7. आप शाला कैसे आते हैं?

.....

8. सबसे दूर घर किसका है?

.....

9. पढ़ लिखकर आप क्या करना चाहते हैं?

.....

10. क्या शिक्षक आपके साथ खेलते हैं ?

.....

11. विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ दिया जाता है अथवा नहीं?

.....

12. गृहकार्य करना कैसा लगता हैं?

.....

13. स्कूल और अच्छा हो इसके लिए स्कूल में क्या– क्या होना चाहिए ?

.....

14. आपका स्कूल ज्यादा अच्छा है या कोई और स्कूल, क्यों?

.....

15. क्या आप अपनी शाला में कुछ परिवर्तन करना चाहते है? यदि हाँ तो क्यों?

.....

16. कक्षा के सभी बच्चों की प्रोफाइल तैयार करना।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)
नाम
संस्था का नाम
दिनांक

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम
संस्था का नाम
दिनांक

प्रपत्र–5 (पूर्ववत)

प्रधान अध्यापक के क्रिया–कलापों का अवलोकन प्रपत्र (एक बार भरा जाना है)

1. प्रधान अध्यापक का नाम :– .....
2. शैक्षणिक योग्यता :– .....
3. (अ) प्रधान अध्यापक किस कक्षा में अध्यापन करते हैं? :– .....
   (ब) और क्या–क्या उनकी जिम्मेदारियाँ है ?

   .....

4. प्रधान अध्यापक के द्वारा किए जाने वाले कार्यों का अवलोकन–
   अ. संचालन विधिः– समय सारणी, शाला कैलेण्डर, बैठक आदि

   .....

   ब. अभिलेखों की तैयारी एवं संधारण

   .....

   स. विद्यालय की साज–सज्जा तथा सामग्रियों का रखरखाव

   .....

5. शिक्षकों के साथ संबंध ?

   .....

6. समाज के साथ व्यवहार?

   .....

7. समाज या गाँव/मोहल्ला का प्रधान अध्यापक के साथ संबंध?

   .....

8. बालकों के साथ व्यवहार?

   .....

9. प्रधान अध्यापक की शाला विकास के लिए सोच या योजनाएँ।

   .....

10. प्रधान अध्यापक द्वारा दिया गया मार्गदर्शन।

    .....

11. प्रधान अध्यापक की भूमिका में किन चुनौतियों/कठिनाईयों से जूझना पड़ता है ?
    अ. समुदाय से संबंधित – .....
    ब. शिक्षकों से संबंधित – .....
    स. बच्चों से संबंधित – .....
    द. अन्य – .....

    .....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)	छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम	नाम
संस्था का नाम	संस्था का नाम
दिनांक	दिनांक

प्रपत्र-6 (बारह दिवसीय)
गाँव/मोहल्ला की सामान्य जानकारी (एक बार भरा जाना है)

1. गाँव का नजरी नक्शा संकेतो के साथ :– .....
2. गाँव/मोहल्ला का नाम :– .....
3. विकासखण्ड का नाम :– .....
4. विकासखण्ड से दूरी :– .....
5. जिले का नाम :– .....
6. 2011 की जनगणना के अनुसार :– अ. गाँव/मोहल्ला की जनसंख्या :–.....

   ब. गाँव/मोहल्ला में साक्षरता की स्थिति :–.....

   गाँव/मोहल्ला की सड़कों की स्थिति (आवागमन) :– .....

   यातायात के साधन :– .....
7. पेय जल की सुविधा (पोखर / तालाब / हैडपम्प / नलकूप / अन्य) :–.....
8. गाँव/मोहल्ला में रोजगार की स्थिति (कृषि/व्यवसाय इत्यादि)

   अ. मुख्य रोजगार कौन से है ? :– .....

   ब. ज्यादातर लोग किस रोजगार में हैं ? :– .....
9. मुख्य फसलें कौन सी हैं :– .....
10. अन्य आर्थिक संसाधन :– .....
11. गाँव/मोहल्ला में शाला की स्थिति, (प्राथ.,माध्य.हाईस्कूल, हायर सेकेण्डरी, आंगनबाड़ी)

    .....
12. गाँव/मोहल्ला में संचालित स्व–सहायता समूह एवं उनके कार्य –

    .....
13. गाँव/मोहल्ला में ग्राम पंचायत की स्थिति (आश्रित/स्वतंत्र) :–.....

    सरपंच/नगर पंचायत अध्यक्ष का नाम :–.....
14. गाँव में चिकित्सा की सुविधा :–.....
15. बैंक की सुविधा व किस तरह के बैंक है ? :–.....
16. गाँव/मोहल्ला में बाजार की स्थिति :–.....
17. गाँव/मोहल्ला में बिजली, दूर संचार की व्यवस्था :–.....
18. गाँव में धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों की स्थिति :–.....

19. ग्रामीण शौचालय की सुविधा :–.....

20. टीकाकरण की स्थिति संक्रामक रोगों से बचाव हेतु

अ. व्यवस्कों की :–.....

ब. नवजात शिशुओं की :–.....

21. उचित मूल्य की दुकान :–.....

22. बाजार गाँव से दूर है या करीब :–.....

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)	छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम	नाम
संस्था का नाम	संस्था का नाम
दिनांक	दिनांक

प्रपत्र – 7 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन) (एक बार भरा जाना है)

(अ) शाला प्रबंधन समिति

1. शाला प्रबंधन समिति में कुल कितने सदस्य है ? उन सदस्यों की सामाजिक व शैक्षणिक पृष्ठभूमि।

   .....

2. शाला प्रबंधन समिति की बैठक के लिये कम से कम कितने सदस्यों का उपस्थित होना अनिवार्य है?

   .....

3. प्रत्येक वर्ष शाला प्रबंधन समिति की लगभग कितनी बैठकें होती है? इन बैठकों में किन–किन मुद्दों के बारे में बातचीत की जाती है ?

   .....

4. प्रबंधन समिति की पिछली बैठक कब हुई थी?

   .....

5. इस बैठक में किन– किन मुद्दों के बारे में बात की गई?

   .....

6. विगत दो वर्षों में समिति द्वारा क्या–क्या कार्य किये गये?

   .....

7. शाला में छात्रों के प्रवेश, उपस्थिति एवं नियमित अध्यापन सुनिश्चित करने हेतु समाज, पालकों से प्राप्त सहयोग का विवरण।

   .....

8. सांस्कृतिक / खेलकूद कार्यक्रमों के आयोजन में समिति की सहभागिता का विवरण।

   .....

9. साक्षरता / पर्यावरण अवचेतना संबंधी कार्यक्रमों का विवरण एवं उनमें समिति की सहभागिता की जानकारी

   .....

10. शैक्षिक गुणवत्ता / अनुशासन स्थापित करने हेतु समाज के व्यक्तियों के समय– समय पर शाला में आने का विवरण एवं उनके सुझाव की जानकारी।

    .....

11. शाला प्रबंधन समिति के बनने से स्कूल में क्या–क्या परिवर्तन हुए हैं

    .....

12. क्या पालक प्रबंधन समिति की बैठकों में नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं?

    .....

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर शाला एवं समुदाय के संबंधों पर अपने विचार लिखें।

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)	छात्राध्यापक का हस्ताक्षर
नाम	नाम
संस्था का नाम	संस्था का नाम
दिनांक	दिनांक

प्रपत्र–8 (बारह दिवसीय) (एक बार भरा जाना है)

शालेय अभिलेख अवलोकन एवं संधारण प्रपत्र

शालेय अभिलेख अवलोकन प्रपत्र

शाला में शासकीय व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिये कई प्रकार के अभिलेखों की आवश्यकता होती है। अभिलेखों के आधार पर शाला की प्रगति एवं विकास का स्तर पता चलता है। एक आदर्श शाला के अन्तर्गत निम्नलिखित शालेय अभिलेखों का संधारण एवं रखरखाव आवश्यक है –

- ग्राम/वार्ड शिक्षा पंजी
- जन्मतिथि/हलफनामा पंजी
- दाखिल खारिज पंजी
- कैश बुक
- आवक– जावक पंजी
- स्टॉक/भंडार उपस्थिति पंजी
- छात्र उपस्थिति पंजी
- आदेश पंजी
- निरीक्षण पंजी
- प्रतिनियोजन/कक्षा व्यवस्था पंजी
- शिक्षक दैनंदिनी
- स्वास्थ्य परीक्षण पंजी
- मध्यान्ह भोजन पंजी
- छात्रवृत्ति पंजी
- पुस्तकालय पंजी
- बैठक सूचना पंजी बैठक कार्यवाही पंजी
- शाला प्रबंधन समिति पंजी
- शिक्षक पालक संघ पंजी
- स्थानान्तरण पंजी
- शाला अनुदान पंजी
- पुस्तक विवरण पंजी
- गणवेश वितरण पंजी
- कब/बुलबुल/स्काउट गाइड पंजी
- खेलकूद पंजी
- सांस्कृतिक क्रियाकलाप पंजी
- परीक्षा/मूल्यांकन पंजी
- आवागमन पंजी
- प्रतिनियोजन (कक्षा व्यवस्था) पंजी

टीपः– प्रत्येक छात्राध्यापक को केवल आबंटित शाला में उपलब्ध अभिलेखों का ही निम्नलिखित प्रारूप में अवलोकन करना हैः–

शालेय अभिलेख संधारण प्रपत्र

शाला का नाम :–

दिनांक :–

क्रमांक	अभिलेख / पंजी का नाम	महत्व	संधारण प्रक्रिया दैनिक / मासिक / वार्षिक / लगातार
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			

शाला प्रमुख का हस्ताक्षर (सील सहित)

नाम

संस्था का नाम

दिनांक

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

नाम

संस्था का नाम

दिनांक

प्रपत्र – 9 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन)

स्वमूल्यांकन प्रपत्र (एक बार भरा जाना है)

छात्राध्यापक का नाम .....

विद्यालय का नाम .....

दिनांक .....से .....

तक स्वयं की उपस्थिति के बारे में टीप :–

आकलन के बिन्दु :–

1. शाला अवलोकन के लिये आपके द्वारा क्या– क्या तैयारी की गई ?

   .....

2. अवलोकन के दौरान आपने किन– किन गतिविधियों का अवलोकन किया ?

   अ. शाला में .....

   ब. कक्षा में .....

   स. समुदाय में/गाँव में .....

   द. तीन मुख्य बाते जिसने आपको इस अवलोकन को समझने में मदद की अथवा प्रश्न जो इस अवलोकन से आपके विचार में आए।

   .....
   .....
   .....

3. इस दौरान आपको किन–किन से अंतः क्रिया का अवसर मिला ?

   .....
   .....

4. अवलोकन व बातचीत के आधार पर निम्नांकित के बारे में क्या समझ बनी ? –

   अ. शाला .....

   ब. कक्षा व कक्षा प्रक्रिया .....

   .....

   स. बच्चे .....

   द. शिक्षक .....

   य. पालक .....

5. क्या अवलोकन के इस कार्य को और बेहतर ढंग से किया जा सकता था ?

   .....

6. अवलोकन के इस कार्य को और बेहतर करने के लिए और क्या – क्या तैयारी करनी होगी ?

   .....
   .....
   .....

7. आप अपने अवलोकन को कौन सा ग्रेड देना चाहेंगे (A, B, C, D एवं E क्रमशः अति उत्तम से बहुत खराब)

   .....

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

नाम

प्रपत्र 10 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन)

खेल की रिपोर्ट

खेल की रिपोर्ट को छात्राध्यापक भरेंगे। छात्राध्यापक द्वारा कक्षा में स्थानीय खेल खिलवाये जाएँगे जिसके द्वारा छात्रों को अनौपचारिक माहौल मिल सकेगा तथा छात्राध्यापक एवं बच्चों को परस्पर एक–दूसरे को समझने में मदद मिलेगी। (कम से कम एक बार रिपोर्ट भरेंगें।)

खेल रिपोर्ट

दिनांक ..... समय .....

भागीदारी (बच्चों की संख्या) .....

भागीदारी शिक्षकों की .....

खेल का नाम .....

खेल का चुनाव कैसे किया? (चुनाव के आधार) .....

किसने चुनाव में भागीदारी की? .....

खेल के अनुभव

खेल कैसे खेले?

.....

.....

.....

खेल कितनी देर खेले? .....

खेल खेलने वालों का उत्साह

.....

खेलने में आनंद .....

क्या खेल में कोई समस्या आई ? (आपसी विवाद/असहमति आदि) .....

असहमतियों को कैसे सुलझाया गया

.....

खेल की विशेषता क्या थी?

.....

क्या आप को आनंद आया?

.....

.....

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

नाम

प्रपत्र – 11 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन)

प्रधान अध्यापक द्वारा अवलोकन

छात्राध्यापक का नाम ..... विद्यालय का नाम .....

दिनांक .....

1. क्या छात्राध्यापक शाला में तथा कक्षा में समय पर उपस्थित होता था ?

   .....

2. क्या छात्राध्यापक शाला में योजना के अनुरूप तैयारी के साथ आता था ?

   .....

3. छात्राध्यापक का अन्य शिक्षकों के साथ व्यवहार कैसा था ?

   .....

4. छात्राध्यापक का बच्चों से व्यवहार कैसा था ?

   .....

5. छात्राध्यापक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों की समझ के स्तर के अनुरूप थी या नहीं? .....

6. छात्राध्यापक की वेशभूषा एवं व्यक्तित्व पर प्रधानाध्यापक का मत।

   .....

7. क्या समय– समय पर स्थानीय / क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था ?

   .....

8. क्या बच्चे छात्राध्यापक के साथ सहजता महसूस करते थे?

   .....

9. छात्राध्यापक का समुदाय के प्रति व्यवहार कैसा था ?

   .....

10. 12 शिक्षण दिवसों में छात्राध्यापक की उपस्थिति ..... अनुपस्थित.....

11. समग्र अभिमत

   .....

   .....

हस्ताक्षर

प्राचार्य / प्रधानपाठक

प्रपत्र 12 (बारह दिवसीय शाला अवलोकन)

प्रधानाध्यापक/शिक्षकों के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट

12 दिवसीय अवलोकन में प्रत्येक सप्ताह बैठक की रिपोर्ट छात्राध्यापक अपने शब्दों में लिखेंगे, इस तरह की 02 रिपोर्ट लिखनी है।

अ. प्रथम समीक्षा बैठक दिनांक .....

.....

.....

.....

.....

ब. द्वितीय समीक्षा बैठक दिनांक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

नाम

प्रपत्र – 13 रिफ्लेक्टिव डायरी (प्रतिदिन)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

नाम

प्रपत्र 14

छात्राध्यापक का प्रतिवेदन

प्रत्येक छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि 24 दिवसीय शाला इंटर्नशिप के प्रथम सप्ताह में शाला का वातावरण, कक्षा – कक्ष की प्रक्रिया, शाला में शिक्षकों की भूमिका, बच्चों की भूमिका, पालक व समुदाय की भूमिका, सह– शैक्षिक गतिविधियों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आदि को समझें। इसी आधार पर छात्राध्यापकों द्वारा विभिन्न उपलब्ध प्रपत्रों पर अवलोकन कार्य किया जावेगा। प्रथम सप्ताह के उपरांत सम्पूर्ण अवलोकन प्रपत्रों पर एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट / प्रतिवेदन छात्राध्यापक द्वारा प्रधानाध्यापक / संस्था प्रमुख को प्रस्तुत की जायेगी। जिस पर प्रधानाध्यापक एवं संस्थान सुपरवाइजर द्वारा मार्गदर्शन / परामर्श टीप दी जायेगी। जो उसे आगामी वर्ष, 96 दिवसीय स्कूल इंटर्नशिप योजना बनाने में मदद करेगी। इस प्रतिवेदन की एक प्रति छात्राध्यापक द्वारा भी संधारित रखी जाये। प्रतिवेदन के प्रमुख बिन्दु निम्नानुसार हैं :–

1. शाला का नाम .....
2. शाला अवलोकन की अवधि .....
3. शाला अवलोकन गतिविधि के उद्देश्य
   - .....
   - .....
   - .....
4. शाला अवलोकन की कार्ययोजना .....
5. शाला अवलोकन के दौरान भरे गये प्रपत्रों की सूची (प्रपत्र प्रतिवेदन के साथ संलग्न करे।)
   - .....
   - .....
   - .....
6. शाला अवलोकन के दौरान प्राप्त अनुभव
   - अनुभव का मजबूत पक्ष .....
   - अनुभव का कमजोर पक्ष .....
7. शाला अवलोकन गतिविधि की छात्राध्यापक के लिए शैक्षिक उपयोगिता .....
8. सम्प्रतियां (फोटोग्राफ एवं रिकार्ड सहित):– .....
9. संस्थान सुपरवाइजर का अभिमत .....
10. प्रधानाध्यापक / शाला प्रमुख का अभिमत .....

छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

नाम

सामान्य निर्देश

A. छात्राध्यापकों के लिए :–

- ❖ शिक्षकों एवं प्रधान पाठकों से भेंट एवं परिचय।
- ❖ विद्यालय की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- ❖ समयसारिणी, बैठक व्यवस्था, मध्यान्ह भोजन, खेलकूद, विषयगत शिक्षण की जानकारी, पाठ्येत्तर क्रियाकलाप, रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ कार्यालयीन कार्य, संचालन की प्रक्रिया देखकर रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ बच्चों के विषय स्तर के बारे में अनुमान लगाना एवं रिपोर्ट में लिखना।
- ❖ अवलोकित समग्र चीजों के बारे में निर्धारित प्रपत्र में रिपोर्ट बनाकर डाइट में प्रस्तुत करना।

B. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के लिए निर्देश :–

- ❖ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के पर्यवेक्षक बार–बार छात्राध्यापकों को यह स्मरण कराते रहें कि वह अवलोकन रिपोर्ट वास्तविकता पर आधारित ही बनाए। किसी भी गुण या दोष का उल्लेख करने में संकोच न करे।
- ❖ शिक्षक प्रशिक्षक (पर्यवेक्षक) एवं छात्राध्यापक के साथ की बैठक की जानकारी भी प्रपत्र में भरें।
- ❖ सप्ताह के अंतिम कार्यदिवस को सभी छात्राध्यापकों को शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में बुलाएँ एवं उनके अनुभवों एवं परेशानियों को सुन कर सही रास्ता खोजें।
- ❖ कक्षा 1 से 8वीं तक की पुस्तकों के कम से कम 30 सेट छात्राध्यापकों के लिए उपलब्ध कराए जाएँ तथा छात्रों का समूह बनाकर उन्हें शाला अवलोकन के पूर्व पाठ्यपुस्तकें पढ़ने का निर्देश दिया जाए।
- ❖ छात्राध्यापक एवं प्रधान पाठक/शिक्षक के बीच समीक्षा बैठकों की रिपोर्ट का अवलोकन शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा किया जाएगा।

C. दो दिवसीय बैठक की तैयारी के लिये शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को निर्देश :–

15 जुलाई तक प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान चयनित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक शालाओं के प्रधानपाठक एवं उसके एक सहयोगी शिक्षक की एक–एक दिवसीय बैठक आयोजित करेगी। इसमें शालेय शिक्षण योजना संबंधी निम्न बिन्दु होंगे:–

- ❖ प्रधानपाठकों की भूमिका एवं क्रियान्वयन स्पष्ट करना।
- ❖ कक्षाध्यापक की भूमिका एवं क्रियान्वयन।
- ❖ छात्राध्यापक को बालक को समझने में मदद संबंधी निर्देश।
- ❖ पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप संबंधी अभिलेख।
- ❖ शाला अनुभव में छात्राध्यापक एवं डाइट के बीच समन्वय की भूमिका को स्पष्ट करना।
- ❖ छात्राध्यापक के समग्र कार्यो का मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन निर्धारित प्रपत्र में अंकों/ ग्रेडेशन सहित भर कर भेजना।
- ❖ छात्राध्यापक द्वारा पालकों/समुदाय से जुड़ाव संबंधी अभिमत।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान की गतिविधियों हेतु निर्देश :–

- ❖ संदर्भ ग्रंथों का चयन कर पुस्तकालय से प्राप्त करना तथा उनके संदर्भित अंशों को छात्रों को पढ़ने हेतु उपलब्ध कराना।
- ❖ उनके द्वारा पढ़े गए प्रमुख अंशों पर समीक्षात्मक चर्चा कक्षा में करना।
- ❖ डाइट संकाय सदस्य द्वारा शिक्षण योजना अभ्यास शाला में प्रदर्शित कर छात्राध्यापकों को व्यावहारिक जानकारी देना एवं सुझावात्मक समीक्षा करना।
- ❖ सीखने की प्रक्रिया के बारे में समझ बनाना, इस संबंध में अपने अनुभव बताना तथा उनके (छात्राध्यापक) शालेय अनुभवों को सुनना।
- ❖ बाल मनोविज्ञान की सामान्य जानकारी देना।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य के लिए निर्देश :–

- ❖ प्राचार्य यह सुनिँचित करें कि शाला अवलोकन कार्यक्रम निर्धारित समयानुसार सुचारू रूप से संचालित हो रहे हों।
- ❖ बैठक/प्रपत्र आदि के लिए बजट व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।
- ❖ PSTE Cell के लिए 1+8 सदस्य (1 प्रभारी+8 विषय व्याख्याता) सुनिश्चित कर लिये जाएँ।
- ❖ 04 सप्ताह के शाला अवलोकन के दौरान प्राचार्य द्वारा कम से कम 5 विभिन्न शालाओं का अवलोकन अवश्य किया जाए
- ❖ शिक्षक प्रशिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। तथा अवलोकन योजना/पाठ्येतर क्रियाकलापों एवं शाला अवलोकन कार्यक्रम की समस्त गतिविधियों में भी समस्त शिक्षकों प्रशिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित कराएँ।
- ❖ विद्यालय के प्रधान अध्यापक/शिक्षक/ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के संकाय सदस्य/छात्राध्यापकों के मध्य समन्वय बनाए रखें।

प्रधान पाठकों के लिए निर्देश:–

- ▪ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दो दिवसीय उन्मुखीकरण में आवश्यक रूप से उपस्थित रहे तथा प्राप्त निर्देशों को नोट करें।
- ▪ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रपत्रों का गंभीरता से अध्ययन करें व अपनी शंकाओं पर चर्चा कर आश्वस्त हो जाएँ।
- ▪ छात्राध्यापकों के समस्त कार्यों की नियमित देखरेख करें तथा उनके नोट तैयार करते रहें।
- ▪ प्रधानपाठक, छात्राध्यापकों के सहयोगी मार्गदर्शक की भूमिका अदा करें तथा डाइट के साथ समन्वय करें।
- ▪ शाला के प्रधान पाठक अथवा कक्षा शिक्षक, छात्राध्यापकों का औपचारिक परिचय बच्चों तथा समुदाय से कराएँ। ताकि छात्राध्यापक बच्चों की वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति से अवगत हो सकें। यह सुविधानुसार किया जाए।
- ▪ शाला की समस्त समितियों से छात्राध्यापकों को परिचित कराएँ।

परिशिष्ट क्र. 1

समय सारणी

प्रधान अध्यापकों एवं प्रशिक्षकों का उन्मुखीकरण

	10:00 से 10:30	10:30 से 11:30	11:30 से 12:30	12:30 से 01:30 तक	12.30 से 01.30 तक		02.00 से 03.00 तक	03.00 से 04.00 तक	04.00 से 05.00
प्रथम सत्र	पंजी–करण सामग्री वितरण, परिचय	शाला अवलोकन कार्यक्रम से परिचय एवं उद्देश्यों पर चर्चा	04 सप्ताह के शाला अवलोकन कार्यक्रम में शिक्षकों एवं प्रधान पाठकों की भूमिका एवं क्रियान्वयन		शाला प्रबंधन एवं संचालन	भोजन अवकाश 1–30 से 2–30	छात्राध्यापकों द्वारा 12 दिवस के शाला अवलोकन कार्यक्रम की कार्य योजना पर निम्नानुसार चर्चा –	12 दिवसीय शाला अवलोकन कार्यक्रम के समय भरे जाने वाले प्रपत्रों पर चर्चा –	छात्राध्यापक के लिए 12–12 दिवसीय समय सारणी का निर्माण
							(1) शाला व्यवस्था का अवलोकन	(1) शाला अवलोकन प्रपत्र	
							(2) बच्चों से बातचीत	(2) कक्षा अवलोकन प्रपत्र	
							(3) प्रशिक्षार्थियों द्वारा कक्षा में शिक्षकीय कार्यों का अवलोकन	(3) व्यक्तिगत डायरी	
							(4) पालकों से बातचीत	(4) बच्चो से बातचीत	
							(5) कुछ गाँव वालों से चर्चा	(5) प्रधानाध्यापक के लिये प्रपत्र	
								(6) गाँव की सामान्य	

								जानकारी प्रपत्र	
								(7) समुदाय के साथ संबंध प्रपत्र	
								(8) शालेय अभिलेख अवलोकन	
								(9) अन्य प्रपत्र (सभी प्रपत्र आवश्यक निर्देशों के साथ परिशिष्ट में संलग्न है)	

टीप – उच्च. प्राथ. शालाओं के प्रधानपाठकों के उन्मुखीकरण के लिए भी उक्त सारणी का उपयोग किया जा सकेगा।

परिशिष्ट क्र.–2

छात्राध्यापकों हेतु 06 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

समय दिन	10.30 से 12.00	12.00 से 1.30	1.30 से 2.00	2.00 से 3.30	3.30 से 5.30	पठन सामग्रियों का वितरण
पहला दिन	स्कूली जीवन के अनुभवों को सुनाना	स्कूल में पाठ्यपुस्तक के अलावा कौन–कौन सी पुस्तक पढ़ते थे? छात्रों के विचार सुनकर स्वाध्याय माने क्या? स्वाध्याय क्यों? के बारे में एवं पाठ्यचर्या पर चर्चा		शिक्षक क्यों बनना चाहते हैं? चर्चा	शाला अवलोकन प्रपत्र 1 पर विस्तार पूर्वक चर्चा करें।	बच्चे कैसे सीखते है? बच्चें खेल और सीखना बच्चें बहुत कुछ जानते है? पठन सामग्री का वितरण व संदर्भित निर्देश

दूसरा	पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर चर्चा	कक्षा प्रबंधन का ज्ञान, बच्चों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बिंदुओं पर चर्चा		कक्षा अवलोकन प्रपत्र क्र 02 तथा दैनिक अवलोकन रिपोर्ट प्रपत्र क्र 03 पर विस्तार पूर्वक चर्चा	बच्चों से बातचीत प्रपत्र क्र 04 पर चर्चा व बच्चों से बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बिंदुओं पर चर्चा साथ ही प्रधान अध्यापक के क्रियाकलापों का प्रपत्र क्र 05 पर विस्तार पूर्वक चर्चा	'स्कूल और समाज' का वितरण
तीसरा	पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर चर्चा	समुदाय एवं सामुदायिक सहभागिता का शिक्षा में महत्व पर चर्चा		गांव मोहल्ला की जानकारी से संबंधित प्रपत्र क्र 06 पर विस्तार पूर्वक चर्चा भिन्न–भिन्न विषयों के विभिन्न कौशलों पर चर्चा शिक्षक की शैक्षिक दक्षता पर बातचीत	प्रपत्र क्र 07 शाला प्रबंधन समिति एवं पालक शिक्षक संघ का अवलोकन पर विस्तार पूर्वक चर्चा व शंका समाधान	क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है तथा प्रारंभिक गणित सीखने–सिखाने का एक परिपेक्ष्य में पठन सामग्री का वितरण
चौथा	पूर्व दिवस में वितरित पठन सामग्री तथा भाषा और अध्यापन के चुने हुए अंश पर चर्चा	कक्षा 1 – 5 भाषा, अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक के प्राक्कथन का अध्ययन व विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि गतिविधियों व आकलन अधिगम संकेतक के संबंध में परिचर्चा		कक्षा 1 – 5 पर्यावरण, गणित पाठ्यपुस्तक के प्राक्कथन का अध्ययन व विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि गतिविधियों व आकलन के संबंध में परिचर्चा	प्रपत्र क्र 08, 09, 10 पर चर्चा परिचर्चा	''बच्चों क्यों नहीं पढ़ सकते'' 'सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ तथा बच्चे कैसे असफल होते है' का वितरण

पाँचवाँ	पूर्व दिवस की वितरित सामग्री पर चर्चा के बाद बच्चों की रूचि एवं व्यक्तिगत क्षमता की समझ पर चर्चा शैक्षिक स्तर का अनुमान लगाने/पता करने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा	विभिन्न गतिविधियों के आयोजन पर चर्चा प्रपत्र क्र 11, 12, 13, 14 पर बातचीत पठन सामग्री भाषा माने क्या ? का वितरण व ज्ञान की सरंचना तथा गतिविधि पर चर्चा		24 दिवसीय (12 दिवस प्राथमिक 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) शाला अवलोकन में किये जाने वाले कार्यों के बारे में 12–12 दिवसीय अवलोकन कार्ययोजना बनवाएँ	छात्राध्यापकों को शाला आबंटन किया जाय।	
छठा	RTE, CCE पर परिचर्चा	कक्षा 6– 8 हिंदी, अंग्रेजी, पाठ्यपुस्तक के प्राक्कथन का अध्ययन व विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि गतिविधियों व आकलन अधिगम संकेतक के संबंध में परिचर्चा		6–8 गणित, विज्ञान का अध्ययन व विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि गतिविधियों व आकलन अधिगम संकेतक के संबंध में परिचर्चा	6–8 संस्कृत, सामाजिक विज्ञान का अध्ययन व विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि गतिविधियों व आकलन अधिगम संकेतक के संबंध में परिचर्चा	भाषा सीखने से संबंधित (भाषा माने क्या?) पर पठन सामग्री का वितरण

❖ **पहला दिवस**– प्रथम दिवस सभी छात्राध्यापकों से उनके स्कूली जीवन के अनुभवों को ध्यानपूर्वक सुनें तथा इस पर बात करें कि उन अनुभवों में ऐसा क्या हैं जिस वजह से अभी तक यह अनुभव उनको याद है। उन्होंने अपने स्कूली जीवन में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया होगा उस पर भी चर्चा करें। स्वाध्याय के महत्व पर समझ बनाने का प्रयास करें। इसके बाद शिक्षक क्यों बनना चाहते हैं? पर चर्चा करें। साथ ही स्कूल में शाला अवलोकन की आवश्यकता, पाठ्यचर्या पर बातचीत करें। उन्होंने अपने स्कूली जीवन में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया होगा उस पर भी चर्चा करें। शाला अवलोकन प्रपत्र 01 पर विस्तार से बातचीत करे। प्रथम दिवस के समापन के समय उन्हें 'बच्चें कैसे सीखते हैं' 'बच्चे, खेल और सीखना' तथा ''बच्चे बहुत कुछ जानते है ''विषय पर आधारित पठन सामग्री वितरित करें तथा निर्देश दें कि कल उक्त विषय पर कक्षा में चर्चा की जाएगी।

❖ **दूसरा दिवस**– पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा करें, ध्यान रहे चर्चा में सभी की सहभागिता हो। कक्षा प्रबंधन के बारे में बताएँ। छात्राध्यापकों से उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बातचीत की जाए, साथ ही शाला में बच्चों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दुओं पर भी चर्चा करें। द्वितीय सत्र में कक्षा अवलोकन एवं दैनिक अवलोकन, बच्चों से बातचीत के लिए तैयार क्रमशः प्रपत्र 02 और 03 व प्रधानाध्यापकों के कार्यों का अवलोकन प्रपत्र (प्रपत्र क्र. 4 व 5) पर विस्तार पूर्वक चर्चा करें। तीसरे दिवस हेतु 'स्कूल और समाज' विषय पर पठन सामग्री का वितरण करें।

❖ **तीसरा दिवस**– पूर्व दिवस वितरित पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा उपरांत समुदाय एवं सामुदायिक सहभागिता का शिक्षा में महत्व पर चर्चा करें। गाँव – मोहल्ला प्रपत्र की जानकारी एवं शाला प्रबंधन समिति प्रपत्र (प्रपत्र क्र. 6 एवं 7) पर विस्तार पूर्वक चर्चा कर उनकी शंका का समाधान कर, भिन्न– भिन्न विषयों के कौशलों पर चर्चा तथा शिक्षक की शैक्षिक दक्षता पर बातचीत करें, आगामी दिवस के लिए क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है तथा 'प्रारम्भिक गणित सीखने सीखाने का एक परिप्रेक्ष्य' पठन सामग्री का वितरण करें।

❖ **चौथा दिवस**– पूर्व दिवस में वितरित पठन सामग्री के चुने हुए अंश पर चर्चा कक्षा 1 से 5 के सभी विषय यथा गणित, अंग्रेजी, भाषा, पर्यावरण पाठ्यपुस्तक के प्राक्कथन का अध्ययन विषयों के प्रकृति एवं उनसे जुड़ी विधि प्रविधि एवं शैक्षिक गतिविधियों में संबंध में चर्चा, विषयगत आकलन के संबंध में परिचर्चा कर आगामी दिवस के लिए पठन सामग्री बच्चें क्यों नहीं पढ़ सकते है ? सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ तथा बच्चे कैसे असफल होते है का वितरण

❖ **पाँचवा दिवस**– RTE, CCE पर परिचर्चा कक्षा 6 से 8 तक के सभी विषय यथा हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, संस्कृत तथा सा.विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के प्राक्कथन का अध्ययन कर उन विषयों की प्रकृति शैक्षिक विधि प्रविधि एवं शैक्षिक गतिविधियों के संबंध में चर्चा, विषयगत आकलन के संबंध में परिचर्चा कर आगामी दिवस के लिए पठन सामग्री भाषा सीखने से संबंधित भाषा माने क्यां ? पर पठन सामग्री वितरण करना।

❖ **छठा दिवस**– पिछले दिवस की पठन सामग्री पर छात्राध्यापकों से चर्चा के बाद बच्चों की रुचि एवं व्यक्तिगत क्षमता की समझ पर चर्चा करें। साथ ही उन्हें शैक्षिक स्तर का अनुमान लगाने/पता करने के विभिन्न तरीकों पर भी बातचीत करें। विभिन्न गतिविधि के आयोजन पर चर्चा करें तथा शालेय अभिलेख प्रधानध्यापक के साथ समीक्षा, खेल व लाइब्रेरी संबंधी रिपोर्ट के लिए तैयार प्रपत्र क्र. 8, 9, 10 व 11, 12, 13, 14 पर बातचीत करें। पठन सामग्री अपने ज्ञान की संरचना तथा गतिविधि पर चर्चा कराएं। द्वितीय सत्र में छात्राध्यापकों द्वारा 24 दिवसीय (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक) में किये जाने वाले कार्यों के बारे में क्रमबद्ध तौर पर बातचीत कर उनसे प्राथमिक या उच्च प्राथमिक हेतु 12 दिवसीय अवलोकन कार्ययोजना तैयार करवाएँ। छात्राध्यापकों को शाला आबंटन का कार्य इसी दिवस किया जाएँ।

छात्राध्यापकों की शंकाओं का निवारण कर उन्हें निम्नांकित जानकारी अनिवार्य रूप से दी जाएँ –

1. उनके सहयोगी साथी कौन होंगे?
2. उनकी प्रशिक्षण संस्थाओं के पर्यवेक्षक (Mentor) कौन होंगे?
3. उनके सहयोगी साथी, प्रशिक्षण संस्थाओं के पर्यवेक्षक के मोबाइल नंबर उपलब्ध कराएँ।
4. उन्हें कठिनाई होने पर किससे संपर्क करेंगे? यह भी बताएँ।
5. उस संस्था का नाम छात्राध्यापकों को बताएँ जहां उन्हें शाला अवलोकन अनुभव प्राप्त करना है।
6. 12 दिवसीय अवलोकन में छात्राध्यापकों द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र उपलब्ध कराएँ।
7. इन अवलोकन प्रपत्रों से विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करने के विषय में चर्चा करें।
8. छात्राध्यापकों के लिए तैयार निर्देश उपलब्ध कराएँ।

परिशिष्ट क्रमांक–3

अध्ययन सामग्री

अध्ययन सामग्री क्या हो सकती है? इस पर गंभीरता से विचार करें और संदर्भ ग्रंथों का चयन करें। कुछ पुस्तकों (अध्ययन सामग्री) की सूची प्रस्तुत की जा रही है परंतु यह पर्याप्त नहीं है। इसमें अपनी चर्चा के आधार पर अन्य पुस्तकें जोड़ें।

संदर्भ पुस्तकें गीजू भाई की पुस्तकें, जॉन हॉल्ट की पुस्तकें, चकमक, परख, संदर्भ, शिक्षक दिग्दर्शिका, बाल उपयोगी साहित्य आदि में शाला अवलोकन से संबंधित पाठ्यसामग्री को खोजे।

1. तोतोचान
2. शिक्षक (ग्रंथशिल्पी)
3. जॉन हॉल्ट की पुस्तकें
4. समरहील
5. बचपन से पलायन
6. ब्लैक बोर्ड
7. बच्चे की भाषा व अध्यापक – कृष्ण कुमार
8. दिवास्वप्न

टीप :– छात्राध्यापक अन्य संदर्भ ग्रंथों की सूची बनाएँ।

मार्गदर्शिका

शाला अनुभव कार्यक्रम (द्वितीय वर्ष)

1. शाला अनुभव कार्यक्रम से आशय

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों तथा शिक्षण कार्य को एक – दूसरे की पृष्ठभूमि में समझेंगे। ये छात्राध्यापक प्रथम वर्ष विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों में शाला अवलोकन का 4 सप्ताह का कार्यक्रम पूर्ण कर चुके हैं। द्वितीय वर्ष में शाला अवलोकन से आगे बढ़कर शाला अनुभव का कार्यक्रम पूरा करना है जिसमें 16 सप्ताह शाला में व्यतीत कर उन्हें वे सभी कार्य करने हैं जो एक शिक्षक अपने विद्यालय में करता है। अतः अपेक्षा है, कि छात्राध्यापककक्षा में सीखते–सिखाते समय नए विचारों का प्रयोग करें तथा उसे विद्यालय में बच्चों के साथ व्यवहार में लाकर देखें। उदाहरण के लिए प्रत्येक विषय में अलग–अलग विषय वस्तु /अवधारणाओं पर काम करने के कुछ संभावित तरीके व गतिविधियां सुझायी गयी हैं आप शाला अनुभव के दौरान अपने इन अनुभवों को लेकर भी काम करें। साथ ही विषय के अतिरिक्त विद्यालय के सम्पूर्ण शैक्षिक व पाठ्येत्तर कार्यों से जुड़कर भावी शिक्षक के रूप में अपने को तैयार कर सकें।

2. शाला अनुभव कार्यक्रम के उद्देश्य

1. छात्राध्यापक पढ़ाने का अनुभव प्राप्त करें व उस पर मनन करने की क्षमता विकसित करें।
2. बच्चों के व्यवहार, दृष्टिकोण व रुचियों, क्रिया–कलापों का अवलोकन कर उन्हें समझना।
3. बच्चे कई चीजें खुद करके देखते हैं व सीखते हैं बच्चों के स्वतः सीखने की इस प्रवृत्ति को समझना व उनके साथ काम करते वक्त इसे उपयोग में लाना।
4. सीखने में बच्चों द्वारा की गयी पहल को महत्त्व देना।
5. कक्षा में पढ़ाने के अलावा शिक्षक की क्या–क्या भूमिका होती है उसको समझना जैसे सभा आयोजन में, पाठ्य–सहगामी गतिविधियों में, समुदाय के साथ कार्य, कक्षा पुस्तकालय इत्यादि।
6. पाठ्यक्रम में सम्मिलित समस्त विषयों के अध्यापन का अनुभव प्राप्त करना।
7. एक छोटा अध्ययन प्रोजेक्ट के रूप में करना जो किसी भी विषय से सम्बन्धित हो।
8. शालेय शिक्षण को समुदाय व आसपास के पर्यावरण से जोड़ना।

3. शाला अनुभव कार्यक्रम की रूपरेखा

द्वितीय वर्ष शालानुभव कार्यक्रम 16 सप्ताह में सम्पन्न किया जायेगा। कार्यक्रम दो चरणों में क्रमशः प्रथम

चरण (08 सप्ताह) प्राथमिक शालाओं में तथा द्वितीय चरण (08 सप्ताह) उच्च प्राथमिक शालाओं में संपन्न किया जायेगा। जिसकी रूपरेखा निम्नानुसार होगी–

प्रथम चरण प्राथमिक शालाओं हेतु

सारणी –1

क्र.	कार्यक्रम / गतिविधियाँ	दिवस
1.	अभ्यास हेतु प्राथमिक शालाओं का चयन (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था, डाइट एवं जिला शिक्षा अधिकारी के समन्वय से किया जावेगा।)	–
2.	चयनित प्राथमिक शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं मेंटर (शिक्षक) का उन्मुखीकरण	01
3.	छात्राध्यापकों के लिए शाला अनुभव कार्यक्रम की शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में पाँच दिवसीय तैयारी।	05
4.	छात्राध्यापकों द्वारा चयनित शालाओं में 40 दिवसीय शालानुभव क्रार्यक्रम।	40
5.	चालीस दिवसीय शाला अनुभव उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में तीन दिवसीय प्रस्तुतीकरण एवं रिपोर्ट लेखन।	04
	कुल दिवस	50

द्वितीय चरण उच्च प्राथमिक शालाओं हेतु

सारणी –2

क्रमांक	कार्यक्रम / गतिविधियाँ	दिवस
1.	अभ्यास हेतु उच्च प्राथमिक शालाओं का चयन (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था, डाइट एवं जिला शिक्षा अधिकारी के समन्वय से किया जावेगा।)	–
2.	चयनित उच्च प्राथमिक शालाओं के प्रधान अध्यापकों एवं मेंटर (शिक्षक) का उन्मुखीकरण	01
3.	छात्राध्यापकों के लिए शाला अनुभव कार्यक्रम की शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में तीन दिवसीय तैयारी।	03
4.	छात्राध्यापकों द्वारा चयनित शालाओं में 40 दिवसीय शालानुभव क्रार्यक्रम।	40
5.	चालीस दिवसीय शाला अनुभव उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में तीन दिवसीय प्रस्तुतीकरण एवं रिपोर्ट लेखन।	03
	कुल दिवस	47

उपरोक्त सारणी में दिए गए विभिन्न बिन्दुओं का विवरण इस प्रकार है–

3.1 शाला अनुभव हेतु शालाओं का चयन

1. शालाओं के चयन की नियमावली प्रथम वर्ष के अनुसार ही होगी।
2. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु उस शाला को अनिवार्यतः शामिल किया जाए

जिसमें उन्होंने प्रथम वर्ष शाला अवलोकन किया था।

3. शालाओं का चयन दर्ज संख्या को ध्यान में रखकर किया जाए। प्रत्येक 50 तक की दर्ज संख्या पर छात्राध्यापकों का एक समूह भेजें। समूह से आशय एक छात्राध्यापक और एक साथी छात्राध्यापक से है इस प्रकार दो अवलोकनकर्ताओं का एक समूह होगा। ऐसे विद्यालयों को प्राथमिकता देवें जहाँ छात्राध्यापकों के अधिक समूह भेजे जा सकें।

3.2 चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों का उन्मुखीकरण (एक दिवसीय)

इस कार्यक्रम में चयनित शाला के प्रधानाध्यापक तथा मेंटर (शिक्षक) प्रतिभागी होंगे। ये स्रोत दल (शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य, पी.एस.टी.ई प्रभारी तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के संकाय सदस्य) से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे। दोनों चरणों (प्राथमिक व उच्च प्राथमिक) के शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु पृथक– पृथक उन्मुखीकरण कार्यक्रम उस चरण के कार्यक्रम के आरंभ होने के ठीक पहले रखा जाए। सभी अकादमिक सदस्य इस उन्मुखीकरण कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगें। उन्मुखीकरण चर्चा के बिन्दु इस प्रकार होंगे :–

- छात्राध्यापकों द्वारा पिछले वर्ष बनाई गई शाला अवलोकन कार्यक्रम की रिपोर्ट का अध्ययन व कुछ छात्राध्यापकों के अनुभवों का प्रस्तुतीकरण। (प्रस्तुतीकरण छात्राध्यापकों द्वारा किया जाएगा अतः इस सत्र में समस्त छात्राध्यापक अनिवार्यतः उपस्थित रहेंगें। प्रस्तुतीकरण के दौरान विद्यालय का नाम न बताया जाय)
- शालानुभव कार्यक्रम के उद्देश्य तथा कार्यक्रम से परिचित कराते हुए 16 सप्ताह के संपूर्ण कार्यक्रम पर चर्चा
- प्रधानाध्यापक एवं मेंटर शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा।
- प्रधानाध्यापक द्वारा की जाने वाली आवश्यक तैयारी। (समय सारणी निर्माण, छात्राध्यापकों हेतु उनकी बैठक व्यवस्था, उपस्थिति पंजी, छात्राध्यापकों हेतु कक्षा व विषय निर्धारण तथा अन्य कार्य)
- छात्राध्यापकों, प्रधानाध्यापक एवं शालेय शिक्षकों (मेंटर) द्वारा दिये जाने वाले अपेक्षित सहयोग पर चर्चा–
  - i. छात्राध्यापकों के लिए एक निश्चित कक्षा एवं उसमें उनके द्वारा चुने गए विषयों के पढ़ने–पढ़ाने में पूरे कालखण्ड में उपस्थित रहकर आवश्यक सहयोग प्रदान करना।
  - ii. समुदाय के साथ बातचीत करने व सम्पर्क को संभव बनाना।
  - iii. छात्राध्यापकों के अनुभवों पर चर्चा करना व उनकी बच्चों के साथ सक्रिय रूप से भागीदारी बनाने में मदद करना।
  - iv. छात्राध्यापकों को स्पष्ट जिम्मेदारी देना व उन्हें स्कूल का हिस्सा समझना।
  - v. शालेय समितियों एवं पालकों की बैठकों में तैयारी के साथ भागीदारी करवाना।
  - vi. उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य छात्राध्यापकों को शाला की वास्तविक स्थिति को समझकर कार्य करना है ताकि वे अपने अनुभव को पुख्ता कर सकें।
  - vii. छात्राध्यापक को यदि कोई समस्या है तो समाधान हेतु प्रधानाध्यापक से चर्चा करें एवं स्वयं हल करने का आत्मविश्वास बढ़ाएं।
  - viii. इस प्रक्रिया का उद्देश्य छात्राध्यापकों को यह समझने, योजना बनाने व अनुभव करने में मदद करना है कि शालेय गतिविधियां किस प्रकार संचालित होती हैं एवं इस पूरी प्रक्रिया के दौरान एक अच्छे शिक्षक की क्या भूमिका होगी ?
  - ix. छात्राध्यापकों का मूल्यांकन, कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप करना।
  - x. प्रधान अध्यापक यह सुनिश्चित करेंगे, कि छात्राध्यापकों के अध्यापन कार्य के दौरान मेंटर/विषय शिक्षक कालखण्ड की समय समाप्ति तक उपस्थित रहेंगे।
  - xi. अधिकतम 04 छात्राध्यापकों पर एक शालेय शिक्षक, मेंटर होंगे।
  - xii. शालानुभव के दौरान आस–पास के किन्हीं 2–3 स्कूलों के छात्राध्यापकों के द्वारा मिलकर

आयोजित किए जाने वाले बाल मेला में चयनित शाला के प्रधान अध्यापक आपस में समन्वय कर आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगे।

3.3 छात्राध्यापकों के लिए प्रत्येक चरण के शालानुभव कार्यक्रम की 05 दिवसीय तैयारी

छात्राध्यापकों को प्रत्येक चरण के 08 सप्ताह शालानुभव कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी सारणी–1 के अनुसार दी जाए :–

अ . छात्राध्यापकों से निम्न बिन्दुओं के बारे में विस्तृत चर्चा की जावे।

1. बच्चों के प्रोफाइल कैसे बनाएं ? केस स्टडी कैसे किया जाए ?

(संलग्न प्रोफाइल व केस स्टडी पढ़ने को दें व छात्राध्यापकों से चर्चा करें कि उसमें बच्चों के बारे में जानने हेतु किन–किन पहलुओं पर ध्यान दिया गया है ?)

2. पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप यथा बाल सभा, बाल मेला, विज्ञान मेला, पश्चिम भारत विज्ञान मेला, गणित ओलंपियाड, लईका मड़ई, प्रार्थना सभा इत्यादिमें क्या–क्या होना चाहिये? बच्चों के सीखने–सिखाने में इनकी क्या भूमिका हैं? देखें और अपने कुछ सुझाव दें।
3. गाइडेंस एवं काऊंसिलिंग पर।
4. NMMSE, प्रतिभा खोज परीक्षा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं पर।
5. शिक्षण अधिगम योजना पर।
6. अधिगम संप्राप्ति (लर्निंग आउटकम्स) व राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे के परिणामों पर।
7. शिक्षण अधिगम सामग्री पर।
8. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) पर।
9. प्रोजेक्ट क्या, क्यों और कैसे?
10. अप्रवेशी एवं अनियमित उपस्थिति वाले छात्रों को शाला वापस लाने के प्रयास पर।
11. रिफ्लेक्टिव डायरी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल कैसे तैयार की जाय।
12. पाठ्य पुस्तक समीक्षा कैसे करें ?
13. क्रियात्मक अनुसंधान पर।
14. समस्त प्रपत्रों पर (प्रपत्र 01 से 12 पर चर्चा)
15. प्रतिभागियों द्वारा कुछ चयनित पठन सामग्री उदाहरण के लिए, गिजु भाई, जॉन होल्ट, तो़तोचान, इत्यादि के कुछ अंशों का वाचन व उसकी चर्चा करना।
16. कुछ नवीन शैक्षणिक गतिविधियाँ जिसमें कि कविताएं, कहानियां, नाटक, पर्यावरण, विज्ञान के प्रयोग इत्यादि करना।

टीप : परिशिष्ट क्र.– 02 में छात्राध्यापकों के 03 दिवसीय उन्मुखीकरण सारणी सुविधा हेतु दी गई है, जिसमें आवश्यकतानुसार बदलाव किया जा सकता है।

ब . छात्राध्यापकों को निम्नांकित निर्देश दिए जायें –

1. छात्राध्यापक निर्धारित समय से 10 मिनट पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा निर्धारित गणवेश में शाला में उपस्थित होंगे।
2. छात्राध्यापक निर्धारित उपस्थिति पंजी में नियमित हस्ताक्षर करेंगे तथा यदि उनका कालखंड खाली हो

तो शाला प्रमुख द्वारा निर्धारित किये गये कक्ष में बैठेंगे। शाला अनुभव के कुल 16 सप्ताह की अवधि में 90 उपस्थिति अनिवार्य होगी। प्रथम चरण के 8 सप्ताह शालानुभव कार्यक्रम में छात्राध्यापक दो–दो के समूह में एक साथ भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन तथा अंग्रेजी विषय के शालेय शिक्षक की कक्षा 01 से 05 के कुल 4 कालखंडों का अवलोकन करेंगे तथा अवलोकित अनुभव को व्यक्तिगत रूप से लिखेंगे। इसी तरह द्वितीय चरण के 08 सप्ताह शालानुभव कार्यक्रम में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं गणित/विज्ञान/सामाजिक विज्ञान (कोई एक विषय जो छात्राध्यापकों ने चयन किया गया है) के शालेय शिक्षक की कक्षा 6 से 8 की कुल 4 कालखण्डों का अवलोकन करेंगे, तथा अवलोकित अनुभव को व्यक्तिगत रूप से लिखेंगे। यह अनुभव मात्र विवरण, टिप्पणी न हो वरन् उनके अनुभव का विश्लेषण हो।

3. शालानुभव के दौरान आस–पास के किन्हीं 2–3 स्कूलों के छात्राध्यापक स्वयं पहल कर किसी एक स्कूल में प्रधानाध्यापक के मार्गदर्शन में बाल मेला भी आयोजित करेंगे।

4. प्रत्येक चरण के शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापक शिक्षण अधिगम योजना बनाकर निम्नानुसार विषयों का अध्यापन करेंगे।

प्रथम चरण :–

विषय	शिक्षण अधिगम योजना
भाषा	8
गणित	8
पर्यावरण	7
अंग्रेजी	7
कुल	30

द्वितीय चरण :–

विषय	शिक्षण अधिगम योजना
हिंदी	10
संस्कृत	5
अंग्रेजी	5
गणित/सामाजिक विज्ञान/विज्ञान (कोई एक विषय) कक्षा 12 वीं में लिए गए विषयों में से ही कोई एक विषय का चयन किया जावेगा।	10
कुल	30

टीप– वैकल्पिक विषय हेतु कक्षा 12वीं में दिए गए विषयों में से ही निम्नानुसार विषय का चयन करें –

1. गणित संकाय – गणित
2. विज्ञान संकाय – विज्ञान
3. कला संकाय – सामाजिक विज्ञान
4. अन्य – उपरोक्त में से कोई एक विषय का चयन करें।

5. शाला में छात्राध्यापक दो–दो के समूह में अध्यापन कार्य करेंगे, प्रथम सदस्य द्वारा जब अध्यापन किया जायेगा तब द्वितीय सदस्य द्वारा अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार की जाएगी। द्वितीय सदस्य द्वारा अध्यापन कार्य करने पर प्रथम सदस्य द्वारा अवलोकन रिपोर्ट बनायी जायेगी।

6. छात्राध्यापक बच्चों की भाषा (बच्चों के द्वारा बोली जाने वाली पहली भाषा अथवा उनकी मातृ भाषा) सीखने का प्रयास करेंगे और प्रतिदिन कम से कम एक कालांश उसी में बातचीत होगी।

7. कक्षा में छात्रों को किसी प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना नहीं देंगे।

8. शाला में किसी प्रकार की परेशानी हो तो प्रधानाध्यापक/मेंटर के संज्ञान में लावेंगे।

9. छात्रों के संपूर्ण विकास के लिए पालक/समुदाय से संपर्क कर उसका विवरण तैयार करेंगे।

10. छात्राध्यापक व्यक्तिगत डायरी नियमित भरेंगे।

11. प्रत्येक छात्राध्यापक को किसी एक कक्षा के किसी एक विषय की पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण करना होगा। यदि छात्राध्यापक ने प्रथम चरण में पाठ्य पुस्तक समीक्षा की हो, तो द्वितीय चरण में क्रियात्मक अनुसंधान करना होगा या इसके विपरीत भी किया जा सकता है। इसी प्रकार बच्चों के प्रोफाइल अथवा केस स्टडी को भी अलग – अलग चरणों में सम्पन्न किया जाना है।

12. प्रोजेक्ट कार्य, रिफ्लेक्टिव जर्नल एवं बेस्ट प्रेक्टिसेस दोनों चरणों में पृथक–पृथक किया जाना है।

टीप : शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की सुविधा हेतु एक दिवसीय उन्मुखीकरण की समय सारणी दी गई है जिसे आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।

स. शालानुभव हेतु जाने से पूर्व छात्राध्यापकों से शालानुभव कार्यक्रम के स्वरूप, उद्देश्य व इसमें उनकी भूमिका पर चर्चा करें एवं छात्राध्यापकों की शंकाओं का निवारण करें तथा उन्हें निम्नांकित जानकारी अनिवार्य रूप से दें–

1. उनके सहयोगी साथी कौन होंगे ? (सहयोगी साथी – हर छात्राध्यापक के साथ एक अन्य छात्राध्यापक सहयोगी के रूप में होगा। ये दोनों एक –दूसरे की कार्य योजना बनाने में, कक्षा–कक्ष कार्य में सहयोगी होंगे व एक–दूसरे को फीडबैक देंगे। यह साथी हर चरण के लिए अलग–अलग हो सकते हैं।

2. उनके शिक्षक प्रशिक्षण संस्था से पर्यवेक्षक कौन होंगे?

3. उनके सहयोगी साथी, शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक, संबंधित शाला के प्रधान अध्यापक एवं मेंटर के मोबाईल नम्बर उपलब्ध करायें।

4. अवलोकन प्रपत्रों से विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करने के विषय पर चर्चा करें।

द. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में शालानुभव कार्यक्रम की तैयारी – इस हेतु प्रत्येक चरण के पूर्व मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य किये जाएँगे–

1. स्कूल में शालानुभव कार्यक्रम हेतु जाने के तुरंत बाद अध्यापकों से बात–चीत करना और यह पता लगाना कि वर्तमान में वे किस अवधारणा पर/विषय पर कक्षा में बच्चों के साथ काम कर रहे हैं तथा इस बातचीत को ध्यान में रखते हुए बच्चों को सिखाने के लिए अवधारणाएं, विषय चुनना व पाठ्य योजना बनाना।

2. जो भी विषय चुना गया है उससे संबंधित संदर्भ सामग्री पढ़ना। उदाहरण के लिए– यदि आप जोड़ की अवधारणा पर काम करना चाहते हैं तो आप छत्तीसगढ़ एससीईआरटी, एनसीईआरटी तथा अन्य पाठ्य–पुस्तकों को पढ़ें और देखें कि उनमें जोड़ की अवधारणा पर किस तरह कार्य किया गया है? साथ ही आप प्रथम वर्ष में जोड़ के ऊपर दी गई सामग्री का भी अध्ययन करें।

3. चयनित अवधारणा को लेकर आप प्रत्येक चरण के 08 सप्ताह के दौरान कब क्या–क्या काम करेंगे उसकी पूरी योजना बनाना।

4. शिक्षण अधिगम योजना का अर्थ, यह पाठ योजना से कैसे अलग है, योजनाबद्धता व लचीलेपन को साथ–साथ लेने का क्या अर्थ है, शिक्षण योजना बनाने के लिए विषय व सिखाए जाने वाले बिन्दुओं का चयन कैसे करें (उदाहरण– बच्चों के प्रोफाइल, स्कूल की स्थिति, मैदान आदि संभावनाएं, पाठ्य–पुस्तक व उसका विश्लेषण, स्कूल में शिक्षक संख्या, छात्र संख्या, अनुपस्थिति, बच्चे क्या जानते होंगे क्या नहीं आदि)

5. कक्षा 01 से 08 तक के विषयों के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों में उपयोगिता सिद्धान्तों की समझ–

   - विषयवस्तु व कक्षा संचालन में आए अनुभवों पर चर्चा, कहॉ बच्चों की भागीदारी थी कहाँ नहीं, कठिनाइयाँ क्या थीं, उनका समाधान कैसे हुआ आदि।
   - प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर में विभिन्न विषयों को पढ़ाने के उद्देश्य व पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ये उद्देश्य किस प्रकार पूरे होते हैं, तथा इन विषयों की महत्वपूर्ण अवधारणाएं। छात्राध्यापकों ने जो हिस्सा पढ़ाने के लिए लिया है उसके क्या उद्देश्य हैं।

6. विस्तृत शिक्षण अधिगम योजना निर्माण एवं दैनिक शिक्षण अधिगम योजना।

7. एस.सी.ई.आर.टी एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अध्यापकों (पर्यवेक्षक) के लिए दिशा निर्देश जारी करेंगे जिससे कि वे छात्राध्यापकों को उचित मदद कर सके। शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य का कार्य है कि वह शालानुभव कार्यक्रम में जाने से पूर्व तैयारी के दिनों में छात्राध्यापकों से अन्तःक्रिया करें व उन्हें उचित योजना बनाने में मदद करें। इन्हें छात्राध्यापकों की हर टीम के साथ मिलकर प्रत्येक चरण के 08 सप्ताह में उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य की योजना बनवानी है।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. चकमक, परख, शैक्षिक संदर्भ, बुनियादी शिक्षा, खोजबीन, शिक्षक दिग्दर्शिका, बचपन, बालमित्र, बाल साहित्य।
2. अदम्य साहस –डॉ. अब्दुल कलाम
3. शिक्षा – स्वामी विवेकानंद।
4. भारतीय शिक्षा शास्त्री।
5. एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी, एवं न्यूपा की पत्रिकाएँ।

टीप :– छात्राध्यापक अन्य संदर्भ पुस्तकों की सूची बनायें तथा अध्ययन करें।

3.4 छात्राध्यापकों द्वारा प्रत्येक चरण में 08 सप्ताह के शाला अनुभव कार्यक्रम में संपादित किये जाने वाल कार्य

कार्यक्रम के प्रत्येक चरण में छात्राध्यापक से यह अपेक्षा रहेगी, कि अध्यापन अनुभव लें, अवलोकन करें, शिक्षण अधिगम योजना बनाकर अध्यापन करें तथा शालाओं की परिस्थितियों का समग्र आकलन कर एक समझ विकसित करें। उन्हें इस दौरान चुनी हुई कक्षा के प्रत्येक बच्चे का प्रोफाइल तैयार करना है तथा यह निर्धारित करना है, कि बच्चों के किन–किन विषयों और किन अवधारणाओं पर कार्य करने का प्रयास किया जायेगा। उन्हें इस दौरान बच्चों को जानना व समझना है, साथ ही बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझने का प्रयास एवं प्रथम वर्ष के अनुभव व सीखी हुई चीजों का उपयोग भी करना है। बच्चों को किस तरह के कार्य अच्छे लगते हैं, समूह में कार्य कैसे करते हैं, क्या कठिनाइयां आती हैं, बच्चे कितना लिख सकते हैं, किन विषयों पर बोल सकते हैं, उन्हें कितना गणित आता है, आदि–आदि। इन सवालों के उत्तर ढूंढ़ने से उन्हें आगे की योजना बनाने में मदद मिलेगी। उन्हें इस दौरान–

1. निर्देशानुसार विषयों के चार कालखण्डों का अवलोकन कर उसकी कक्षा की रचना को समझना तथा कुछ हिस्सों को स्वयं पढ़ाकर देखना।
2. शाला की सभी गतिविधियों में भागीदारी, किन्तु कुछ में स्वयं पहल कर कार्य करना। उदाहरण के तौर पर बाल सभा, बाल मेले का आयोजन करना, बाल पुस्तकालय, वाल पेपर ,अखबार, लर्निंग कार्नर इत्यादि।
3. शाला व समुदाय के सम्बन्ध को समझना।
4. शिक्षण योजना का निर्माण, विश्लेषण, पुनरावलोकन, पुनः निर्माण एवं क्रियान्वयन।
5. शिक्षक के रूप में पढ़ाने के अनुभव का प्रतिवेदन लिखना तथा स्वमूल्यांकन प्रपत्र क्र. 5 को भरना।
6. अवलोकनकर्ता के रूप में कक्षा अवलोकन प्रतिवेदन लिखना तथा प्रपत्र क्र. 6 को भरना।
7. प्रोजेक्ट का निर्माण एवं क्रियान्वयन–प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा प्रोजेक्ट कार्य कर रिपोर्ट तैयार करना ।
8. बच्चों की प्रोफाइल तैयार करना (प्रपत्र क्र. 10 के अनुसार) ।
9. एक बच्चे की केस स्टडी किसी एक चरण में तैयार करना।
10. किसी एक चरण में शाला की किसी एक समस्या पर क्रियात्मक अनुसंधान करना।
11. किसी एक चरण में किसी एक कक्षा की किसी एक विषय की पाठ्य पुस्तक की समीक्षा करना।
12. प्रत्येक चरण में स्थानीय खेलों की जानकारी प्राप्त कर छात्राध्यापकों एवं शालेय शिक्षकों द्वारा खेलों का आयोजन करना तथा स्वयं भी शामिल होना। (8 दिनों के खेल अनुभव को रिपोर्ट के रूप में लिखना)
13. सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन कर स्वयं भी सहभागिता करना।
14. सप्ताह में एक बार स्कूल के प्रधान पाठक व मेंटर से चर्चा करना व शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की साप्ताहिक समीक्षा बैठक चर्चा में शामिल होकर उसका प्रतिवेदन अपने काम के संदर्भ में लिखना।
15. शैक्षिक गुणवत्ता के लिए समुदाय से चर्चा कर सहभागिता बढ़ाना व उनके अभिमतों को संकलित व विश्लेषित करना।
16. किसी कक्षा के अभिभावकों की बैठक बुलाई जाए। उनमें अभिभावकों का दृष्टिकोण समझने के साथ उनका उद्बोधन करने हेतु छात्राध्यापक/शालाध्यापक /प्रधानाध्यापक अपने विचार अभिभावकों के सामने रखें।

दोनों चरणों के अंत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में रिपोर्ट लेखन व स्वमूल्यांकन संस्थान के प्रत्येक चरण के अंत के 02 दिवस स्कूल में एवं 03 दिवस संस्थान में उक्त चरण के 8 सप्ताह के शालानुभव कार्यक्रम का रिपोर्ट लेखन दस्तावेजीकरण व स्व–मूल्यांकन किया जावेगा।

इसके मुख्य उद्देश्य हैं–

1. छात्राध्यापक अपने अध्यापन कार्य का स्व–मूल्यांकन करें व यह समझ पाएं कि उससे शिक्षण के बारे में, बच्चों के सीखने के बारे में उन्होंने क्या–क्या सीखा व अपने कार्य को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं। साथ ही उनके कार्य में सुधार की कहां–कहां गुंजाइश है, उन्हें और क्या–क्या सीखने की जरूरत है।
2. छात्राध्यापक यह समझ पाएं कि अपने कार्य का आकलन कैसे करते हैं, व साथी को फीडबैक कैसे देते हैं, उसकी मदद कैसे करते हैं व टीम में कैसे काम करते हैं?
3. छात्राध्यापक यह सीख सकें की रिपोर्ट कैसे तैयार करते हैं।
4. बच्चों व स्कूल को समझना तथा बच्चों को सिखाने की चुनौती व आनन्द का अनुभव कर पाना।
5. 03 दिवस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में रिपोर्ट लेखन व स्व–मूल्यांकन किया जाना होगा।
6. छात्राध्यापक अपने कार्य को व्यवस्थित रूप से संकलित कर पाएं।
7. छात्राध्यापक यह समझ पाएं कि स्व–मूल्यांकन क्या होता है तथा स्व–मूल्यांकन क्यों करते हैं ?
8. छात्राध्यापक स्व–मूल्यांकन के तरीके खोजें व उसके लिए उपकरण बनाएं।
9. छात्राध्यापकों के द्वारा स्व–मूल्यांकन के लिए योजना बनवाना।
10. उसके कार्य का मूल्यांकन कैसे होगा उस पर चर्चा व उनकी समझ बनाना।

3.5 छात्राध्यापकों द्वारा 08 सप्ताह में किये जाने वाले कार्य की भूमिका–

शालेय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम (प्रत्येक चरण में 8–8 सप्ताह) की शिक्षण अधिगम योजना बनाने के उपरान्त आवंटित विद्यालय में प्रत्येक छात्राध्यापक निर्देशित विषयों में निर्धारित शिक्षण कार्य करेगा। यह कार्य छात्राध्यापकों द्वारा पूर्णकालिक शिक्षक की तरह किया जायेगा। शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षण अधिगम योजना के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास किया जायेगा। इस हेतु प्रतिदिन की कक्षा उपरान्त समीक्षा करके दोनों छात्राध्यापक कक्षा की परिस्थिति अनुसार शिक्षण अधिगम योजना में परिवर्तन भी करेंगे। यहाँ यह दोहराना उचित होगा कि छात्राध्यापक अपने एक साथी के साथ कार्य करेंगे, उसके द्वारा किये जा रहे शिक्षण कार्य का भी अवलोकन करेंगे तथा स्वयं भी पढ़ाएंगे जिसका अवलोकन उसका साथी करेगा। इस अवलोकनों के आधार पर अपनी तथा साथी की शिक्षण अधिगम योजना में बेहतरी के लिए प्रयास करेंगे। हर कक्षा में दोनों छात्राध्यापक साथ मिल कर जायेंगे ताकि आपस में चर्चा कर सकें। जब पहला छात्राध्यापक अध्यापन कार्य करेगा, दूसरा अवलोकन करेगा, जब दूसरा छात्राध्यापक अध्यापन करेगा तब पहला अवलोकन करेगा। समुदाय से संपर्क, पाठ्य सहगामी क्रियायें एवं दूसरे दिन के लिए योजना भी दोनों मिलकर बनायेंगे।

1. इस अवलोकन कार्य के अंतर्गत छात्राध्यापकों द्वारा निम्न गतिविधियाँ एवं सूचनाएँ प्राप्त करना अपेक्षित है–
   - क्या साथी छात्राध्यापक ने बच्चों से बातचीत की कि आज क्या पढ़ेंगे? कैसे काम करेंगे? आदि
   - क्या छात्राध्यापक को विषय–वस्तु का पर्याप्त ज्ञान था?
   - क्या छात्राध्यापक द्वारा बच्चों के सीखने के स्तर का पता लगाया गया? यदि हॉ तो कैसे?
   - किन गतिविधियों, क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ाया गया?
   - क्या गतिविधियाँ उपयुक्त थीं या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता है?
   - सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी कैसी थी? (कितने बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल थे?)
   - सीखने की प्रक्रिया के दौरान वातावरण उपयुक्त रहा अथवा कोई व्यवधान रहा?
   - शिक्षक के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया कैसी थी?
   - सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षण प्रविधि की उपयुक्तता कैसी थी ?

- शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट्ट का उपयोग किस तरह से हुआ ?
- शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री क्या थी? कैसे उपयोग किया?
- आपके विचार से बच्चों ने कितना सीखा?
- और क्या किया जा सकता था, जिससे कक्षा और बेहतर होती।
- ऐसी स्थिति कितनी बार निर्मित हुई जब बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे? या नहीं समझ पा रहे थे?
- कोई विशेष तथ्य या घटना (उल्लेख करें)
- क्या कठिनाईयां आई और उसे आपने कैसे दूर करने की कोशिश की।

टीप :– उपरोक्त सभी जानकारियों को एकत्र करने के लिए कक्षा अवलोकन के प्रपत्र 6 का उपयोग करें।

2. सहयोगी के रूप में छात्राध्यापक निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखेंगे –

- दोनों एक समूह (टीम) के रूप में कार्य करेंगे।
- सहयोगी, छात्राध्यापक के अध्यापन का ध्यान से अवलोकन करेंगे तथा अपने महत्वपूर्ण सुझाव जैसे – ''बहुत अच्छा लगा'' ''और कर लेते तो और अच्छा होता'', आदि कक्षा के पश्चात् साथी को बताएंगे। इसमें यह और ऐसा को सटीक स्पष्टता से उदाहरण के साथ लिखना होगा।
- कक्षा में यदि साथी की आवाज धीमी है या उससे श्यामपट्ट पर लिखते समय किसी प्रकार की भाषायी त्रुटि हो गयी हो तो उस सन्दर्भ में अपने साथी का ध्यान नम्रतापूर्वक आकृष्ट कराएंगे।
- कक्षा अवलोकन की रिपोर्ट दोनों मिलकर बनाएंगें जिसमें अच्छी बातों व कमियों का उल्लेख होगा। इसमें स्वमूल्यांकन पर भी चर्चा की जाएगी। जैसे– पढ़ाने वाला शिक्षक भी लिखे ''हम ऐसा करते तो और ज्यादा अच्छा होता'' और इससे सीखकर आगे हम क्या बदलाव करेंगे। इस विश्लेषण का पैनापन व सुधार के सुझाव आकलन के प्रमुख आधार होंगे।

3. छात्राध्यापक अपने मूल्यांकन के बिन्दुओं पर समझ बनाएंगे। इस हेतु वे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

4. छात्राध्यापकों को प्रत्येक चरण के 08 सप्ताह के शिक्षण कार्यक्रम के दौरान एक–एक (कुल दो) प्रोजेक्ट भी करना होगा। यह कक्षा अध्यापन अथवा समुदाय अध्ययन अथवा उसके साथ कार्य का हो सकता है। प्रोजेक्ट कार्य के लिए 30 कालखण्ड के तुल्य समय निर्धारित किया गया है। प्रोजेक्ट कोई अलग कार्य न होकर छात्राध्यापकों द्वारा दिया जाने वाले विषय शिक्षण अथवा समुदाय को शिक्षा में शामिल करना ही है। जैसे छात्राध्यापक को कक्षा 04 में स्थानीयमान सिखाना है, अथवा कक्षा 02 के बच्चों को पढ़ना–सीखने में मदद करना है अथवा कक्षा 06 में विज्ञान के चित्रों के बनाने के कौशलों का विकास, कक्षा 08 में नागरिक के कर्त्तव्य अथवा कुछ और विशेष हिस्सा बच्चों को करवाने का प्रयास करना है या फिर यह प्रयास करना है कि अभिभावकों की भूमिका कैसे बढ़ा सकते हैं? छात्राध्यापकों को प्रोजेक्ट के लिए चयनित अवधारणाओं अथवा कौशलों को स्पष्ट रूप से समझना, उसमें बच्चों की समझ को जानना व फिर उन्हें सीखने में मदद करने के लिए पढ़ाना, सम्बंधित काम करवाना, सवाल बनाना व उन पर चर्चा करना आदि के लिए पहले से तैयारी करनी होगी। बच्चों को कैसे पढ़ाना है आदि की रूपरेखा का निर्माण करना होगा। प्रोजेक्ट के दौरान छात्राध्यापक शिक्षण कार्य के स्वरूप, प्रतिक्रिया व आगे बढ़ने के तरीके को नोट करेंगे। प्रोजेक्ट का लक्ष्य अपने तरीकों को फलीभूत करने का प्रयास करते हुए अवलोकनों को लिखना है व यह योजना बनानी है कि बच्चों ने जो सीखा है उसका आकलन कैसे होगा।

3.6 शाला के प्रत्येक चरण में 08 सप्ताह के शिक्षण अनुभव के पश्चात् अपनी संस्था में 03 दिवसीय प्रस्तुतीकरण –

इन चार दिवसों के दौरान छात्राध्यापक अपने–अपने स्कूल के अनुभवों को एक–दूसरे के साथ बांटेंगे, अपने अनुभवों का विश्लेषण करेंगे । प्रथम चरण के प्रस्तुतीकरण पश्चात् आगामी शालानुभव के लिये तैयारी करना भी शुरू कर देंगे।

सभी छात्राध्यापकों को 25–25 के समूह में बाँटकर उनके अनुभवों का प्रस्तुतीकरण कराएं। वे अन्य साथियों के साथ किए गए कार्य से सम्बन्धित सामग्री को देखेंगे, पढ़ेंगे व उसकी समालोचना करेंगे। इसके लिए 03 दिवस का समय पर्याप्त होगा। प्रस्तुतीकरण में चर्चा के बिन्दु निम्नानुसार होंगे–

1. शाला अनुभव सुनाना ।
2. शैक्षिक वातावरण संबंधी।
3. समुदाय संबंधी ।
4. दिए गए निर्देशानुसार प्राथमिक /उच्च प्राथमिक के सभी चयनित विषयों के शिक्षण पर।
5. कक्षा के अंदर की गतिविधियों पर।
6. छात्र प्रोफाइल का विश्लेषण एवं योजना निर्माण पर।
7. पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों पर (सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेलकूद तथा अन्य)।
8. प्रोजेक्ट, केस स्टडी, बेस्ट प्रेक्टिस, रिफ्लेक्टिव डायरी, पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण,एक्शन रिसर्च पर।

टीप : शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के संकाय सदस्य छात्राध्यापकों के अनुभवों को जानें, उनके कार्यों का विश्लेषण करें तथा प्रस्तुतीकरण के समय छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करें।

3.7 सहयोगी छात्राध्यापक के शिक्षण अवलोकन के अंतर्गत निम्न गतिविधियाँ एवं सूचनाएं अपेक्षित हैं–

i. क्या साथी छात्राध्यापक ने बच्चों से बातचीत की व उनके विचार को सुना?
ii. क्या छात्राध्यापक ने योजना उसी तरह लागू की जैसे सोचा था?
iii. कक्षा में क्या महत्वपूर्ण बिन्दु आये ?
iv. छात्राध्यापक ने किन तरीकों गतिविधियों, क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ाना तय किया था?
v. यदि योजना में बदलाव किया तो क्या और क्यों करना पड़ा?
vi. क्या कक्षा अवलोकन के बाद लगता है कि गतिविधियां उपयुक्त थी या उनमें परिवर्तन की आवश्यकता थीं ?
vii. क्या सीखने की प्रक्रिया में, बच्चों के सीखने की भागीदारी, में भाषा बच्चों की समझ में आ रही थी?
viii. छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा का माहौल कैसा था, कितने बच्चे भाग ले रहे थे, बोल रहे थे, कार्य के बारे में आपस में चर्चा कर रहे थे और कितने बच्चे सुन रहे थे?
ix. शिक्षण प्रक्रिया में श्यामपट्ट का उपयोग हुआ हो तो किस तरह से?

3.8 शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य के लिए निर्देश :–

1. प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि शालेय शिक्षण योजना कार्यक्रम निर्धारित समयानुसार सुचारू रूप से संचालित हो रहे हों।
2. बैठक/प्रपत्र आदि के लिए बजट व्यवस्था सुनिश्चित कर लेवे।
3. PSTE Cell के लिए 1+6 सदस्य (1 प्रभारी+6 विषय अकादमिक सदस्य) सुनिश्चित कर लिया जावे।
4. प्रत्येक चरण के दौरान प्राचार्य द्वारा कम से कम 5 विभिन्न शालाओं का अवलोकन अवश्य किया जावे तथा अपना प्रतिवेदन PSTE के साथ साथ उचित माध्यम से SCERT शिक्षक शिक्षा प्रभाग को भी प्रेषित किया जाये।
5. स्टाफ सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित की जाये तथा शिक्षण अधिगम योजना/पाठ्येत्तर क्रियाकलापों एवं अन्य गतिविधियों में भी शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के समस्त अकादमिक सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करावे।
6. विद्यालय के प्रधान अध्यापक/शिक्षक/शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य/ छात्राध्यापकों के मध्य समन्वय बनाये रखें।

3.9 शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के लिए निर्देश :–

अ. लैब शालाओं से संबंधित

- छात्राध्यापकों का समूह बनाते समय पुरूष एवं महिला छात्राध्यापकों का पृथक–पृथक समूह बनाया जा सकता है।
- पर्यवेक्षक एक दिन में 2 छात्रों (एक समूह)का अवलोकन करने के पश्चात् मूल्यांकन करे।
- शाला अनुभव कार्यक्रम के पहले पाँच दिनों के अंदर पर्यवेक्षक द्वारा पहला अवलोकन किया जाना चाहिए।
- पर्यवेक्षक शाला में ही एक स्थान पर बैठ कर छात्राध्यापकों से बात करें उनके अनुभव, कठिनाईयों आदि को सुने एवं उचित मार्गदर्शन दें। यहां शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक की दो भूमिकाएँ है।

1. वह शिक्षक भी है।
2. समन्वयक भी है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक बार–बार छात्राध्यापकों को यह स्मरण कराते रहे कि वह अपना तथा अपने साथी की अवलोकन रिपोर्ट वास्तविकता पर आधारित ही बनाये। किसी भी गुण या दोष का उल्लेख करने में संकोच न करे। क्योंकि अभी वह शिक्षक नहीं है, और उससे त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। इन त्रुटियों से उसके अंक कम नहीं होंगे बल्कि सुधार करने में मदद मिलेगी।

- उसी शाला का चयन करें, जहां उपरोक्त बैठक हेतु उचित स्थान आसानी से मिल जाए।
- पर्यवेक्षक एवं छात्राध्यापक बैठक की जानकारी भी प्रपत्र में भरें।
- 16 सप्ताह के बीच किसी भी पूर्व निर्धारित शनिवार को सभी छात्राध्यापकों को शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में बुलावें एवं उनके अनुभवों एवं परेशानियों को सुन कर सही मार्गदर्शन देवें।
- 16 सप्ताह के शाला अनुभव के बाद संबंधित शालाओं के प्रधानपाठक अपने भरे हुए अवलोकन प्रपत्रों को लेकर निर्धारित तिथि में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था कार्यालय आएंगे।
- कक्षा 01 से 08 वीं तक की पुस्तकों के कम से कम 30 सेट छात्राध्यापकों के लिए उपलब्ध कराया जाये तथा छात्रों का समूह बनाकर उन्हें पाठ्यपुस्तकें पढ़ने का निर्देश दिया जाय। छात्राध्यापक पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करें–

  A. इन पाठों से बच्चे क्या सीखेंगे?

  B. आप इस पाठ को कैसे सिखायेंगे?

- दैनिक शिक्षण अधिगम योजना के प्रारूप की जानकारी देकर कम से कम 5 शिक्षण अधिगम योजनाओं की तैयारी करवायें।
- तत्पश्चात् कक्षा में अभ्यास कराएँ एवं उसमें गुणात्मक सुधार के लिए कक्षा में समीक्षा करें।
- शिक्षण अधिगम योजना के आधार पर कौन सी दक्षताएँ विकसित हो सकती है उसकी समझ विकसित करने में मदद करें।
- सीखने की प्रक्रिया बढ़ाने के लिए पुस्तकालय से कुछ पुस्तकों का चयन कर उन्हें छात्राध्यापकों हेतु पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया जाए एवं उन पर चर्चा करवायें। विषयों की प्रकृति से सम्बंधित आवश्यक संदर्भ सामग्री भी पढ़ने के लिए दी जाए।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा नियमित शाला के अवलोकन हेतु टीम बनाकर उन्हें कार्य सौपना एवं मार्गदर्शन के लिए आदेश प्रदान करना।
- अवलोकन द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन का अध्ययन, विश्लेषण शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के PSTE प्रभाग द्वारा किया जाए।
- छात्राध्यापक एवं प्रधान पाठक/शिक्षक के बीच समीक्षा बैठकों की रिपोर्ट का अवलोकन शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक द्वारा किया जाए।

ब. एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम की तैयारी के लिये शिक्षक प्रशिक्षण संस्था को निर्देश

प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापक एवं मेंटर (शिक्षक) का एक दिवसीय उन्मुखीकरण किया जाए। इसमें शाला अनुभव कार्यक्रम संबंधी निम्न बिन्दु होंगे:–

- शाला अनुभव कार्यक्रम से परिचित कराना एवं उद्देश्य बताना।
- प्रधानपाठकों की भूमिका एवं क्रियान्वयन स्पष्ट करना।
- कक्षाध्यापक की भूमिका एवं क्रियान्वयन।
- छात्राध्यापक को बालक को समझने में मदद संबंधी निर्देश।
- पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप संबंधी अभिलेख।
- सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग एवं रख–रखाव।
- प्राथमिक व माध्यमिक शालाओं में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों के शिक्षण अवलोकन के संबंध में निर्देश।
- शिक्षण अनुभव में छात्राध्यापक एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के बीच समन्वय की भूमिका को स्पष्ट करना।
- छात्राध्यापक के समग्र कार्यो का मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन निर्धारित प्रपत्र में अंकों/ग्रेडेशन सहित भर कर भेजने हेतु आवश्यक निर्देश।
- छात्राध्यापक द्वारा पालकों/समुदाय से जुड़ाव संबंधी अभिमत।

स. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था की गतिविधियों हेतु निर्देश :–

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक अकादमिक सदस्य द्वारा निम्नांकित बातें सिखायी जायेगी :–

- संदर्भग्रंथों का चयन कर पुस्तकालय से प्राप्त करना तथा उनके संदर्भित अंशों को छात्रों को पढ़ने हेतु उपलब्ध कराना एवं उन पर आपस में चर्चा करवाना।
- उनके द्वारा पढ़े गये प्रमुख अंशों पर समीक्षात्मक चर्चा कक्षा में करना।
- सभी विषयों में सीखने की विधियों के बारे में कक्षा में चर्चा करना।
- समग्र शिक्षण अधिगम योजना एवं दैनिक डायरी भरने के लिये पर्याप्त निर्देश देना।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य द्वारा शिक्षण अधिगम योजना अभ्यास शाला में प्रदर्शित कर छात्राध्यापकों को व्यावहारिक जानकारी देना एवं सुझावात्मक समीक्षा करना।
- सहायक शिक्षक सामग्री का संग्रह/चुनाव/निर्माण के बारे में पर्याप्त रूप से समझाना।
- सीखने की प्रक्रिया के बारे में समझ बनाना, इस संबंध में अनुभव बताना तथा उनके शालेय अनुभवों को सुनना।
- बाल मनोविज्ञान की सामान्य जानकारी देना।
- आबंटित शाला का 16 सप्ताह के शिक्षण अवलोकन में से प्रथम सप्ताह में कम से कम एक बार अवलोकन पूरा करके PSTE प्रभारी के पास रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के सदस्यों द्वारा कम से कम प्रत्येक छात्राध्यापक के कक्षा शिक्षण का कम से कम 3 बार या संभव हो तो इससे अधिक बार अवलोकन अवश्य किया जावेगा। अवलोकन के दौरान एक कालखण्ड में उसके अध्यापन कार्य को देखकर मार्गदर्शन दिया जावे तथा साप्ताहिक रिपोर्ट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था प्राचार्य को प्रस्तुत किया की जाएगी।

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के सदस्यों द्वारा शिक्षण अधिगम योजना समाप्ति के 04 दिवस के भीतर सभी छात्राध्यापकों से समग्र रिपोर्ट शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में जमा कराया जावेगा।
- समग्र प्रपत्र और रिपोर्ट्स शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा मानीटरिंग, कक्षा शिक्षक/प्रधानपाठक के अभिमत व छात्राध्यापक में हुए शिक्षण कौशल के विकास के आधार पर अंत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के द्वारा छात्राध्यापकों का 120 अंकों में मूल्यांकन किया जाये।
- छात्राध्यापकों को प्रत्येक चरण के 08 सप्ताह के दौरान शाला में किये गये कार्य पूर्ण करके वापस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में आने के बाद कागजों को व्यवस्थित कर फाइलों में रखें व अपने कृत कार्य के अनुभवों को लिखकर प्रस्तुतीकरण तैयार करे।
- इसके बाद प्रत्येक पर्यवेक्षक (supervisor) अपने निर्धारित छात्राध्यापकों के समूह में इस कार्य का प्रस्तुतीकरण करवाएं।
- समूह में जब एक छात्राध्यापक प्रस्तुतीकरण कर रहा हो तब शेष सदस्य (साथी) समालोचनात्मक Feedback दें।
- यह प्रयास करें कि छात्राध्यापक समालोचनात्मक Feedback किस तरह होता है, इसे समझ सकें।
- छात्राध्यापकों के प्रस्तुतीकरण प्रारूप में दिये गये बिंदुनुसार होने चाहिए।
- प्रत्येक 8 से 10 छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन देने का कार्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के एक शिक्षक प्रशिक्षक का होगा। ये इन छात्राध्यापकों के लिए पर्यवेक्षक (supervisor) होंगे। इनके द्वारा प्रत्येक चरण में प्रति सप्ताह कम से कम एक बार इस तरह कम से कम 8 बार प्रत्येक प्रशिक्षार्थी समूह का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जावेगा।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक, छात्राध्यापकों को शाला अनुभव कार्यक्रम पर आधारित मूल्यांकन प्रक्रिया को भली–भांति समझा देंगे ताकि छात्राध्यापक शाला अनुभव कार्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि को पूरी गंभीरता व सतर्कता से सम्पन्न कर सके।
- स्कूल अवलोकन के समय पर्यवेक्षक मुख्य रूप से निम्नांकित बिन्दुओं को देखेंगे–

1. कार्य की प्रगति सिर्फ यह नहीं कि कार्य ठीक से हो रहा है कि नहीं पर यह भी कि ऐसी योजना बन रही है जिसमें बच्चों की भागीदारी की अपेक्षा है, स्पष्ट लिखी जा रही है आदि।
2. प्रतिवेदन लेखन की प्रगति सिर्फ यह नहीं कि प्रतिवेदन लिखे जा रहे हैं या नहीं पर उनकी क्या गुणवत्ता है?

   स्कूल द्वारा दिया जा रहा सहयोग पर्याप्त है, उसमें कुछ बदलाव की आवश्यकता है, शाला के शिक्षकों के, प्रधान पाठक के क्या फीडबैक हैं आदि।
3. प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति।
4. शिक्षक के रुप में छात्राध्यापक की क्षमता का आकलन।

- पर्यवेक्षक के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक अवलोकन के समय शाला में ही छात्राध्यापकों से बात करें, उनके अनुभव, कठिनाइयों आदि को सुनें एवं उचित मार्गदर्शन दें।
- शालाओं के प्रधान पाठक प्रत्येक छात्राध्यापकों द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण लिखित रूप से रखेंगे जिसकी सहायता से छात्राध्यापकों का मूल्यांकन किया जा सके।
- छात्राध्यापक प्रधान अध्यापक से अनुशासन संबंधी रिपोर्ट प्राप्त करेंगे, जिसमें उनकी उपस्थिति/अनुपस्थिति, शाला में समय पर उपस्थिति, शाला छोड़ने के समय की जानकारी, कार्य व्यवहार तथा कार्य कुशलता जैसे – कक्षा प्रबंधन, अध्यापन, टी.एल.एम. का उपयोग, बच्चों के साथ खेल, शालेय कार्यो में योगदान आदि का मुख्य रूप से उल्लेख होगा।

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक यह सुनिश्चित करें कि शाला के शिक्षक छात्राध्यापकों के शिक्षण का अवलोकन करेंगे, प्रतिदिन रिपोर्ट भी लिखेंगे तथा छात्राध्यापकों से चर्चा भी करेंगे।
- निम्न बिंदुओं पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक टीप लिखेंगे :–

1. प्रशिक्षार्थी, शिक्षक व प्रधानाध्यापक के मध्य समन्वय की स्थिति।
2. शिक्षक के रूप में छात्राध्यापक की क्षमता का आकलन।
3. स्कूल के साथ संवाद की गुणवत्ता व स्कूल से मिल रहा सहयोग।
4. प्रोजेक्ट कार्य, पुस्तक समीक्षा, क्रियात्मक अनुसंधान आदि में क्रियान्वयन उचित प्रकार से हो पा रहा है या नहीं।
5. क्रियान्वयन में आने वाली समस्याएँ।

- सभी छात्राध्यापकों से Feed Back लेने हेतु माह के प्रथम तथा चतुर्थ शनिवार को अपनी संस्था में मीटिंग बुलायी जाए। प्रत्येक चरण में इस तरह की कम से कम 03 बैठकें आयोजित की जावें।
- प्रत्येक सप्ताह शाला में छात्राध्यापकों की प्रधान अध्यापक तथा मेंटर के साथ बैठक होगी। जिसमें सप्ताह के कार्यों की रिपोर्ट दी जावेगी एवं उसका व्यवस्थित दस्तावेजीकरण भी होगा। इसकी सूचना वे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक को भी देंगे, ताकि वे भी उसमें उपस्थित हो सकें।
- यदि विद्यालय में बहुकक्षा शिक्षण की स्थिति है तो पहले जानकारी प्राप्त करके एवं छात्राध्यापकों का बड़ा समूह भेजकर वहाँ दो छात्राध्यापकों को एक कक्षा पढ़ाने के अवसर प्रदान करें। एक छात्राध्यापक दिवस के प्रथम प्रहर में तथा दूसरा द्वितीय प्रहर में अध्यापन कार्य करें। इस दौरान जो छात्राध्यापक अध्यापन नहीं कर रहा होगा वह दूसरे छात्राध्यापक के अध्यापन का अवलोकन कर प्रपत्र तैयार करेगा। उस कालखण्ड में शाला द्वारा नियुक्त कक्षा शिक्षक भी छात्राध्यापक का अवलोकन करेगा। अवलोकन के बिन्दु निम्नांकित होंगे–

i. शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा बच्चों के समझ के स्तर की थी या नहीं?
ii. कक्षा शिक्षण हेतु गतिविधियों का प्रयोग किया गया? वे कितने उपयोगी थे?
iii. कक्षा स्तर के अनुकूल अध्यापन कार्य था या नहीं?
iv. बच्चों की सहभागिता का स्तर कैसा था?
v. क्या स्थानीय वातावरण को शामिल कर अध्यापन कार्य को बढ़ावा दिया गया था?
vi. किस प्रकार की सहायक सामग्री का उपयोग किया गया? वह विषयानुरूप एवं उपयोगी थी या नहीं ?

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा नियमित शाला अवलोकन के लिए टीम बनाकर उन्हें कार्य सौपना एवं मार्गदर्शन के लिए आदेश प्रदान करना।

3.10 प्रधान पाठकों के लिए निर्देशः–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा दो दिवसीय (01+01) उन्मुखीकरण बैठक में आवश्यक रूप से उपस्थित रहे तथा प्राप्त निर्देशों को नोट करें।
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रपत्रों का गंभीरता से अध्ययन करें व अपनी शंकाओं पर चर्चा कर आश्वस्त हो जावें और अपनी समझ बढ़ाने का प्रयास करें।
3. छात्राध्यापकों को कक्षा अध्यापन के लिए स्थान, सामग्री आदि सुनिश्चित करावे।
4. छात्राध्यापकों के समस्त कार्यों का नियमित देखरेख करें तथा उसके नोट तैयार करते रहें।

5. प्रधानपाठक छात्राध्यापक के सहयोगी मार्गदर्शक की भूमिका अदा करे तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के साथ समन्वय करें।

6. छात्राध्यापकों के अध्यापन की समीक्षा के लिए 02 सप्ताह में कम से कम 01 बार समीक्षा बैठकों का आयोजन करे।

7. छात्राध्यापक द्वारा छात्रों की प्रगति से संबंधित मूल्यांकन प्रपत्र को भरकर शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पास गोपनीय प्रतिवेदन के रूप में जमा करें।

8. अपने विद्यालय में संचालित कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों के कम से कम 10 सेट विद्यालय में रखना एवं छात्राध्यापकों को उपलब्ध कराना।

9. दैनिक शिक्षण योजना के प्रारूप की जानकारी देकर कम से कम 5 शिक्षण योजनाओं की तैयारी करके, कक्षा में अभ्यास कराना एवं उसमें सुधार के लिए कक्षा में समीक्षा कराना। कौन सी दक्षताएं विकसित हुई उसका अभ्यास कराकर समझ विकसित करना।

10. पाठ्यक्रम को समझने के लिए छात्रों को समूह बनाकर उनमें पाठ्यपुस्तकें प्रदान कर पाठ पढ़ने का निर्देश देना तथा उनसे चर्चा कराना–

    A. इन पाठों से बच्चे क्या सीखेगे?
    B. आप इस पाठ को कैसे सिखायेंगे?
    C. बच्चों एवं स्कूल की समझ के लिए बातचीत करना।
    (दैनिक शिक्षण अधिगम योजना का प्रारूप संलग्न)

11. विद्यालय की समस्त पंजियों एवं शालेय अभिलेखों का अवलोकन छात्राध्यापकों को करावें।

12. शाला के प्रधान पाठक अथवा कक्षा शिक्षक छात्राध्यापकों का औपचारिक परिचय करावें।

13. विद्यार्थियों एवं उनके पालकों का परिचय भी छात्राध्यापकों से करावें। ताकि छात्राध्यापक विद्यार्थियों की वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति से अवगत हो सकें। यह सुविधानुसार किया जाये।

14. शाला की समस्त समितियों से छात्राध्यापकों को परिचित करावें।

15. उक्त क्रियाकलापों का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण में गुणवत्ता किस प्रकार से लायी जावे इसकी समझ छात्राध्यापक में लाने का प्रयास किया जाय।

3.11 मूल्यांकन प्रक्रिया

- प्रत्येक चरण (08 सप्ताह) के बाद शिक्षक प्रशिक्षण संस्था आने पर छात्राध्यापकों को अपने सभी अभिलेख पूर्ण एवं व्यवस्थित करने हेतु 03 दिन का समय दिया जाए। तत्पश्चात् आगे उल्लेखित तरीके से उनका समूहवार मूल्यांकन किया जाए।

- मूल्यांकन में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के सभी शिक्षक प्रशिक्षक एवं संबंधित शालाओं के प्रधान पाठक सम्मिलित होंगे। प्रधान अध्यापक को समय एवं तिथि की सूचना देकर मूल्यांकन हेतु आमंत्रित करें।

- मूल्यांकन छात्रों के कार्य के रिकार्ड, मेन्टर व प्रधान पाठक की रिपोर्ट व छात्र के कार्य के प्रस्तुतीकरण के आधार पर होगा।

1. प्रत्येक चरण के बाद 03 दिवस शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में रिपोर्ट तैयार करने के उद्देश्य।

- छात्राध्यापकों द्वारा आंकड़ों को व्यवस्थित करना सीखना।
- छात्राध्यापकों द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण सीखना।
- छात्राध्यापकों द्वारा आंकड़ों से निष्कर्ष निकालना सीखना।
- छात्राध्यापकों द्वारा रिपोर्ट लिखना सीखना।

शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु मूल्यांकन योजना

अ. बाह्य मूल्याँकन

मूल्याँकन के आधार	प्रथम चरण (प्राथमिकशाला में किए गए कार्य के आधार पर)	द्वितीय चरण (उच्च प्राथमिक शाला में किए गए कार्य के आधार पर)	योग
शिक्षण अधिगम योजना	10	10	20
प्रोजेक्ट कार्य (प्रत्येक चरण में एक)	10	10	20
क्रियात्मक अनुसंधान, पाठ्य पुस्तक विश्लेषण	10	10	20
बच्चों के प्रोफाइल, केस स्टडी	10	10	20
रिफ्लेक्टिव जर्नल (प्रत्येक चरण में एक)	10	10	20
स्कूलों में संपादित बेस्ट प्रैक्टिसेस (प्रत्येक चरण में एक)	10	10	20
योग	60	60	120

टीप– यदि छात्राध्यापक ने प्रथम चरण में पाठ्य पुस्तक समीक्षा की हो, तो द्वितीय चरण में क्रियात्मक अनुसंधान करना होगा या इसके विपरीत भी किया जा सकता है। इसी प्रकार 05–05 बच्चों के प्रोफाइल अथवॉ 01–01 केस स्टडी को भी अलग – अलग चरणों में सम्पन्न किया जाना है।

ब. आंतरिक मूल्याँकन

मूल्यांकनकर्त्ता एवं मूल्यांकन के आधार	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	कुल अंक
1. प्रधान अध्यापक एवं मेंटर द्वारा – छात्राध्यापकों के व्यवहार, नियमितता, अनुशासन तथा छात्राध्यापकों के प्रत्येक चरण में 08 सप्ताह के कार्य के आधार पर।	20	20	40
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था पर्यवेक्षक द्वारा– छात्राध्यापकों के द्वारा प्रत्येक चरण में 08 सप्ताह के दौरान किए गए कार्य के प्रस्तुतीकरण पर, शिक्षण अधिगम योजना व शिक्षण एवं अन्य कार्य तथा बच्चों के साथ अंतः क्रिया, केस स्टडी, बच्चों के प्रोफाईल की रिपोर्ट के आधार पर	20	20	40
3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्था स्तर पर • प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रथम एवं द्वितीय चरण के शाला अनुभव कार्यक्रम में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण।	20	20	40
• अभ्यास शाला में किए गए शिक्षण कार्य, अवलोकन कार्य, प्रोजेक्ट, क्रियात्मक अनुसंधान,पाठ्य पुस्तक समीक्षा की चर्चा तथा अन्य कार्य			
कुल अंक	60	60	120

मूल्याँकन कैसे करेंगे?

अ. प्रधान अध्यापक व मेंटर 20 अंक में निम्नांकित बिन्दुओं पर ऑकलन करेंगे –

1. अध्यापन कार्य।
2. नियमितता।
3. शिक्षण पूर्व तैयारी।
4. तारतम्यता/क्रमबद्धता।
5. बच्चों की बैठक व्यवस्था की उपयुक्तता।
6. कक्षा की गतिविधियों में छात्र भागीदारी।
7. कितने बच्चे सीख पा रहे हैं।
8. शिक्षण के समय उचित भाषा का प्रयोग।
9. बच्चों से बातचीत का तरीका।
10. साथी छात्राध्यापकों के फीडबैक।
11. छात्राध्यापक द्वारा शिक्षण में स्थानीय परिवेश और भाषा का प्रयोग किया जा रहा था या नहीं?
12. छात्राध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण था या नहीं (बच्चे उसकी बात सुन रहे थे या नहीं)?
13. छात्राध्यापक का कक्षा–नियंत्रण एवं कक्षागत व्यवहार।
14. छात्राध्यापक का समुदाय से संबंध।
15. अनुपस्थित विद्यार्थियों को पुनः शाला में लाने के लिए उसके प्रयास।
16. बच्चों के गृहकार्य एवं कक्षाकार्य की (नोट बुक या कापियों की) नियमित जांच।

मूल्यांकन पत्रक–1

(आंतरिक मूल्याँकन)

प्रधानाध्यापक / मेंटर द्वारा प्रत्येक चरण में छात्राध्यापक का मूल्याँकन पत्रक (20 अंक)

चयनित शाला का नाम .....

क्र.	मूल्याँकन के बिन्दु	छात्राध्यापकों के नाम							
		.....	....	.....	.....	.....	.....	.....	.....
1	छात्राध्यापक की कक्षा में समय पर एवं पूरी तैयारी के साथ उपस्थिति।								
2	छात्राध्यापक द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री के उपयोग व बच्चों के कार्य पर फीडबैक।								
3	गतिविधियों की उपयुक्तता एवं बैठक व्यवस्था।								
4	बच्चों की समस्याओं क समाधान हेतु पालकों से संपर्क।								
5	छात्राध्यापक का बच्चे के साथ व्यवहार (आत्मीयता का स्तर)।								
6	बच्चों के सीखने में सफलता का स्तर।								
7	दैनिक शिक्षण योजना में आवश्यकतानुसार परिवर्तन (प्रतिदिन की समीक्षा के आधार पर)।								
8	बच्चों को सक्रिय सहभागी बना सकने में सफलता का स्तर।								
9	क्या बच्चे छात्राध्यापक को शिक्षक के रूप में स्वीकार करते थे?								
10.	अन्य गतिविधियों एवं शालेय कार्यों में सहभागिता।								
कुल योग (20 अंक)									

टीप– प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम 2 अंक निर्धारित हैं। प्रधान पाठक / शिक्षक, छात्राध्यापक के समग्र क्रियाकलापों को देखकर इन क्षेत्रों में मूल्यांकन करेंगे।

हस्ताक्षर एवं सील

हस्ताक्षर, मेंटर
नाम .....
मोबाईल नं. .....

प्रधान अध्यापक
नाम .....
मोबाईल नं. .....

ब) शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य / पर्यवेक्षक द्वारा छात्राध्यापक का मूल्यांकन पत्रक –

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के अकादमिक सदस्य द्वारा छात्राध्यापक के क्रियाकलापों का वर्ष भर अवलोकन कर छात्राध्यापक का मूल्यांकन अलग–अलग निम्नांकित क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जावेगा –

मूल्यांकन पत्रक–2

(आंतरिक मूल्यांकन)

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक द्वारा प्रत्येक चरण में छात्राध्यापक का मूल्यांकन पत्रक (20 अंक)

क्र	मूल्यांकन के बिन्दु	छात्राध्यापकों के नाम							
		....	....	....	....	....	....	....	....
1	शाला अनुभव पर छात्राध्यापक द्वारा प्रस्तुत किये प्रतिवेदन के आधार पर।								
2	छात्राध्यापक की शिक्षण अभिवृत्ति (व्यवहार) के आधार पर।								
3	शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में कुल 16 सप्ताह के दौरान पूर्ण किये गये कार्यों की प्रस्तुतीकरण के आधार पर।								
4	छात्राध्यापक द्वारा शाला अनुभव के कार्यो का स्वमूल्यांकन के आधार पर।								
	योग (20 अंक)								

टीप : प्रत्येक क्षेत्र के लिए अधिकतम 05 अंक निर्धारित हैं।

हस्ताक्षर एवं सील

(पी.एस.टी.ई. प्रभारी)

हस्ताक्षर पर्यवेक्षक

नाम .....

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर छात्राध्यापक के अध्यापन कार्यों का अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जायेगा। आकलन किन बिन्दुओं पर होना है इस बात की समझाइश एवं जानकारी आरंभ से ही व्यापक रूप से देना शुरू करें ताकि पूरे 96 दिनों में छात्राध्यापक इन्हें भली–भाँति समझ सकें। क्योंकि मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापक का शिक्षण कौशल बढ़ाना ही नहीं, अपितु यह है कि एक नया व्यक्ति, शिक्षक के रूप में स्वयं को कक्षा में भली भांति समायोजित कर स्वयं को आत्मविश्वास पूर्वक शिक्षण कार्य के लिए प्रस्तुत कर सके।

अतः आकलन से संबंधित आवश्यक दिशा–निर्देश छात्राध्यापकों को शुरू से ही दें, लेकिन आकलन इनमें से पाँच या छः गुणों के आधार पर ही करें। आशय यह है कि उपरोक्त बिन्दुओं में से कोई भी पाँच या छः विशेषताओं का छात्राध्यापक के शिक्षण में विकास होना आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक की प्रारंभिक, मध्य और अंतिम अवलोकन रिपोर्ट से भी इस तथ्य की पुष्टि होगी कि 16 सप्ताह के शाला– अनुभव द्वारा छात्राध्यापक में किन – किन गुणों का विकास हुआ है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पर्यवेक्षक भी अवलोकन प्रपत्र भरेंगे और इसका प्रारूप प्रधानाध्यापक के अवलोकन प्रपत्र के जैसा ही होगा।

मूल्यांकन पत्रक–3

स. संस्थान द्वारा किया जाने वाला मूल्यॉकन (प्रत्येक चरण में 20 अंक)

1. छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम एवं द्वितीय चरण के शाला अनुभव कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण।
2. अभ्यास शाला में किए गए शिक्षण कार्य, अवलोकन कार्य की चर्चा तथा अन्य कार्य।
3. प्रोजेक्ट, क्रियात्मक अनुसंधान,पाठ्य पुस्तक समीक्षा आदि पर किए गए कार्य की रिपोर्ट।
4. उपरोक्त कार्यों पर सवाल–जवाब।

अवलोकन प्रपत्र

शाला अनुभव कार्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक, अभ्यासपरक और अनुभव आधारित बनाने के प्रयास के तहत प्रत्येक स्तर पर हुए अनुभवों एवं क्रिया–कलापों की समुचित जानकारी एवं व्यवस्थित मूल्यांकन की दृष्टि से विभिन्न अवलोकन प्रपत्र विकसित किये गये हैं। जिनमें से कुछ छात्राध्यापको द्वारा, कुछ शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक–प्रशिक्षकों (पर्यवेक्षक) द्वारा और कुछ प्रधान पाठक अथवा स्कूल के शिक्षकों (मेंटर) द्वारा भरे जायेंगे।

इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि छात्राध्यापकों के अवलोकन स्तर का विस्तार होगा। उनकी दृष्टि तीक्ष्ण और वृहद् होगी और वह ऐसी अनेक छोटी–छोटी समस्याओं को भी देखना सीख सकेगें, जिन पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता। यह शिक्षण, शाला और छात्र तीनों के उन्नयन में सहायक होगा।

अवलोकन प्रपत्र निम्नलिखित बिन्दुओं से संबंधित होंगे –

1. व्यक्तिगत डायरी (प्रतिदिन स्कूल का कार्य पूरा होने के बाद लिखी जाए)।
2. बच्चों व शिक्षक की आपसी बातचीत एवं व्यवहार। छात्राध्यापक की विशेषता (जैसे संगीत, कथोपकथन, अभिनय, व्यापक चिंतन, संभाषण कौशल, चित्रकला आदि।)
3. समुदाय से चर्चा।
4. आत्मावलोकन (स्व–मूल्यांकन)।
5. कक्षा अवलोकन (सहयोगी के रूप में)।
6. प्रधानपाठक/शिक्षक द्वारा अवलोकन।
7. प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट।
8. दैनिक शिक्षण अधिगम योजना।
9. प्रधान अध्यापक के लिए प्रपत्र।

अध्ययन सामग्री

अध्ययन सामग्री क्या हो सकती है? इस पर गंभीरता से विचार करें और संदर्भ ग्रंथों का चयन करें। कुछ

पुस्तकों व सम्बंधित लेखों, अध्ययन सामग्री की सूची प्रस्तुत की जा रही है, परंतु यह पर्याप्त नहीं है। इसमें अपनी चर्चा के आधार पर अन्य पुस्तकें जोड़ें।

पुस्तक

1. 'बच्चे कैसे सीखते हैं?' — जॉन हॉल्ट
2. 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' — कृष्ण कुमार
3. तोतोचान — तेत्सुको कुरोयानागी
4. दिवा स्वप्न — गिजू भाई
5. महात्मा गांधी, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, जे. कृष्णमूर्ति, स्वामी विवेकानन्द एवं विनोबा भावे इनके शिक्षण विषयक विचार।

पत्रिका – प्राथमिक शिक्षक NCERT

1- खोजबीन
2- बुनियादी शिक्षा

लेख – 'अपने सीखने वालों को जाने'

'पर्यावरण सीखना माने क्या?'

'अंग्रेजी क्यों सीखें?'

'छात्र–शिक्षक सम्बन्ध'

'क्या समुदाय के साथ सम्बन्ध बनाना जरूरी है?'

'कक्षा व्यवस्था कैसी–कैसी?'

'पाठ्यपुस्तकों पर बातें (भाषा व गणित)'

'बच्चे भी बहुत कुछ जानते हैं।'

'बच्चे, खेल और सीखना'

'गतिविधि पर कुछ बातें'

मातृभाषा का अध्ययन

प्रान्त/देश के गौरवशाली इतिहास के पन्ने

उद्योग,कृषि, सामाजिक कार्य,शिक्षा ,साहित्य आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले के चरित्र। संदर्भ एन.बी.टी. की किताबें।

टीप– लेख शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के पुस्तकालय से प्राप्त करें।

परिशिष्ट क्र. 01

प्रथम चरण हेतु छात्राध्यापकों का 05 दिवसीय उन्मुखीकरण

समय दिन	10:30 से 12:00	12:00 से 1:15	1:15 से 2:00	2:00 से 3:15	3:15 से 4:30	पठन सामग्रियों का वितरण
पहला दिन	कक्षा 01 से 05 की विषयवार अधिगम सम्प्राप्ति एवं राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे के परिणामों पर चर्चा	शिक्षण अधिगम सामग्री का विषयवार परिचय	भोजन अवकाश	बच्चों के प्रोफाइल पर चर्चा	केस स्टडी कैसे तैयार की जाये, पर चर्चा	बच्चे कैसे सीखते है? बच्चें खेल और सीखना बच्चें बहुत कुछ जानते है? पठन सामग्री का वितरण व संदर्भित निर्देश
दूसरा	हिंदी विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा	बालमेला, पश्चिम भारत विज्ञान मेला आदि पर प्रतियोगिताओं पर चर्चा एवं अप्रवेशी व अनियमित उपस्थिति वाले विद्यार्थियों की समस्याएं		विभिन्न परियोजना तैयार करने के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा		'स्कूल और समाज' का वितरण
तीसरा	संस्कृत विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा	रिफ्लेक्टिव डायरी / जरनल तैयार करना		क्रियात्मक अनुसंधान कैसे तैयार किया जाये, पर चर्चा		क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है तथा प्रारंभिक गणित सीखने–सिखाने का एक परिपेक्ष्य में पठन सामग्री का वितरण
चौथा	अंग्रेजी विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा	विज्ञान विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा		पाठ्यपुस्तक समीक्षा कैसे की जाती है, पर चर्चा		''बच्चों क्यों नहीं पढ़ सकते'' 'सीखने की गलतियाँ या सीढ़ियाँ तथा बच्चे कैसे असफल होते है' का वितरण
पाँचवा	गणित विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा	सामाजिक विज्ञान विषय पर शिक्षण अधिगम योजना तैयार करना, पर चर्चा		समस्त प्रपत्रों एवं संबंधित मुद्दों पर चर्चा		

परिशिष्ट क्र. 02

द्वितीय चरण हेतु छात्राध्यापकों का 03 दिवसीय उन्मुखीकरण

समय दिन	10:30 से 12:00	12:00 से 1:15	1:15 से 2:00	2:00 से 3:15	3:15 से 4:30	पठन सामग्रियों का वितरण
पहला दिन	हिंदी का पाठ प्रदर्शन	हिंदी विषय में , शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग	भोजन अवकाश	संस्कृत का पाठ प्रदर्शन	संस्कृत विषय में, शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग	बच्चे कैसे सीखते है? बच्चें खेल और सीखना बच्चें बहुत कुछ जानते है? पठन सामग्री का वितरण व संदर्भित निर्देश
दूसरा	विज्ञान का पाठ प्रदर्शन	विज्ञान विषय में, शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग		गणित का पाठ प्रदर्शन	गणित विषय में, शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग	'स्कूल और समाज' का वितरण
तीसरा	अंग्रजी का पाठ प्रदर्शन	अंग्रेजी विषय में, शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग		सामाजिक विज्ञान का पाठ प्रदर्शन	सामाजिक विज्ञान विषय में, शिक्षण शास्त्र एवं मल्टीमीडिया का उपयोग	क्या बच्चा वास्तव में गणित जानता है तथा प्रारंभिक गणित सीखने–सिखाने का एक परिपेक्ष्य में पठन सामग्री का वितरण

प्रपत्र–1

व्यक्तिगत डायरी

द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापक, उनके प्रथम वर्ष के अवलोकन के आधार पर शाला को और नजदीक से देखते हुए नियमित रूप से अपने अनुभवों को लिखें। (20 दिवसीय)

प्रपत्र–2

बच्चों से बातचीत

शाला लगने के पूर्व, अवकाश में एवं खेल के मैदान में बच्चों से विभिन्न बिंदुओं पर बातचीत की जा सकती है। जैसे–

1. क्या आपको स्कूल आना अच्छा लगता है? कौन–कौन से विषय पढ़ते हैं? कौन सा विषय आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इसी तरह आप उनके मनपसंद शिक्षक के बारे में पूछ सकते हैं।
2. क्या शाला गणवेश (यूनीफार्म) में आना पंसद है ?
3. उनकी मनपसंद पुस्तक कौन सी है? क्यों है ?
4. उनके मित्रों के विषय में पूछ सकते हैं।
5. उनके मनपसंद खेल के बारे में पूछ सकते हैं।
6. शाला से उनका घर कितनी दूर है ? वे शाला कैसे आते हैं ?
7. भविष्य में वे क्या–क्या करना चाहते हैं ?
8. प्रधानाध्यापक/अध्यापक की कौन सी बात अच्छी लगती है ? (20 दिवसीय)

प्रपत्र–3

शाला के प्रधान अध्यापक द्वारा किये गए कार्यों पर छात्राध्यापक की रिपोर्ट

शाला के प्रधान अध्यापक द्वारा किये गए कार्यों पर छात्राध्यापक स्वयं एक रिपोर्ट तैयार करें। (20 दिवसीय)

प्रपत्र–4

शाला का समुदाय के साथ संबंध

1. विद्यालय का नाम
2. गठित समितियाँ कौन–कौन सी हैं व क्या–क्या काम करती हैं?

   इनकी बैठक कब–कब होती है? बैठक में किस तरह की बातचीत होती है? (किन्हीं दो में बैठकर देखें) कितने लोग उपस्थित हैं? क्या बैठक समय पर शुरू हुई? बैठक में कितने लोग बोले? क्या चर्चा केन्द्रित थी? बैठक कितने समय चली? क्या कुछ लोग काफी अधिक बोले?
3. अभिभावकों की स्कूल के बारे में राय, शिक्षकों के बारे में राय।

प्रपत्र – 5
स्व–मूल्यांकन (एक शिक्षक के रूप में)

1. छात्राध्यापक का नाम : .....
2. विद्यालय का नाम : .....
3. कक्षा ..... विषय.....

   प्रकरण..... .....

   दिनांक ..... कुल छात्र संख्या .....

   उपस्थिति.....

क्या कक्षा निम्न बिन्दुओं के योजनानुसार चली? आप बच्चों से भी बातचीत कर सकते हैं कि आपके द्वारा पढ़ाना उनको कैसा लगा, कहां उनको कुछ भी समझ नहीं आया।

- क्या पढ़ाया ?
- कहाँ लगा कि उससे भी बेहतर किया जा सकता था? क्या बेहतर किया जा सकता था ?
- क्या बच्चों पर कभी गुस्सा आया या डांटना पड़ा, यदि हां तो क्यों ?
- यदि आपको ऐसा नहीं करना पड़ा तो बच्चों को कक्षा में कैसे बांधे रखा ?
- क्या कक्षा योजना ठीक बनी थी ?
- क्या ज्यादातर बच्चे कक्षा में सचेत रूप से भाग ले रहे थे ?
- क्या बच्चों को भागीदारी का मौका था ?
- क्या बच्चों को कक्षा में मजा आया ?
- क्या मैंने अपने अनुभव के बारे में दूसरे साथियों से बातचीत की ?
- योजना बनाई? उसमें परिवर्तन क्यों व क्या किया ?
- क्या आपको मजा आया? कारण व उदाहरण के साथ लिखें।
- क्या आपको लगता है कि अधिकांश बच्चे समझ पाएं? क्या आधार है ऐसा लगने का ?

प्रपत्र – 6
कक्षा अवलोकन (सहयोगी के रूप में)

छात्राध्यापक का नाम .....

विद्यालय का नाम .....

कक्षा..... विषय ..... प्रकरण.....दिनांक.....

- सहयोगी छात्राध्यापक को आपके द्वारा कक्षा अवलोकन उपरान्त क्या सुझाव दिए गए ?
- सुझाव देने के क्या कारण थे।
- सुझाव के आधार पर सहयोगी के शिक्षण में हुए परिवर्तन।
- सहयोगी छात्राध्यापक को आपके द्वारा क्या–क्या सहयोग दिया गया ?

प्रपत्र–7
शिक्षक (मेंटर)/प्रधानपाठक द्वारा अवलोकन

छात्राध्यापक का नाम ..... विद्यालय का नाम .....

कक्षा ..... अध्यापन विषय ..... दिनांक .....

1. क्या छात्राध्यापक शाला में समय पर उपस्थित होते थे ?

2. क्या छात्राध्यापक कक्षा में पूर्व तैयारी के साथ आते थे ?
3. क्या उनकी पूर्व तैयारी अध्यापन के अनुकूल थी ?
4. क्या अध्यापन कार्य दैनिक अध्यापन योजना के अनुरूप था ? या नहीं ।
5. वास्तविक अध्यापन में कितना अंतर था और अंतर होने का कारण क्या था ?
6. शिक्षक ने छात्राध्यापक को कौन–कौन से सुझाव दिए ?
7. शिक्षण के दौरान छात्रों की कैसी सहभागिता थी ?
8. शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन कैसा था ?
9. शिक्षण प्रक्रिया हेतु प्रयुक्त TLM की उपयुक्तता क्या थी ?
10. छात्राध्यापक द्वारा अधिगम संप्राप्ति एवं सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने हेतु कौन सी गतिविधियां प्रयुक्त की गयी ?
11. क्या प्रयुक्त भाषा कक्षा के बच्चों के स्तर के अनुसार थी ?
12. क्या शिक्षण विधि बच्चों के स्तर के अनुरूप थी ?
13. क्या छात्राध्यापक द्वारा छात्रों के दैनिक जीवन से विषय वस्तु को सम्बन्धित करके पढ़ाने की कोशिश की गई ?
14. समय–समय पर क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता था ?
16. अनुशासन एवं निर्देशों के पालन में सजगता थी ?
17. शाला संचालन में सहयोग।
18. पाठों का शिक्षण कार्य।
19. अन्य क्रियाकलापों में सहभागिता।
20. समग्र अभिमत –
    - बच्चों की समझ
    - आत्म विश्वास
    - अभिव्यक्ति कौशल
    - संप्रेषण कौशल
    - समस्या समाधान कौशल आदि।

प्रपत्र – 8

प्रधानाध्यापक के साथ समीक्षा बैठक की रिपोर्ट

छात्राध्यापक का नामः– .....

1. छात्राध्यापक को हुई कठिनाई के किन बिंदुओं पर प्रधानाध्यापक से सुझाव प्राप्त हुए ?
2. छात्राध्यापक को प्रधानाध्यापक से किन बिंदुओं पर प्रशंसा प्राप्त हुई ?
3. आपसी चर्चा द्वारा कौन से नए विचार उत्पन्न हुए ?
4. समीक्षा बैठक का परिणाम।
5. अगली समीक्षा बैठक की चर्चा के बिंदु।

प्रपत्र – 9

दैनिक शिक्षण अधिगम योजना

शाला का नामः .....

प्रशिक्षार्थी का नाम .....

कक्षा ..... विषय .....

पाठ का नाम ..... दिनाँक .....

1. शिक्षण के पूर्व

- क्या सिखायेंगे (कौशल जो विकसित किये जायेंगे/उद्देश्य।) ?

  .....
  .....
  .....
  .....

- कैसे सिखायेंगे (गतिविधि/शिक्षण विधि) ?

  .....
  .....
  .....
  .....
  .....
  .....

- सहायक सामग्री जो उपयोग में लायेंगे।

  .....
  .....
  .....

2. शिक्षण के दौरान

- बच्चों ने क्या सीखा ?

  .....
  .....
  .....

- कितने बच्चों ने सीखा ?

  .....

3. शिक्षण के पश्चात्

- अध्यापन में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

  .....
  .....
  .....

- उक्त आधार पर शिक्षण योजना में क्या परिवर्तन करेंगे ?

  .....
  .....
  .....

प्रपत्र – 10

बच्चों का प्रोफाइल

(1) बच्चे का नाम ..... (2) पिता का नाम .....

(3) माता का नाम ..... (4) जन्मतिथि .....

(5) भाई/बहन की जानकारी–

भाई की संख्या ..... बहन की संख्या .....

बच्चे का भाई बहनों में क्रमांक .....

भाई एवं बहनों की शैक्षणिक स्थिति .....

(6) पिता की जानकारी – शिक्षा – .....

व्यवसाय – .....

(7) माता की जानकारी– शिक्षा – .....

व्यवसाय – .....

(8) ग्राम का नाम – .....

(9) एकल/संयुक्त परिवार (पिता के स्तर पर) – .....

(10) उपस्थिति नियमित/अनियमित – .....

(11) कक्षोन्नति में रुकावट हुई हो तो उल्लेख करें – .....

(12) बच्चे की शारीरिक समस्या (यदि हो तो) – .....

(13) बच्चे के घर से शाला की दूरी (लगभग) – .....

शाला की दूरी अधिक हो तो आवागमन का साधन .....

(14) बच्चे की शैक्षिक विकास हेतु शाला के अलावा पालक के द्वारा की गई अन्य व्यवस्था

हाँ तो उल्लेख करें – .....

(15) बच्चे को शाला में पढ़ने आना कैसा लगता है .....

(16) बच्चा आगे चलकर क्या बनना चाहता है .....

(17) बच्चे का शौक (Hobby) - .....

(18) बच्चे के कितने मित्र हैं – शाला में ..... शाला के बाहर .....

(19) बच्चे को कौन सा विषय सर्वाधिक अच्छा लगता है – (भाषा/गणित/पर्यावरण/अंग्रेजी) .....

(20) खेलकूद/सांस्कृतिक एवं अन्य पाठ्यसामग्री क्रियाकलाप में भाग लेता है अथवा नहीं।

.....

प्रपत्र 11
पाठ्य सहगामी क्रिया

(1) छात्राध्यापक का नाम : .....

(2) शाला का नामः .....

(3) शाला के कुल विद्यार्थियों की संख्या :

छात्र : ..... छात्रा : ..... योग .....

(4) सांस्कृतिक, साहित्यिक,खेलकूद से संबंधित विद्यार्थियों की सूची (क्षेत्रवार) बनाने हेतु आपके द्वारा पूर्व में किया गया कार्य

.....

(5) बिंदु क्रमांक (4) से प्राप्त जानकारी

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

खेलकूद कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

(6) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य विस्तृत विवरण देवें।

.....

.....

.....

(7) साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य (विस्तृत विवरण देवें)।

.....

.....

(8) खेलकूद में भाग लेने हेतु बच्चों को तैयार करने हेतु किए गए कार्य (विस्तृत विवरण देवें)

.....

.....

(9) बिंदु क्रमांक 6, 7 व 8 में आपने किस किसका सहयोग लिया ?

.....

(10) बिंदु क्रमांक 6, 7, 8 के अंतर्गत किए गए कार्यो के पश्चात् रुचि लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या–

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

खेलकूद कार्यक्रमों से संबंधित – छात्र ..... छात्रा ..... योग .....

(11) आपके द्वारा शाला में कौन–कौन से कार्यक्रम आयोजित किए गए है ?

सांस्कृतिक कार्यक्रम .....

साहित्यिक कार्यक्रम .....

खेलकूद संबंधी .....

(12) विभिन्न कार्यक्रमों में बच्चों को भाग लेने हेतु आपके द्वारा दिये गए प्रयासों के संबंध में –

विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया .....

शाला के शिक्षकों/साथी छात्राध्यापकों की प्रतिक्रिया

.....

(13) आगामी वर्ष यदि आपको इसी प्रकार का कार्य सौंपा जाए तो आप किन–किन बिंदुओं पर विशेष ध्यान देगें।

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

प्रपत्र 12

प्रधान अध्यापक की रिपोर्ट

इस प्रपत्र को प्रधानाध्यापक द्वारा भरा जावेगा। इस प्रपत्र का उद्देश्य छात्राध्यापक की शिक्षण प्रक्रिया एवं उसकी अन्य गतिविधियों तथा कार्यशैली का अवलोकन करना है।

छात्राध्यापक का नामः– .....

अध्यापित कक्षा का नाम– .....

छात्राध्यापक की कक्षा के बच्चों से समायोजन की क्षमता–

.....

छात्राध्यापक के कक्षा अध्यापन का तरीका –

.....

प्रयुक्त गतिविधियाँ–

.....

प्रयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री का विवरण –

- छात्रों की रूचि एवं सीखने में उत्तरोतर क्या प्रगति हुई?

.....

- क्या बच्चे छात्राध्यापक की शिक्षण प्रक्रिया से संतुष्ट हैं?

.....

- क्या छात्राध्यापक के, अन्य शिक्षकों, बच्चों, पालकों (बच्चों के माता–पिता), गाँव वाले, के साथ व्यवहार सौहार्द्रपूर्ण है?

.....

- छात्राध्यापक द्वारा शाला की अन्य गतिविधियों में सहभागिता कैसी रही?

.....

- छात्राध्यापक के लिए प्रधानाध्यापक का अभिमत–

.....

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर

Appendix

प्रोजेक्ट कार्य

छात्राध्यापकों को प्रत्येक चरण में 8 सप्ताह के कार्यक्रम के दौरान एक–एक (कुल दो) प्रोजेक्ट कार्य भी करना है। इस प्रोजेक्ट की तैयारी भी संस्थान में की जाएगी। प्रोजेक्ट कार्य के लिए 30 कालखण्ड के तुल्य समय निर्धारित किया गया है।

प्रोजेक्ट का मतलब है किसी एक विषय/समस्या को चुनकर उस पर गहराई से काम करना जो भी डेटा आपने एकत्रित की है उसको व्यवस्थित करना और फिर रिपोर्ट तैयार करना।

प्रोजेक्ट कार्य का उद्देश्य

पाठ्यक्रम में कई जगहों पर बच्चों के भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन सीखने–सिखाने के बारे में बातचीत की गई है। प्रोजेक्ट रखने का उद्देश्य है कि छात्राध्यापक को बच्चों के साथ अन्तःक्रिया करने और उन्हें गहराई से समझने का मौका मिले। साथ ही साथ समझने का अवसर भी मिले कि बच्चे गणित/भाषा/पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएं कैसे सीखते हैं। वह अपने कार्य को समझ पाएं, विश्लेषित कर पाएं व उसका आकलन कर पाएं।

कैसे करेंगे?

1. सबसे पहले आपको क्षेत्र चुनना पड़ेगा। इससे तात्पर्य यह है कि आपको यह सोचना होगा कि आप क्या पता करना चाहते हैं?

   उदाहरण के लिए–

   (i) बच्चों को जोड़ सीखने में क्या कठिनाई होती है?

   (ii) समुदाय में कौन–कौनसी कारीगरी के कार्य होते हैं और ये कौशल कैसे सीखते हैं?

   (iii) कक्षा 3 व 4 के बच्चों की बातचीत को रिकॉर्ड करना और देखना कि उसमें उनकी मातृभाषा की क्या झलक मिलती है।

   (iv) लड़कियों की शिक्षा पर कक्षा के छात्र–छात्राओं, अभिभावकों, शिक्षकों तथा स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों के विचारों का संकलन तथा इस आधार पर उस गाँव के लड़कियों की शिक्षा प्रोत्साहन की योजना बनाना।

   (v) कम से कम 5 पालकों से (महिला व पुरूष से अलग–अलग बातचीत करके) शिक्षा से उनकी अपेक्षा समझना, अपने बच्चों की खास बातें, व कमजोरियों को उनसे समझना।

2. प्रोजेक्ट प्रस्ताव बनाना– प्रोजेक्ट के प्रस्ताव में निम्नलिखित बातें शामिल कर सकते हैं।

   प्रोजेक्ट की विस्तृत योजना बनाना जिसमें –

   (i) प्रोजेक्ट का विषय तथा यह विषय अपने कार्य करने हेतु क्यों चुना उसके बारे में एक संक्षिप्त नोट लिखा जाएगा।

   (ii) किन लोगों के साथ बातचीत करेंगे (जैसे– माता–पिता, बच्चे, समुदाय के अन्य व्यक्ति, शिक्षक) क्या बातचीत करेंगे? अथवा स्कूल की किस कक्षा के साथ काम करेंगे, किस विषय पर, बच्चों के साथ कैसे अन्तर्क्रिया करेंगे, क्या गतिविधियां होगी इत्यादि सम्मिलित होगा।

(iii) आप जिन बच्चों/लोगों के साथ काम करेंगे उनकी पृष्ठभूमि– जैसे– उम्र, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य आदि।

(iv) प्रस्ताव/योजना बनाने के बाद उसे शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में सभी के सामने प्रस्तुत करें और शिक्षक व साथियों द्वारा दिये गये सुझाव व विचारों को ध्यान में रखकर अंतिम रूप दें।

3. प्रोजेक्ट पर काम करना

(i) इसमें आप अपने प्रोजेक्ट संबंधित सारे कार्यों का ब्योरा नियमित रूप से अपने दैनिक प्रतिवेदन में दर्ज करें। आप द्वारा की गई प्रत्येक गतिविधि तथा अपने सारे अवलोकनों को दैनिक प्रतिवेदन में लिखें। साथ ही विषय के सन्दर्भ में व्यक्तियों के साथ जो भी आपके अनुभव हुए हैं उनको भी दर्ज करें।

(ii) यह भी हो सकता है कि आपके द्वारा की जा रही गतिविधि की दिशा या निष्कर्ष आपकी उम्मीद के अनुरूप नहीं आ रहे हैं। इससे आपको चिंतित नहीं होना है। आपको ईमानदारी से अपने अनुभव/अवलोकन लिखने चाहिए तथा यह समझने की कोशिश करना चाहिए कि वह गतिविधि क्यों असफल रही।

(iii) अगर प्रोजेक्ट करते वक्त बीच में कभी आपको अपने प्रोजेक्ट के उद्देश्य बदलने की जरूरत महसूस हो, तो आप कर सकते हैं साथ ही इसे आप अपनी दैनिक प्रतिवेदन में लिखे। अगले चरण में आपको इससे मदद मिल सकती है।

4. रिपोर्ट तैयार करना

प्रोजेक्ट पूरा हो जाने पर आपको इसकी रिपोर्ट लिखनी होगी जो सरल भाषा में स्पष्ट व सटीक ढंग से हो। रिपोर्ट से यह मालूम हो सके कि आपको प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए किन–किन स्थितियों से जाना पड़ा और कितना श्रम करना पड़ा। रिपोर्ट में निम्नलिखित बातें शामिल करना चाहिए।

(i) प्रोजेक्ट का लक्ष्य/उद्देश्य, उसे चुनने के पीछे कारण, संक्षिप्त में लिखें। प्रोजेक्ट की प्रस्तावना लिखते वक्त आप यह काम कर चुके होंगे पर यहाँ यह विवरण थोड़ा विस्तृत होगा।

(ii) जिन लोगों के साथ आपने काम किया है उनके बारे में जानकारियाँ – शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि आदि।

(iii) अध्ययन का जो तरीका अपनाया, उसकी संक्षिप्त रूपरेखा। आपके परिणामों के संबंधित सामग्री और आंकड़े जैसे जिन खेलों, टेस्ट, तथ्यों आदि का उपयोग किया हो।

(iv) आपके अवलोकन/परिणामों का विश्लेषण।

(v) आपके निष्कर्ष।

(vi) प्रोजेक्ट कार्य पूर्ण करने के फलस्वरूप आपने सीखने–सिखाने के बारे में क्या सीखा। रिपोर्ट के साथ उन सभी खेलों/उपकरणों/प्रश्न आदि की प्रतियां लगायें जिनका उपयोग प्रोजेक्ट के दौरान किया हो।

(vii) आपके प्रोजेक्ट की सफलता व आपकी सफलता का ऑकलन इस बात पर होगा कि आपने कितनी स्पष्टता व सच्चाई से अपने कार्य का आलोचनात्मक अवलोकन व विश्लेषण किया है। साथ ही

आपने अपने अनुभवों का किस प्रकार दस्तावेजीकरण किया है।

(viii) अपने परियोजना ;चतवरमबजद्ध में सहायता करने वाले व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करें।

प्रोजेक्ट के संदर्भ में छात्राध्यापक के लिए निर्देश –

(i) प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने से पहले, अपने शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक को प्रोजेक्ट प्रस्ताव की जानकारी देवें एवं आवश्यकतानुसार चर्चा करें।

(ii) शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं कि किस तरह का प्रोजेक्ट करें और किस ढंग से आगे बढ़ें इसलिए उनसे सम्पर्क करें।

(iii) प्रोजेक्ट के काम के दौरान आप हर चरण में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक से सलाह–मशविरा कर सकते हैं इसके लिए परस्पर सुविधाजनक समय तय कर लें।

प्रोजेक्ट के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षक के लिए निर्देश –

(i) छात्राध्यापक को प्रोजेक्ट चुनने एवं आगे बढ़ने में मदद करें।

(ii) प्रोजेक्ट के लिए उपयोगी किताबें, लेख आदि सामग्री सुझाये एवं उपलब्ध करायें।

(iii) प्रोजेक्ट के दौरान छात्राध्यापकों को आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए तैयार रहे। इसके लिए परस्पर सुविधाजनक समय तय कर लें।

प्रारूप

प्रोजेक्ट कार्य

(1) छात्राध्यापक का नाम : .....

(2) शाला का नाम : .....

(3) कक्षा : .....

(4) छात्र संख्या : .....

(5) विषय : .....

(6) प्रकरण : .....

(7) भूमिका/प्रस्तावना : .....

(8) प्रकरण के चुनाव का कारण/आवश्यकता : .....

(9) उद्देश्य : .....

(10) क्रियान्वयन की विधि (संक्षेप में) : .....

(11) अवलोकन तथा आँकडों का एकत्रीकरण : .....

(12) आँकड़ों का विश्लेषण : .....

गणना व व्याख्या

(13) संभावित अनुवर्ती कार्यवाही

(14) प्रोजेक्ट पूरा करने में किनके–किनके सहयोग लिये गये।

.....

(15) प्रोजेक्ट के परिणाम .....

(16) प्रोजेक्ट के पूर्ण होने के उपरांत आने वाले परिवर्तन .....

(17) इस प्रोजेक्ट से आपने क्या–क्या सीखा (विस्तृत रूप से लिखें) .....

प्रारूप

'केस स्टडी'

(A) कवर पेज शीर्षक, नाम, दिनांक

1. शीर्षक :– केस स्टडी रिपोर्ट
2. छात्राध्यापक का नाम
3. चयनित शाला का नाम व पता
4. प्रस्तुति दिनाँक

(B)

1. अनुक्रमणिका (विषयवस्तु की पृष्ठ संख्या सहित सूची)
2. छात्र/छात्रा का विवरण :– केस स्टडी हेतु चयनित विद्यार्थी की व्यक्तिगत जानकारी

- विद्यार्थी का नाम –
- जन्मतिथि –
- पुरूष/महिला/अन्य–
- पालक/अभिभावक के नाम :–

  पिता–

  माता–

  पालक–

- अध्ययरत कक्षा –
- पता –
- अभिभावक/माता–पिता की मासिक आय –
- पिता की शैक्षणिक/व्यावसायिक योग्यता–
- माता की शैक्षणिक/व्यावसायिक योग्यता–
- भाई..... बहन.....
- भाई–बहन के बीच विद्यार्थी का क्रम–

(C) प्रस्तावना :–

(D) केस स्टडी का उद्देश्य :–

(E) प्रस्तावना :– चयनित केस स्टडी के चयन करने के सामान्य मुद्दों का स्पष्ट उल्लेख। (सामान्य उद्देश्य)

(F) केस स्टडी के लिए चयनित विद्यार्थी विशेष के चयन करने के स्पष्ट कारणों का उल्लेख करें। (विशिष्ट उद्देश्य)

(G) समस्या की प्रकृति–संज्ञानात्मक / शैक्षिक / सहशैक्षिक / नियमितता / समय बद्धता आदि।

जैसे– उपस्थिति, भावना, मनोरंजन, खेलना, बोलना, लेखन, सुनना, पढ़ना आदि।

(H) समस्या के संभावित कारण

(I)
- तथ्यों का संकलन
- तथ्यों का विश्लेषण
- जाँच परिणाम

(J) उपकरण एवं प्रयुक्त प्रविधि –

(K) निष्कर्ष का विस्तृत विवरण –

(L) आगामी कार्य योजना – प्राप्त जाँच परिणाम के आधार पर प्रस्तावित कार्ययोजना।

मेंटर शिक्षक का हस्ताक्षर | छात्राध्यापक का हस्ताक्षर

प्रधानपाठक का हस्ताक्षर | सुपरवाइजर का हस्ताक्षर

प्रारूप

रिफ्लेक्टिव जरनल/रिफ्लेक्टिव डायरी

1. गतिविधि का शीर्षक

2. गतिविधि के उद्देश्य :–

- आप अपनी गतिविधि कैसे संपादित करेंगे ?
- गतिविधि के संपादन हेतु आपके विचार।
- समस्या जिसका आपने सामना किया ?
- आगामी समय में इसे कैसे बेहतर बनायेंगे ?

3. विवरण :– समस्या का टीप अथवा हल बताए बिना यथावत रूप से संक्षिप्त विवरण।

4. प्रश्नावली :–

- कौन सी समस्या / प्रकरण प्रस्तुत किया जा रहा है?
- क्या अवलोकन किया गया ?
- अवलोकन के समय यदि कुछ उल्लेखनीय हो तो उसका विवरण दें।

5. चिंतनशील (reflection) अवलोकन का विवरण :–

- पूरे अवलोकन सत्र के लिए आपके अनुभव, विचार का विश्लेषण।

6. संभावित प्रश्न

- क्या आपने कुछ नया कौशल सीखा? यदि हों तो व्याख्या करें।

प्रारूप

क्रियात्मक अनुसंधान

प्रस्तावना

- अनुसंधान का उद्देश्य
- अनुसंधान के प्रश्न
- आवश्यक परिभाषाएँ
- अनुसंधान का महत्व

अनुसंधान की समीक्षा –

- विश्लेषण के पाँच संदर्भ
- सारांश (अनुसंधान का)

विधि–

- अनुसंधान करने की मुख्य
- प्रविधि – तथ्य संकलन के उपकरण
- स्थान एवं प्रतिभागी
- अनुसंधान की योजना
- तथ्यों का विश्लेषण
- विधि का सारांश

संकलन :–

- प्राप्तियाँ
- तथ्य
- प्रश्नों का पुनः प्रस्तुतिकरण व परिणाम
- प्राप्तियों का सारांश

विवेचना

- निष्कर्ष
- उपयोगिता
- अनुसंधान के गुण व सीमाएँ
- अंतिम निष्कर्ष

संलग्नक

- विभिन्न प्रश्नावलियाँ, सर्वेक्षण आदि
- संदर्भ ग्रंथ की सूची

प्रारूप

पाठ्यपुस्तक विश्लेषण

(A) पाठ्यवस्तु की सामान्य जानकारी

1. पाठ्यवस्तु का शीर्षक
2. विषय
3. कक्षा
4. प्रकाशक का नाम
5. लेखक समूह
6. कुल पृष्ठों की संख्या

(B) पाठ्यवस्तु एवं शिक्षण शास्त्र

पाठ्यवस्तु

1. पाठ्यपुस्तक में संकलित विषयवस्तु की प्रकृति कैसी है? क्या उसमें किसी विशेष विधि का प्रयोग किया गया है?
2. विषय के पढ़ाने के विशिष्ट/सामान्य उद्देश्यों को पाठ्यवस्तु किस प्रकार पूर्ण करती हैं? अपने उत्तर की पुष्टि उदाहरण से कीजिये।
3. पाठ्यवस्तु को आप किस परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम के लिए पर्याप्त और सटीक मानते है? अपना आधार इस पक्ष में प्रस्तुत कीजिए।
4. अधिगम बिन्दुओं को सीखने में पाठ्यवस्तु किस प्रकार सहायक है, अधिगम संप्राप्ति के संदर्भ में समझाइये।
5. पाठ्यवस्तु में दी गई अवधारणाएँ/दत्त कार्य/गतिविधियाँ निम्नांकित अकादमिक और सामाजिक कौशलों के विकास में किस प्रकार सहायक है :–
   - ज्ञानात्मक कौशल
   - दूसरों की भावनाओं के प्रति व उनके साथ किये जाने वाले व्यवहार के प्रति संवेदनशीलता
   - तार्किक/सार्थक दृष्टिकोण हेतु
   - सीखने की क्षमता का विकास करता है अथवा नहीं ?
   - दैनिक जीवन के लिए उन्हे सक्षम और तैयार करता है ?
6. क्या पाठ्यवस्तु राज्य/राष्ट्र के विभिन्न भागों के विद्यार्थियों के अनुरूप तैयार की गई है ?
7. वैश्विक, राष्ट्रीय व स्थानीय स्तर के उदाहरण/घटनाओं को पाठ्यवस्तु में किस प्रकार शामिल किया गया है? और वे पाठ्यवस्तु/पाठ इत्यादि के प्रकरण/उपप्रकरण के लिए किस प्रकार उचित है?
8. पाठ्यवस्तु की अवधारणओं में क्या स्थानीय अवधारणों को मिलाया गया है ? हाँ/नहीं। अपने उदाहरणों से समझाइये।
9. क्या स्थानीय/राज्य के विशिष्ट मुद्दों को पाठ्य वस्तु में शामिल किया गया है ? यदि हाँ तो विवरण दीजिये।
10. क्या पाठ्यवस्तु विश्लेषण, क्रियात्मक सोच को बढ़ावा देती है? यदि हाँ तो विवरण दीजिए।

11. क्या पाठ्यवस्तु में प्रयोग की गई भाषा स्थानीय/राज्यीय परिवेश पर आधारित है? यदि हाँ तो विवरण दीजिए।

12. क्या पाठ्यपुस्तक इस प्रकार प्रस्तुत/तैयार की गई है कि वह विद्यार्थी को सक्रिय रह कर सीखने का अवसर प्रदान करती है, साथ ही गहन चिंतन व निर्णयात्मक दृष्टि प्रदान करती है? हाँ/नहीं। अपने पक्ष में उदाहरण दीजिए।

13. क्या दिये गये उदाहरण व पाठ्यवस्तु स्वप्रेरित करने व स्वअधिगम के अवसर प्रदान करती है।

शिक्षण शास्त्र

1. क्या पाठ्यवस्तु में अंतरसहगामी गतिविधियों का वर्णन है? यदि हाँ तो उनका विवरण दीजिए, यदि नहीं तो गतिविधियाँ सुझाइये।

2. क्या पाठ्यपुस्तक में सभी अवधारणाओं के साथ गतिविधियाँ प्रदान की गई है? हाँ/नहीं अपने पक्ष में उदाहरण दीजिए।

3. क्या पाठ्यपुस्तक में आप यह पाते है, कि विभिन्न अवधारणओं को समझाते समय जो उदाहरण दिये गये हैं, उन्हें विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन से जोड़ पायेंगे? यदि हाँ तो ऐसे कुछ उदाहरण दीजिए।

4. क्या पाठ के प्रारंभ में ही पाठ की मुख्य बातें/उद्देश्य आदि स्पष्ट परिलक्षित होते हैं ?

5. क्या शिक्षकों के लिए विशेष दिग्दर्शिका/प्रशिक्षण के आयोजन का सुझाव इस पाठ्यपुस्तक को पढ़ाने के लिए दिया गया है? यदि हाँ तो विवरण दीजिए।

6. क्या आपकी राय में इस पुस्तक के विभिन्न पाठों/प्रकरणों को पढ़ाने के लिए किसी अतिरिक्त सहायक पाठ्यवस्तु की आवश्यकता पड़ेगी? यदि हाँ तो उनकी सूची बनाइए?

7. आप क्या सोचते हैं, कि पाठ्यपुस्तक में दी गई सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को शिक्षक आत्मसात कर उसे दी गई समयावधि में पढ़ा कर पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेंगे? यदि नहीं तो कारण दीजिए। साथ ही इस हेतु अपने सुझाव भी दीजिए।

8. आपकी राय में क्या पाठ्यवस्तु विद्यार्थी को कक्षा के भीतर व बाहर विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन कर पाठ्यवस्तु के प्रति समझ बनाने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है? क्या पाठ्यवस्तु, लोगों से मिलने संग्रहालय, चिड़ियाघर, खेत, दुकान, आस–पास में स्थित विशेष भवनों, कार्यालयों आदि में जाने, निरीक्षण करने हेतु प्रोत्साहित करती है? अपने पक्ष में उदाहरण दीजिए।

9. क्या पाठ्यवस्तु अध्यापन के दौरान एक शिक्षक को आई.सी.टी. तथा अन्य किसी सहायक अधिगम सामग्री के उपयोग हेतु प्रोत्साहित करती है?

(C) सामाजिक राजनैतिक परिप्रेक्ष्य

1. क्या पाठ्यवस्तु, लिंग, वर्ग और समावेशी मुद्दों को लेकर भली भांति तैयार की गई है? पक्ष में उदाहरण दीजिए।

2. पाठ्यपुस्तक में आपको कैसे और कहाँ पर लगता है, कि पाठ्यवस्तु निम्नांकित बिंदुओं के संदर्भानुसार तैयार की गई है। (विशिष्टता का पृष्ठ संख्या सहित उल्लेख करें)

   - पाठ्यवस्तु पर समाज का विश्वास
   - मानवाधिकार–मानव गरिमा और अधिकार
   - अंतःविषय दृष्टिकोण (विषय सम्बद्धता)
   - लिंगगत संवेदनशीलता

- स्त्री पुरूष समानता

3. विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए निम्नांकित संदर्भों के प्रति संवेदनशीलता
   - पढ़ने में कठिनाई अनुभव करने वाले विद्यार्थियों के अनुरूप अक्षरों का आकार
   - आई.सी.टी. एवं विभिन्न तकनीकियों का प्रयोग सीखने में कैसे किया जा सकता है, इसे भली भांति उदाहरणों द्वारा समझाया गया हो
   - हर अवधारणा/पाठ के बाद अधिगम के कठिन /महत्वपूर्ण बिंदुओं को पुनः सारांश में प्रस्तुत किया गया हो ताकि सीखना सुगम हो सके।

(D) मूल्यांकन

1. विद्यार्थियों को किस प्रकार मूल्यांकित किया जावेगा इस हेतु क्या पाठ्यवस्तु उन्हें कोई मार्गदर्शन प्रदान करती है?
2. क्या प्रत्येक प्रकरणों/ उपप्रकरणों के साथ ही मूल्यांकन हेत प्रश्न/गतिविधियाँ आदि पाठ्य पुस्तक के प्रत्येक पाठ के साथ दिये गये है?
3. क्या पाठ के अंतर्गत दिये गये मूल्यांकन के प्रश्न पाठ में दिये गये सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं/अवधारणाओं आदि को पुनः प्रस्तुत करते है? साथ ही शिक्षक के लिए अवसर प्रदान करते हैं कि वे जाँचे कि जिन महत्वपूण बिंदुओं/अवधारणाओं को जिस प्रकार छात्र ने विश्लेषित किया है, वे उसी प्रकार प्रस्तुत किये गये थे।
4. क्या पाठ्यवस्तु में गतिविधियाँ, उदाहरण, नक्शे, चित्र आदि पर्याप्त रूप से और उचित स्थानों पर हैं?
5. क्या आपकी राय में पाठ्यवस्तु में दी गई सभी गतिविधियों को छात्र एवं शिक्षक कर सकते है?
6. क्या पाठ के अंत में दिये गये मूल्यांकन के प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को संक्षेप में पुनः स्मरण कराते हैं?
7. क्या पाठ्यवस्तु में दी गई पाठ्य सामग्री और अभ्यासमाला विद्यार्थी को स्व अधिगम के लिए प्रेरित करते हैं?
8. पाठ के बीच–बीच में एवं अंत में दिये गये प्रश्न क्या निम्नांकित बिंदुओं के अनुरूप है :–
   - गहन चिंतन
   - विश्लेषणात्मक सोच
   - समस्या निवारण
   - सृजनशीलता

बेस्ट प्रेक्टिसेस

बेस्ट प्रेक्टिसेस से तात्पर्य है, कि शाला में किसी विषय की अवधारणा से संबंधित किया गया कोई ऐसा नवाचार जिससे उसका अध्यापन अपेक्षाकृत सरल हो जाये। साथ ही शालेय विद्यार्थियों को भी उसका लाभ हो। उन्हें उस अंश को समझने में अपेक्षाकृत सरल पड़े।

उदाहरणार्थ कक्षा 6 वीं के जीव विज्ञान में चित्रों के सही बनाने के कौशल का विकास करना है। प्रायः विद्यार्थी चित्र तो बनाते हैं परंतु चित्र के सभी भागों को आनुपातिक नहीं रख पाते हैं। उन्हें मनुष्य/किसी अन्य जीव का पाचन तंत्र संस्थान का चित्रांकन करना है तो वे पाचन तंत्र के सभी अंगों का चित्रांकन तो कर लेते हैं पर शरीर के शेष अंगों यथा हृदय, फेफड़ा आदि के लिए स्थान नहीं बचा पाते हैं साथ ही एक शरीर में पाचन तंत्र कितना स्थान घेर रहा है, इसे भी भली भांति नहीं दर्शा पाते है।

इसके विपरीत यदि उन्हें ग्राफ पेपर की मूलभूत जानकारी हो, तो उसकी सहायता से विद्यार्थी सही–सही आनुपातिक तरीके से बना लेता है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ संक्षेपाक्षर

A.W.P.	Annual Work Plan	वार्षिक कार्य योजना
B.E.O.	Block Education Officer	विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी
B.R.C.C.	Block Resourse Center Co-ordinator	विकासखण्ड स्रोत केन्द्र समन्वयक
B.R.P.	Block Resourse Person	विकासखण्ड स्त्रोत व्यक्ति
B.T.I.	Basic Training Institute	बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान
B.Ed	Bachelor of Education	शिक्षा में स्नातक
C.A.C.	Cluster Acadamic Co-Ordinator	संकुल शैक्षिक समन्वयक
C.C.E.	Continouse Comprehensive Evalution	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
C.R.C.	Cluster Resourse Co-Ordinator	संकुल स्त्रोत समन्वयक
C.T.E.	College Of Teacher Edcuation	शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
C.B.S.E.	Central Board Of Secondary Education	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल
C.G.B.S.E.	Chhattisgarh Board Of Secondary Education (Chhattisgarh Madhyamic Shikcha Mandal)	छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल
D.E.O.	District Education Officer	जिला शिक्षा अधिकारी
D.El.Ed.	Diploma In Elementary Education	प्रारंभिक शिक्षण पत्रोपाधि
D.I.E.T.	District Institute Of Education And Training	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
D.M.C.	District Mission Co-Ordinator	जिला मिशन समन्वयक
D.P.I.	Directorate Of Public Instructions	लोक शिक्षण संचालनालय
E.L.T.I.	English Language Training Institute	आंग्ल भाषा प्रशिक्षण संस्थान
I.A.S.E.	Institute Of Advanced Studies In Education	उन्नत अध्ययन शिक्षा संस्थान
I.G.N.O.U.	Indira Gandhi National Open University	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
I.I.M.	Indian Institute Of Management	भारतीय प्रबंधन संस्थान
I.C.S.E.	Indian Certificate Of Secondary Education	भारतीय माध्यमिक शिक्षा प्रमाण–पत्र
I.S.C.	Indian School Certificate	भारतीय विद्यालय प्रमाण–पत्र
M.A. Education	Master of Arts in Education	शिक्षा में स्नाताकोत्तर
M.Ed.	Master of Education	शिक्षा में स्नाताकोत्तर
M.El.ED.	Master of Elementry Education	प्रारंभिक शिक्षा में स्नाताकोत्तर
M.N.C.E.R.T.	National Council Of Educational Research And Training	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
N.C.T.E.	National Council For Teacher Education	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
N.I.O.S.	National Institute Of Open Schooling	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
N.U.E.P.A.	National University Of Educational Planning And Administration	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय
P.L.C.	Professional Learning Community	व्यावसायिक अधिगम समुदाय
P.S.T.E.	Pre-Service Teacher Education	सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा
R.G.S.M.	Rajiv Gandhi Shiksha Mission	राजीव गांधी शिक्षा मिशन
R.I.E.	Regional Institute Of Education	क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान
S.C.E.R.T.	State Council Of Educational Research And Training	राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
S.M.C.	School Management Committees	शाला प्रबंधन समिति

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम
द्वितीय वर्ष

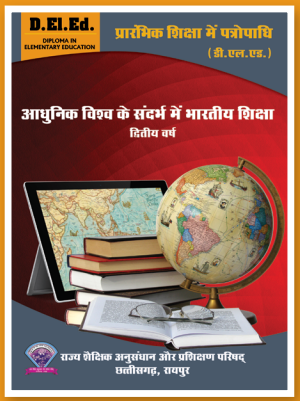

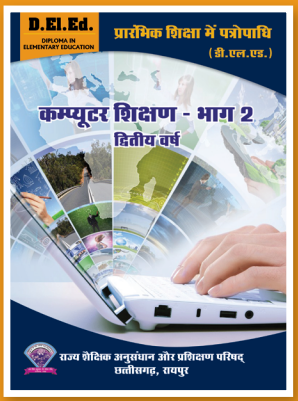

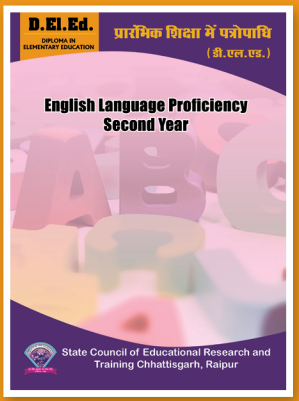

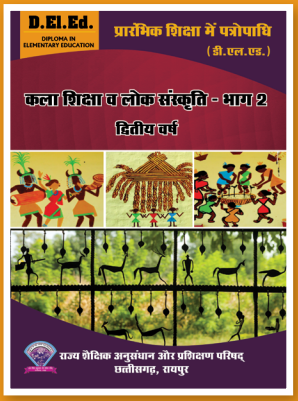

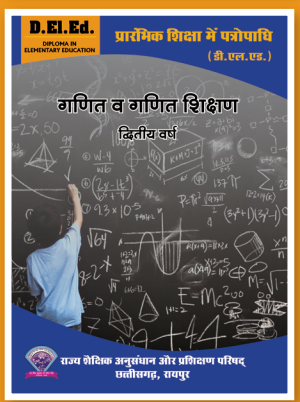

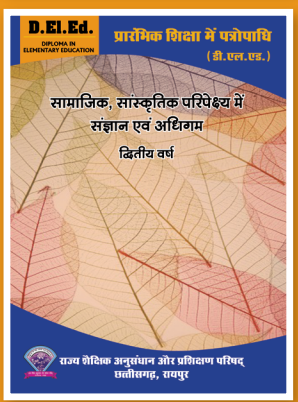

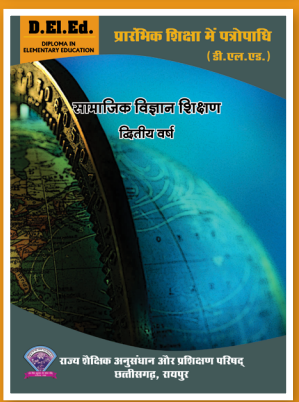

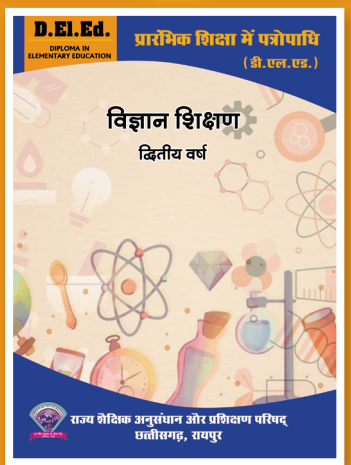

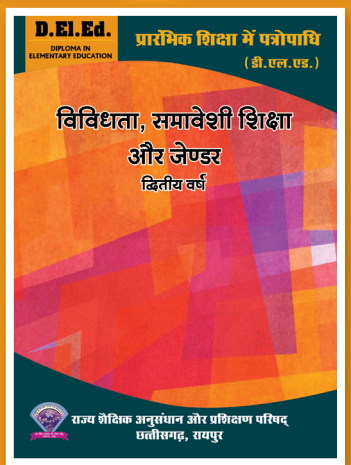

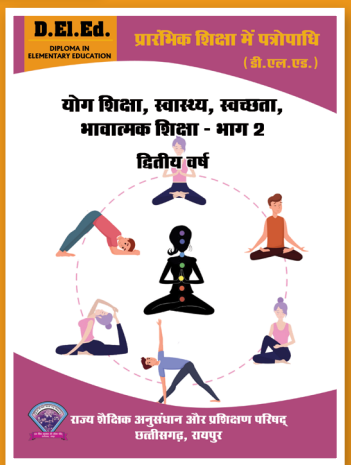

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, शंकरनगर, रायपुर

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर